खंड 2
समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 समाजशास्त्र का मानव विज्ञान के साथ संबंध*

संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की प्रकृति

2.3 समाजशास्त्र का उद्‌भव एवं इतिहास

2.4 मानव विज्ञान का उद्‌भव एवं इतिहास

2.5 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य समानताएं

2.6 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य भिन्नताएँ

2.7 सारांश

2.8 संदर्भ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न बातों को समझ पाएंगे :

- मानव विज्ञान के साथ समाजशास्त्र के संबंधों को जान पाएंगे;
- समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की प्रकृति को जान पाएंगे;
- समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के उद्‌भव एवं इतिहास को जान पाएंगे;
- समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य समानताओं एवं भिन्नताओं की जांच कर पाएंगे; तथा
- समसामयिक दौर में समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की प्रकृति को जान पाएंगे।

2.1 प्रस्तावना

समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवविज्ञान कई पहलुओं के आधार पर एक दूसरे से संबंधित हैं। जांच एवं पद्धति के कुछ क्षेत्रों में कभी-कभी समाजशास्त्र को सामाजिक मानव विज्ञान से अलग करना कठिन है। जाँच के विषय, पद्धति, अभ्यास एवं परंपरा के आधार पर इन दोनों विषयों में कुछ भिन्नताएँ भी हैं जो देखी जा सकती हैं। हालांकि इस प्रकार का अंतर बहुत कम है तथापि ये अंतर भी विश्वविद्यालय प्रणालियों में विभिन्न शैक्षिक विषयों एवं विभागों के विकास के साथ भिन्नता का विषय बन जाते हैं। सही मायने में जॉन बीट्टी (1980) उल्लेख करते हैं कि "समाजशास्त्र का विषय सामाजिक मानव विज्ञान का सबसे नजदीकी विषय है तथा ये दोनों विषय अपनी अनेक सैद्धांतिक समस्याओं और हितों को एक दूसरे के साथ साझा करते हैं। सामाजिक मानवविज्ञानी अपने आप में समाजशास्त्री भी होते हैं , परंतु वे एक ही समय में उनसे कुछ कम भी होते हैं, क्योंकि उनके जाँच का वास्तविक क्षेत्र पूरी तरह से अधिक प्रतिबंधित होता है, और वे उसी समय कई बार उनसे आगे भी होते हैं क्योंकि वे सामाजिक संबंधों पर बल देते हैं, तथा साथ ही वे संस्कृति के

*डॉ. आर.वाशुम, इग्नू

अन्य पहलुओं पर भी बल देते हैं "(पृष्ठ 31)। इसलिए इन दोनों विषयों के बीच के संबंधों को समझने हेतु इनके ऐतिहासिक एवं समकालीन विकास को समझना जरूरी है।

2.2 समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति

समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञान क्षेत्र का सबसे नया विषय है। यह सबसे तेज़ गति से बढ़ आगे रहे शैक्षिक विषयों में से एक है। 'समाजशास्त्र' शब्द लैटिन शब्द 'सोशिअस' ('संगी-साथी' अथवा 'सहयोगी') एवं ग्रीक शब्द 'लॉजी'/'लोगोस' ('ज्ञान') से बनाया गया है। 1838 में ऑगस्ट कॉम्टे द्वारा 'समाजशास्त्र' शब्द को बनाया गया। मानव समाज का एक वैज्ञानिक अध्ययन समाजशास्त्र है जो कि सामाजिक घटनाओं के संदर्भों को समझाने की कोशिश करता है। इसमें मानव व्यवहार के सामूहिक पहलुओं पर जोर दिया जाता है। इस विषय की व्यापक प्रकृति ने इसे मानव विज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल, शिक्षा, कानून एवं दर्शनशास्त्र जैसे अनेक सामाजिक विज्ञान के विषयों के साथ जोड़ा है। मानव विज्ञान (जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'अन्थ्रोपोस' जिसका अर्थ ' मानव ' है और 'लॉगिया'/'लोगोस' अर्थात 'का अध्ययन' से हुई है) वह एकमात्र विषय है जो मानव समाज के अध्ययन में समाजशास्त्र के दायरे को पार करता है जिसमें सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान (जिसे सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान भी कहा जाता है), भौतिक मानव विज्ञान, पुरातात्विक मानव विज्ञान (जिसे पूर्व-ऐतिहासिक पुरातत्व भी कहा जाता है) एवं भाषा वैज्ञानिक मानव विज्ञान की शाखाएं भी सम्मिलित हैं। मरियम वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार " मानव विज्ञान शब्द का प्रयोग 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया गया "। यह माना जाता है कि 1805 में पहली बार 'मानव विज्ञान' शब्द का प्रयोग दिखाई पड़ा (मैक्जी एवं वारम्स, 2012; 6) ।

ऐतिहासिक रूप से सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान प्रारंभ से ही समाजशास्त्र के बहुत समीप रहा है क्योंकि ये दोनों ही मानव समाज का अध्ययन करते हैं। हालांकि मानव विज्ञान को पूर्व-साक्षर समाजों (जिसे प्रारंभिक मानवविज्ञानियों एवं अन्य विद्वानों द्वारा गलत तरीके से 'आदिम' समाज के रूप में रूपायित किया गया है) का अध्ययन माना गया है एवं समाजशास्त्र को समकालीन, शहरी तथा विकसित समाजों से अधिक जुड़ा हुआ माना जाता है, और यह अंतर आज के युग में सत्य नहीं है। मानव विज्ञान के क्षेत्र में पहले यह प्रवृत्ति थी कि यह सूक्ष्म अध्ययन (खास तौर से असाधारण गांव के अध्ययन) से जुड़ा हुआ था और समाजशास्त्र वृहत अध्ययन (खास तौर से आधुनिक समाज) के साथ जो कि वर्तमान समय में सच नहीं रहा है। इसी प्रकार ग्रामीण समुदायों के अध्ययन को पहले मानव विज्ञानियों के साथ जोड़ा जाता था एवं शहरी समुदायों के अध्ययन को समाजशास्त्रियों के साथ उस समय जोड़ा जाता था जब ये विषय विकास के प्रारंभिक चरणों में थे और ये बातें समय के साथ अब मलिन हो चुकी हैं । वर्तमान समय में एक प्रवृत्ति स्थापित की गई है जहां एक ओर समाजशास्त्रियों ने ग्रामीण समुदायों, गांवों एवं सूक्ष्म ढांचों पर अधिक अध्ययन किए हैं, वहीं मानवविज्ञानी शहरी ढांचों एवं वृहत अध्ययनों की ओर रुख कर चुके हैं। इस उभरती हुई नई प्रवृत्ति के पर्याप्त उदाहरण मौजूद हैं जो विकासशील देशों में समाजशास्त्रियों एवं मानवविज्ञानी द्वारा किए गए अध्ययनों में स्पष्ट रूप से झलकते हैं। इसी करण समाजशास्त्रियों एवं मानव विज्ञान और खास तौर से सामाजिक मानव विज्ञान एवं/अथवा सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच जॉच एवं अभिरुचि के क्षेत्रों में परस्पर व्याप्ति बहुत अधिक हुई है।

2.3 समाजशास्त्र का उद्भव एवं इतिहास

समाज के एक वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में समाजशास्त्र विषय क्षेत्र में विकास का अपेक्षाकृत लघु इतिहास रहा है। इसकी शुरुआत 19वीं सदी में एक शैक्षिक विषय के रूप

में हुई। हालांकि समाज का अध्ययन समाजशास्त्र हेतु विशिष्ट नहीं है, यह 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानी दार्शनिकों सुकरात हेतु 4 शताब्दी ईसा पूर्व में प्लेटो एवं अरस्तू हेतु और पहली शताब्दी ईसा पूर्व में रोमन दार्शनिक मार्कस तुल्लीअस सिसरो हेतु लंबे समय तक उनकी रूचि का विषय रहा है जिन्होंने अपने समय में समाज को समझने में अत्यधिक योगदान दिया। मानव समाज के व्यवस्थित अध्ययन का उन्होंने प्रयास किया, मुख्य रूप से समाज, दर्शन, राजनीति, कानून एवं राज्य के सामान्य विवेचन पर। 16वीं शताब्दी ईस्वी तक समाज एवं राज्य से संबंधित थॉमस हॉब्स एवं मेकियावेली के अध्ययन (कार्य) समाज एवं राज्य की अवधारणाओं को समझने हेतु प्रभावशाली रहे। यूरोप में पुनर्जागरण के प्रभाव के बाद 18वीं शताब्दी ईस्वी तक, वहां अनेक प्रतिष्ठित दार्शनिक हुए जिन्होंने समाज को समझने में अपना अत्यधिक योगदान दिया और उन दार्शनिकों में रूसो, विको एवं बैरन डी मोंटेस्क्यू भी सम्मिलित थे जिन्होंने उस समय की सामाजिक घटनाओं का सामना किया। इन प्रारंभिक कार्यों ने निश्चित रूप से सामाजिक विज्ञान के विकास एवं समाजशास्त्र और मानव विज्ञान सहित मानव समाज के विज्ञान हेतु दार्शनिक आधारशीला की नींव रखी। मानव समाज के अध्ययन हेतु सकारात्मकता ने समाज की अवधारणा को किसी दैवीय अथवा ईश्वर प्रदत्त स्थिति से बदलकर रख दिया जिसे अब मानव की उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है। इसने समाज के उद्देश्य को संभव बना दिया तथा मानव प्रयास एवं कार्रवाई के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की धारणा की भी पेशकाश की।

हालांकि यूरोप में 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में होने वाले विभिन्न बौद्धिक एवं सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन समाजशास्त्र के प्रादुर्भाव हेतु सबसे महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। यूरोप में फ्रांसीसी क्रांति एवं औद्योगिक क्रांति कुछ महत्वपूर्ण प्रभावों में सम्मिलित है। हालांकि, क्लाउड हेनरी सेंट साइमन ने "समाज के विज्ञान" के विचार का उपयोग किया, तथापि अगस्त कॉम्टे (1798-1857), वह फ्रांसीसी विद्वान् थे जिन्हें आम तौर पर समाजशास्त्र के उद्भव की नींव रखने का श्रेय जाता है। 'समाजशास्त्र' शब्द का प्रयोग 1838 में अगस्ट कॉम्ट द्वारा अपनी पुस्तक, *पॉजिटिव फिलॉसफी* में किया गया। सामाजिक घटना के व्यवस्थित अवलोकन एवं वर्गीकरण के आधार पर वह समाजशास्त्र को विज्ञान मानते हैं। हर्बर्ट स्पेंसर, अंग्रेज सामाजिक दार्शनिक समाजशास्त्र की नींव रखने वालों में अग्रणी है। मानव विज्ञान की जैविक समानता के आधार पर उनकी किताब *प्रिंसिपल्स ऑफ़ सोशियोलॉजी* (1876), उस समय की एक महत्वपूर्ण योगदान थी। अमेरिका में सामाजिक दार्शनिक, लेस्टर एफ वार्ड ने अपनी पुस्तक, डायनामिक सोशियोलॉजी (1883) द्वारा समाजशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जो कि सामाजिक प्रगति एवं सामाजिक कार्रवाई की अवधारणाओं से संबंधित है परंतु वैज्ञानिक पद्धति का इस्तेमाल करके समाजशास्त्र के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान इमाइल दुर्खीम ने अपनी रचनाओं *रूल्स ऑफ़ सोशियोलॉजीकल मेथड* (1895) और *सुसाइड* (1897) में किया। समाजशास्त्र के अग्रणी मैक्स वेबर ने सामाजिक घटनाओं की सूझबूझ हेतु एक नए प्रकार के दृष्टिकोण को पेश किया। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म तथा इकोनॉमी एंड सोसाइटी शामिल है। समाजशास्त्र के विकास में कार्ल मार्क्स ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, हालांकि उनके योगदान समाजशास्त्र की सीमा को लांघकर काफी आगे जाते हैं। समाजशास्त्र से संबंधित उनकी सबसे लोकप्रिय किताब दास *कैपिटल* है। समाज शास्त्र के कुछ अन्य अग्रदूतों में *जॉर्ज हर्बर्ट मीड*, विल्फ्रेडो पारेतो, जॉर्ज साईमेल और फर्डिनेंड टोंनी के नाम शामिल हैं। समाज शास्त्र के इन अग्रदूतों का अनुसरण चार्ल्स हॉर्टन कूली, पिटिरिम सोरोकिन, सी राइट मिल्स, टैल्कॉट पार्सन्स, रॉबर्ट के मर्टन, इरविंग गोफमैन, जॉर्ज सी होमन्स, मिशेल फूको, जुर्गन हबर्मस, पियरे बौरदिएउ एवं एंथनी गिडेंस सहित अनेक प्रसिद्ध आधुनिक समाजशास्त्रियों ने किया।

2.4 मानव विज्ञान का उद्‌भव एवं इतिहास

मानव विज्ञान का क्षेत्र एक विविध एवं व्यापक क्षेत्र है जिसमें मनुष्यों एवं उनके संस्कृति- समाज का अध्ययन किया जाता है। वास्तविकता यह है कि इसे व्यापक विषय माना जाता है जो मानवों के अध्ययन और इसके विविध पहलुओं से संबंधित है। मानव विज्ञान और उसके शैक्षिक पेशे की विषय वस्तु प्राकृतिक विज्ञान एवं मानविकी से शुरू हुई। आज भी इसी प्रवृत्ति का अनुसरण किया जाता है। इस स्थिति का मुख्य कारण यह है कि इस विषय को 'मानव जाति के समग्र अध्ययन' के रूप में देखा जाता है। इसका प्रादुर्भाव इस बात के साथ हुआ है कि मनुष्य एक प्रजाति के रूप में विकसित हुए हैं और अन्य सभी प्राकृतिक प्रजातियों एवं घटनाओं के अनुरूप प्राकृतिक नियमों का अनुपालन करते हैं। मानव विज्ञान के अत्यधिक भिन्न विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए, मानव विज्ञान के बौद्धिक विकास और इसके उद्‌भव के बारे में व्यापक रूप से पता लगाना मुश्किल है। तथापि, इस विषय के प्रारंभ और विकास के रुझानों की पहचान व्यापक रूप से की जा सकती है। इसका ऐतिहासिक चित्रण सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान (ब्रिटेन में स्थापित सामाजिक मानव विज्ञान एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रयोग की जाने वाली सांस्कृतिक मानव विज्ञान) पर केंद्रित हो सकता है क्योंकि यह समाजशास्त्र के साथ मानव विज्ञान की सबसे समीपवर्ती शाखा है।

समाजशास्त्र की भांति मानव विज्ञान के उद्‌भव एवं विकास को पाश्चात्य जगत में वैज्ञानिक विकास से सीधे सीधे जोड़ा जाता है। मानव विज्ञान की स्थापना ग्रीको रोमन पुनर्जागरण काल से हुई, खास तौर से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हेरोडॉटस के लेखन के साथ। वोगेट (1975:7) के अनुसार, हेरोडॉटस "को संभावित अग्रदूत के रूप में भी उद्धृत किया गया है, नृवंशविज्ञान के "जनक" के रूप में नहीं"। तत्कालीन ग्रीक दार्शनिक, खास तौर से, सुकरात, प्लेटो और अरस्तु ने भी मनुष्य और समाज के अध्ययन पर प्रभाव डाला। तदुपरांत, रोमन दार्शनिक मार्कस तुलियस सीसेरो ने भी मानव समाज के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई शताब्दियों के बाद कुछ दार्शनिकों ने समाज एवं राज्य के अध्ययन में रूचि लेनी शुरू की, खास तौर से 16वीं शताब्दी ईस्वी में। इन विद्वानों में थॉमस हॉब्स और मैकियावेली शामिल हैं। इससे पहले, 14वीं शताब्दी ईस्वी में नैतिक ऐतिहासिक दर्शन एवं सामाजिक घटनाओं के संरचनात्मक-कार्यात्मक विश्लेषण से संबंधित इब्न खलदुन के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में उल्लेख किया जा सकता है।

यूरोप में पुनर्जागरण के प्रभाव के बाद 18वीं शताब्दी ईस्वी तक, वहां अनेक प्रतिष्ठित दार्शनिक हुए जिन्होंने समाज को समझने में अपना अत्यधिक योगदान दिया और उन दार्शनिकों में रूसो, विको एवं बैरन डी मोंटेस्क्यू भी सम्मिलित थे जिन्होंने उस समय की सामाजिक घटनाओं का सामना किया। इन प्रारंभिक कार्यों ने निश्चित रूप से सामाजिक विज्ञान के विकास एवं समाजशास्त्र और मानव विज्ञान सहित मानव समाज के विज्ञान हेतु दार्शनिक आधारशिला की नींव रखी। मानव विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का विकास जो पहले के दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अध्ययनों से आगे जाता है वह दो चरणों में सामने आया। प्रथम चरण (1725-1840) में "दार्शनिक वैज्ञानिक इतिहास से मनुष्य, समाज एवं सभ्यता के अध्ययन को अलग करने में सफल रहे और इस प्रकार उन्होंने एक सामान्य सामाजिक विज्ञान को तैयार किया" (वोगेट, 19 75: 41)। हालांकि, होबेल (1958) का यह मानना है कि "मानव विज्ञान मुख्य रूप से प्राकृतिक विज्ञान से प्रकट हुआ है एवं प्राकृतिक विज्ञान परंपरा का निर्वहन एक बड़े स्तर पर करता है" (पृष्ठ 9) और इसके स्थान पर इतिहास या दर्शन से नहीं। दूसरी ओर, मार्विन हैरिस (1979) का यह मत है कि मानव विज्ञान "इतिहास के विज्ञान के रूप में शुरू हुआ" (पृष्ठ 1)। इसके पहले के संबंध और मानव विज्ञान की

प्रकृति की समस्या ऐसी है कि 20वीं शताब्दी के मध्य में ई.ई. इवांस-प्रिचर्ड को भी ब्रिटिश मानव विज्ञान (खास तौर से सामाजिक मानव विज्ञान) की स्थिति से जूझना पड़ा। सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कहा कि "उन लोगों की राय व्यापक रूप से भिन्न है जो प्राकृतिक मानव विज्ञान के रूप में सामाजिक विज्ञान को मानते हैं एवं उन लोगों की तरह जो स्वयं उनकी (इवांस-प्रिचर्ड) भांति इसे एक मानविकी की विषय मानते हैं। यह अंतर शायद उस समय सबसे स्पष्ट होता है जब मानव विज्ञान एवं इतिहास के बीच के संबंधों पर चर्चा की जाती है "(इवांस-प्रिचर्ड, 1951:7)। एक विषय के रूप में मानव विज्ञान का विकास व्यापार, यात्रा एवं उपनिवेशीकरण हेतु यूरोप के लोगों का दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलना था। मानव विविधता और भिन्नता को समझाने के प्रयासों के अंतर्गत मानव विज्ञान विकसित हुआ। इसे प्रारंभ में 'अन्य संस्कृतियों' के अध्ययन के रूप में भी जाना जाता था और इस तरह इसे समाजशास्त्र से अलग किया जाता था जिसे पाश्चात्य लोगों द्वारा उनके अपने समाज के अध्ययन के रूप में देखा जाता था।

दूसरे चरण (1840-1890) में "प्राकृतिक विज्ञान में एक स्थिर संतुलित मॉडल से एक गतिशील मॉडल में बदलाव हुआ। इसका अंत थर्मोडायनामिक और डार्विनियन विकासवादी सिद्धांत के परिचय के साथ हुआ "(वोगेट, 1975: 42)। मानव विज्ञान की तरह विविध क्षेत्रों के साथ, 1860 के दशक में एक सामान्य मानव विज्ञान विषय में एकीकृत करने हेतु प्रयास किया गया जो मनुष्य के प्रारंभिक इतिहास से जुड़ा होगा। 1870 तक और उसके बाद "मानव विज्ञान के एक विशिष्ट गुण ने खुद को प्रकट करना शुरू किया" और वह भी भौतिक मानव विज्ञान, प्रागैतिहासिक एवं नृवंशविज्ञान को एकीकृत करके (सीएफ, उपरोक्तानुसार)। इस अवधि में मानव विज्ञान के उद्भव को शैक्षिक विषय में शामिल किया गया है। यह भौतिक और जैविक क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति की जीत की प्रेरणा के माध्यम से संभव हुआ जिसके बारे में उन्नीसवीं शताब्दी के मानवविज्ञानी मानते थे कि सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाएं खोज करने योग्य कानूनी सिद्धांत थीं। यह दृढ़ विश्वास पूर्व अवधि की चाहत के साथ उनके अपने हितों में सम्मिलित हो गया तथा इसे अठारहवीं शताब्दी के ज्ञान एवं मानव जाति के सार्वभौमिक इतिहास की दृष्टि हेतु सामाजिक विज्ञान का नाम दिया गया (हैरिस, 1979:1)। हालांकि, उन्नीसवीं शताब्दी में यह एक शैक्षिक विषय के रूप में उभरा। कुपर (2018) के अनुसार, "1860 के दशक में मानव विज्ञान के आधुनिक प्रवचन को सुनिश्चित रूप दिया गया तथा जीवविज्ञान, भाषा विज्ञान, एवं प्रागैतिहासिक पुरातत्व विज्ञान में प्रगति से इसे बल मिला"। मानव विज्ञान का विभाजन अलग-अलग उप-विषयों (अथवा विशेष क्षेत्रों), अर्थात्, भौतिक अथवा जैविक मानव विज्ञान, पुरातत्व मानव विज्ञान, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक मानव विज्ञान (जिसे सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान भी कहा जाता है), तथा भाषा वैज्ञानिक मानव विज्ञान – और कुछ इसमें मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञान को सम्मिलित करेंगे, 19वीं सदी के बाद से 20वीं सदी के मध्य तक सामने आया। मानव विज्ञान की इन शाखाओं में से सामाजिक या सांस्कृतिक मानव विज्ञान (जिसे सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान भी कहा जाता है) समाजशास्त्र से मानव विज्ञान की सबसे नजदीकी शाखा है।

मानव विज्ञान (सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान) के अग्रदूतों में जो शामिल हैं वे हैं- लेविस हेनरी मॉर्गन (1818-1881), जॉन फर्ग्यूसन मैकलेनैन (1827-1881), सर एडवर्ड बर्नेट टेलर (1832-19 17), फ्रांज बोस (1858-19 42), सर जेम्स जॉर्ज फ्रैज़र (1854-19 41) एवं डब्ल्यू.एच.आर. रिवेर्सद्य कुछ दशक उपरांत (1920 के दशक से), मानव विज्ञान (सामाजिक-

सांस्कृतिक मानव विज्ञान), खास तौर से दो उत्कृष्ट मानवविज्ञानियों, अर्थात् ब्रोनीस्लाव मालिनोव्स्की एवं ए.आर. रैडक्लिफ-ब्राउन के लेखकीय कार्यों के साथ 'आधुनिक मानव विज्ञान' के रूप में विकसित हुआ। एक तरफ मालिनोव्स्की की किताब आर्गोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पैसिफिक (1922) एवं रैडक्लिफ-ब्राउन के द अंडमान आइलैंडर्स (1922) सबसे प्रारंभिक महवपूर्ण आधुनिक रचनाएँ थीं जो स्पष्ट रूप से मानव विज्ञान के नए आधुनिक दौर के उद्भव को चिह्नित करती हैं। ये रचनाएँ मुख्य रूप से सैद्धांतिक अभिविन्यास के साथ गहन क्षेत्रीय कार्यों (नृवंशविज्ञान कार्यों) पर आधारित थीं। इन दोनों मानवविज्ञानियों की रचनाओं का प्रभाव शीघ्र ही ब्रिटेन से आगे उत्तरी अमेरिका तक पहुंच जिसे आम तौर पर सांस्कृतिक मानव विज्ञान का केंद्र माना जाता था। ऐसे अनेक मानवविज्ञानी भी थे जिन्होंने उस समय एवं बाद में आधुनिक मानव विज्ञान के विकास में अपना योगदान दिया परंतु वे लोग मालिनोव्स्की एवं रैडक्लिफ-ब्राउन की भांति प्रसिद्धि और ऊंचाई हासिल नहीं कर सके।

2.5 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य समानताएं

समाजशास्त्र सामाजिक/सांस्कृतिक (सामाजिक-सांस्कृतिक) मानव विज्ञान के बहुत समीपवर्ती विषय है। इन दोनों के मध्य का संबंध इतना घनिष्ठ है कि वर्तमान समय में इनके बीच अंतर बहुत ही कम हो गया है। ऐसे कई प्रतिष्ठित मानवविज्ञानी हैं जो समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान, खास तौर से सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच घनिष्ठ संबंधों के पक्षधर हैं। उदाहरण के लिए, फ्रेज़र, शायद पहले मानव विज्ञानी है, जिन्होंने सामाजिक मानव विज्ञान के प्रथम प्रोफेसर के रूप में 1908 में अपने उद्घाटन भाषण में यह परिभाषित किया कि "सामाजिक मानव विज्ञान समाजशास्त्र की एक शाखा है जिसका संबंध आदिम समाजों से है" (रैडक्लिफ-ब्राउन, 19522; सी एफ, वोगेट, 1975: 143)। फ्रैज़र के अनुसार, " समाजशास्त्र को समाज के सबसे सामान्य विज्ञान के रूप में देखा जाना चाहिए। सामाजिक मानव विज्ञान समाजशास्त्र का एक हिस्सा होगा, जो "मूल अथवा प्रारंभिक चरणों, मानव समाज के प्रारंभिक चरण तक सीमित है। फ्रैज़र ने सामाजिक मानव विज्ञान को जंगली जीवन के अध्ययन तक सीमित करते हुए, मानव जाति के प्रारंभिक इतिहास एवं संस्थानों पर मनोवैज्ञानिक बल देते हुए वेट्ज़ और टेलर के विचारों को प्रतिबिंबित किया। (वोगेट, 1975: 143)।

रैडक्लिफ-ब्राउन (1983) के मतानुसार सामाजिक मानव विज्ञान 'तुलनात्मक समाजशास्त्र' है। 'तुलनात्मक समाजशास्त्र' शब्द से उनका तात्पर्य यह रहा होगा कि "वह विज्ञान जो मनुष्य के सामाजिक जीवन की घटनाओं एवं संस्कृति अथवा सभ्यता के अंतर्गत सम्मिलित सभी चीज़ों हेतु प्राकृतिक विज्ञान की सामान्यीकृत पद्धति को लागू करता है" (पृष्ठ 55)। इस तरह उनका विचार है कि सामाजिक मानव विज्ञान को भावसूचक दृष्टिकोण (ideo-graphic approach) (सामान्य वैज्ञानिक तथ्यों एवं प्रक्रियाओं की खोज वह भी सामान्य कानूनों से अलग) के स्थान पर 'नियमान्वेषी' दृष्टिकोण (nomothatic approach) (समाज के सामान्य कानूनों की) की खोज करनी चाहिए। यह "सामान्य कानून" (उपरोक्तानुसार) को स्थापित करने हेतु "एक विशेष घटना या कार्यक्रम" को प्रदर्शित करने की एक पद्धति है। ऐसे कई दूसरे मानवविज्ञानी भी हैं जो लोग उनके विचार से सहमत हैं। उदहारण के लिए, इवान्स-प्रिचर्ड, एक दूसरे प्रसिद्ध मानवविज्ञानी सामाजिक मानव विज्ञान को "सामाजिक अध्ययन की एक शाखा" मानते हैं, वह शाखा जो कि मुख्य रूप से आदिम समाजों के अध्ययन पर बल देती है" (1951:11)। उनका मत है कि "जब लोग समाजशास्त्र की बात करते हैं, तो सामान्य तौर पर वे लोग सभ्य समाजों की विशेष समस्याओं का मन ही मन अध्ययन करते हैं। अगर हम इस अर्थ को शब्द का रूप देते हैं, तो सामाजिक मानव विज्ञान

और समाज के बीच का अंतर केवल क्षेत्रानुगत का अंतर है (उपरोक्तानुसार)। ई.ए. होबेल के अनुसार, समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच संबंध "उनके अर्थ की व्यापकता और एकरूपता है।" दोनों के दोनों सामाजिक अंतर-संबंधों का अध्ययन हैं, अर्थात मनुष्य का मनुष्य के साथ संबंध" (1958:9)। लुसी मैयर (1965) और कई दूसरे मानवविज्ञानी सामाजिक मानव विज्ञान को समाजशास्त्र की 'शाखा' मानते हैं।

यद्यपि समाजशात्र से पहले मानव विज्ञान (भौतिक मानव विज्ञान सहित एकीकृत मानव विज्ञान) का प्रादुर्भाव हुआ और शुरुआत से ही इन दोनों के विषय वस्तुयों में खास तौर से सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच अंतर करना बहुत ही कठिन था। जहाँ मानव जाति एवं उससे संबंधित पहलुओं के समग्र अध्ययन के रूप में मानव विज्ञान को बनाया गया वहीं अगस्ट कॉम्टे ने यह भी माना है कि समाजशास्त्र मानव समाज का गहन अध्ययन होगा, और इस कारण समाजशास्त्र को "सभी विज्ञानों की रानी" कहा जाना चाहिए। मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र ने भी प्राकृतिक विज्ञान के महत्वपूर्ण तत्वों को किसी न किसी तरीके से आत्मसात करते हुए खुद को स्थापित किया, हालांकि मानव विज्ञान (एकीकृत मानव विज्ञान) की विषय-वस्तु ने खास तौर से भौतिक मानव विज्ञान एवं पुरातात्विक मानव विज्ञान के घटकों के कारण भौतिक विज्ञान के साथ इसके संबंध के कारण समाजशास्त्र की सीमा को पार किया है। यहां तक कि जब समाजशास्त्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के विषय स्थापित किये गए थे तब भी उनके बीच संबंध मौजूद थे। ये संबंध मुख्य रूप से उनकी विषय वस्तु एवं पद्धति में समानता के कारण हैं। फ्रेड डब्ल्यू वोगेट (1975) के अनुसार, समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान (खास तौर से सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान) के बीच का अंतर व्यापकता, अवधारणा एवं विधि के स्तर के स्थान पर अनुप्रयोग स्तर पर अधिक है। वे कहते हैं कि:

> प्रक्रियात्मक अंतर जिनके द्वारा प्रारंभिक समाजशास्त्रियों ने मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र को एक दूसरे से अलग करने और जोड़ने का प्रयास किया उससे संबंधित विषयों का ऐतिहासिक विकास हुआ। मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र दोनों विषयों ने विज्ञान, संयुक्त विवरण और सामान्यीकरण के मॉडल का अनुसरण किया। इन दोनों विषयों के बीच व्यावहारिक अंतर उस समय आया जब उनके संबंधित प्रतिपादकों ने फील्डवर्क शुरू किया (वोगेट, 1975: 144)।

सच्चाई यह है कि कई ऐसे विश्वविद्यालय एवं कॉलेज थे जहां विश्व के कई विश्वविद्यालयों में एक ही विभाग में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान मौजूद थे। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में इन दोनों के संबंधित शैक्षिक विषयों की स्थापना के साथ उनके बीच अंतर अधिक दिखाई देने लगा। वर्तमान समय में यह संबंध और भी घनिष्ठ हो रहा है जिसके चलते विषय आधारित चारदीवारी के रखरखाव के बावजूद भी दोनों के बीच अंतर करना मुश्किल हो रहा है। इन दोनों विषयों का संबंध इनकी अवधारणाओं का एक दूसरे में उपयोग की आवश्यकता एवं समान सैद्धांतिक एवं अनुसंधान समस्याओं तथा उनके निष्कर्षों की ज़रुरत की वजह से भी है। सच्चाई यह है कि इन दोनों विषयों को अपने आप को मजबूत करने और समाज के अध्ययन की व्यापकता हेतु न्याय करने के लिए एक-दूसरे की जरूरत है ।

पश्चिमी विद्वानों के अनुसार उनके बीच मुख्य अंतर यह था कि जहाँ समाज मानव विज्ञान 'दूसरों' का अध्ययन था वहीं समाजशास्त्र अपने समाज का; गैर पश्चिमी विद्वानों के विषय-वस्तु 'दूसरों' की भांति विषय-वस्तु बन गए तब दोनों विषयों के बीच का अंतर गौण हो गया। उदाहरण के लिए जब पश्चिमी विद्वान जाति को सामाजिक मानव विज्ञान के रूप में अध्ययन करेंगे तब भारतीय विद्वानों के लिए यह समाजशास्त्र भी हो सकता है।

गैर-यूरोपीय एवं गैर-पश्चिमी क्षेत्रों में, खास तौर से 'तीसरी दुनिया' देशों के संदर्भ में "सिद्धांत एवं पद्धति के स्तर पर सामाजिक मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र के बीच अंतर बहुत कमजोर है" (जैन 1986:1)। भारतीय संदर्भ में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच कई मामलों में अंतर करना और भी कठिन हो गया है। इन समानताओ में भारतीय विश्वविद्यालयों में पद्धति, सिद्धांतों एवं शोध अध्ययनों के क्षेत्र में समान पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं। इसमें कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है कि भारत में समाजशास्त्र के कई प्रसिद्ध शोध ग्रामीण ढांचों के साथ गांव पर केंद्रित अध्ययन हैं जिसे सामाजिक मानव विज्ञान का पारंपरिक क्षेत्र माना जाता है। यह भी सच है कि भारत के कुछ प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रशिक्षित सामाजिक मानवविज्ञानी हैं। सच्चाई यह भी है कि भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् (आईसीएसएसआर) सामाजिक विज्ञान की शीर्षक केंद्रीय वित्तीय निधिकरण संस्था समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान को एक ही यूनिट के अंतर्गत मानती है। वर्तमान समय में यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि समाजशास्त्र विभागों या सामाजिक अनुसंधान कार्यों में संकाय सदस्य के रूप में कई सामाजिक मानवविज्ञानियों को रखा गया है?

2.6 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य भिन्नताएँ

यद्यपि विषय वस्तु, रुचि, सिद्धांतों एवं पद्धति की समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के क्षेत्र में परस्पर व्यापकता है तथापि इनके बीच कुछ अंतर भी हैं। सबसे पहला और प्रमुख अंतर विषयों की व्यापकता की परिभाषा में निहित है। इस समाजशास्त्र समाज का अध्ययन (अथवा विज्ञान) है, जबकि मानव विज्ञान (एकीकृत मानव विज्ञान) मनुष्य और उन सब चीजों का अध्ययन है जो मानव से संबंधित है। हालांकि समाजशास्त्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच अंतर (जिस पर अब प्रकाश डाला जाएगा) बहुत सीमित है।

समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के बीच मुख्य अंतर उनके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के माध्यम से पता लगाया जा सकता है। आम तौर पर मानव विज्ञान को "दर्शन मूलाहीन" माना जाता है जबकि समाजशास्त्र में दर्शन मौजूद है (सराना 1983:14)। जबकि औद्योगिक क्रांति एवं फ्रेंच क्रांति से हुए महान सामाजिक परिवर्तन के बाद समाजशास्त्र के प्रादुर्भाव को मुख्य रूप से सामाजिक परिवर्तन (यूरोपीय सामाजिक संदर्भ में) लाने के प्रयास हेतु जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, मानव विज्ञान के प्रादुर्भाव पर इनका प्रभाव नहीं था जैसे कि समाजशास्त्र या अन्य सामाजिक विज्ञान पर प्रत्यक्ष रूप से इनका प्रभाव था; बल्कि यह यूरोपीय विद्वानों को यूरोपीय समाज से बाहर निकलने एवं पूर्व-साक्षर समाजों ('अन्य' गैर-यूरोपीय समाज) का अध्ययन करने हेतु बौद्धिक एवं भौगोलिक स्थान खोलने का अप्रत्यक्ष प्रभाव था। (सी.एफ. एफ. एरिक्सन एट अल 2001; सराना 1983)। मरियम वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार, "एंथ्रोपोलॉजी शब्द 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रकाश में आया" – अंग्रेजी शब्द 'एंथ्रोपोलॉजी' वर्ष 1805 में पहली बार प्रकाश में आया (मैक्जी एवं वारम्स, 2012; 6) जबकि समाजशास्त्र शब्द बाद में 1838 में बनाया गया ।

समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान (सामाजिक-सांस्कृतिक) के मध्य अभिरुचि के क्षेत्रों का मूल ध्यान विचलन के मुख्य कारकों में से एक रहा है। समाजशास्त्र समाज के अध्ययन मुख्य अभिव्यक्ति के साथ शुरू हुआ और वह भी एक सामान्यीकृत सामाजिक विज्ञान के रूप में, खास तौर से सामाजिक घटनाओं को समझाने हेतु एक बड़े सामाजिक संदर्भ पर ध्यान केंद्रित करते हुए। यह औद्योगिक समाजों (पश्चिमी समाजों, खास तौर से यूरोपीय) के अध्ययन पर बल देता है जिन्हें आधुनिक समाज माना जाता है। दूसरी ओर मानव विज्ञान की प्रारंभिक मुख्य अभिरुचि गैर-यूरोपीय एवं/अथवा गैर-पश्चिमी समाजों के 'अन्य'

विदेशज समुदायों का अध्ययन था। इस करण उनका ध्यान एवं अभ्यास यूरोप अर्थात पश्चिमी समाजों के बाहर स्थित सरल, लघु-स्तरीय एवं पूर्व-साक्षर समाजों के अध्ययन पर ही था। यह प्रवृत्ति खास तौर से 20वीं शताब्दी के मध्य समय से बदल गई जब मानवविज्ञानियों ने अपने क्षेत्रीय अध्ययनों को आधुनिक एवं शहरी ढांचों तक फैलाया, जबकि समाजशास्त्रियों ने ग्रामीण एवं सरल समाजों के अध्ययन की ओर अपना रुख किया ।

समाजशास्त्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के मध्य दूसरा अंतर इनकी पद्धति, खास तौर से विधियों एवं अनुसंधान की तकनीक हो सकता है। समाजशास्त्रियों ने आंकड़ा एकत्र करने एवं सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रश्नावली जैसे मात्रात्मक तरीकों को बड़े पैमाने पर अपनाया है। मानव विज्ञान क्षेत्र आधारित विज्ञान के रूप में शुरू हुआ। मुख्य रूप से मानवविज्ञानी अन्य विधियों एवं तकनीकों के साथ गुणात्मक तरीकों का भी उपयोग करते हैं, खास तौर से वे 'प्रतिभागी प्रेक्षण' का उपयोग करते हैं। मानवविज्ञानी क्षेत्रों में जाते हैं एवं कई महीनों तक अथवा यहां तक कि कई वर्षों तक लोगों के साथ रहते हैं और उनके समाज का हिस्सा बनकर उनकी संस्कृति को सीखते हैं। हालांकि लम्बे समय की दौर में अनुसंधान विधियों एवं तकनीकों के उपयोग में अंतर आ गए हैं क्योंकि समाजशास्त्रियों ने गुणात्मक तरीकों को व्यापक रूप से अपनाना शुरू कर दिया है, जबकि मानवविज्ञानी भी गुणात्मक तरीकों के साथ मात्रात्मक तरीकों का उपयोग करना शुरू कर चुके हैं। समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के बीच अंतर इन दोनों विषयों के प्रारंभिक प्रतिपादकों के ऐतिहासिक विकास के कारण भी था, खासतौर से जिस प्रकार से उन्होंने अपने फिल्ड कार्य किए। इस संबंध में, वोगेट (1 975: 144) लिखते हैं: उस समय (प्रारंभिक विकास अवस्था) मानव विज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने खुद को एवं अपने विषयों को उस आधार पर अलग नहीं किया जो उन्होंने कहा अपितु उन्होंने अपने कार्यों द्वारा खुद को अलग किया। मानव विज्ञानी ट्रोब्रिंडर्स, जुलस एवं जुनीस के जीवन शैली को रिकॉर्ड करने हेतु मैदान में आए, जबकि समाजशास्त्रियों ने जनगणना के आंकड़ों, साक्षात्कार एवं प्रश्नावली से पश्चिमी देशों के शहरी जीवन पर जानकारी संकलित की। पूर्व-औद्योगिक लोगों की मान्यताओं, रीति-रिवाजों, रस्मों, कला, प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक संगठन के बारे में स्वयं तथ्यों को एकत्रित करने की जरुरत ने मानव विज्ञान पर एक स्थायी प्रभाव डाला एवं नवीन आंकड़ों संग्रह पर हर दम जोर दिया गया।

20वीं शताब्दी के मध्य तक अथवा बाद के सायं तक समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति की भिन्नता को होबेल (1958) के कथन से संक्षेपित किया जा सकता है, जिस पर वह मुख्य रूप से निम्न ऐतिहासिक कारणों से विचार करते हैं:

> "प्रत्येक क्षेत्र (समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान - यहां तक कि सामाजिक मनोविज्ञान की भी) की एक अलग पृष्ठभूमि रही है जिनके द्वारा जांच के कुछ भिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है, और उनके पारंपरिक दृष्टिकोण एवं अवधारणाओं में अंतर है। मानव विज्ञान संस्कृति एवं सम्पूर्ण समाज के संदर्भ में कार्य करने पर बल देता है। समाज शास्त्र जटिल पश्चिमी समाज के पहलुओं के संदर्भ में कार्य करने पर बल देता है। मानव विज्ञान मुख्य रूप से प्राकृतिक विज्ञान से निकला है एवं इसमें प्राकृतिक विज्ञान की परंपरा का बड़े स्तर पर प्रयोग होता है। फिर भी अध्ययन के इन दोनों क्षेत्रों के बीच पद्धतिगत भिन्नताएँ प्रत्येक वर्ष कम हो जाते हैं, क्योंकि मानव विज्ञान अधिक विश्लेषणात्मक तथा समाजशास्त्र अधिक उद्देश्यपरक बन जाता है, जिससे आज इनके बीच अंतर करना सुविधाजनक है। मानव विज्ञानी मुख्य रूप से आदिम लोगों के समाज पर ध्यान देते हैं और समाजशास्त्री हमारे अपने (यूरोपीय एवं/अथवा पश्चिमी समाजों) समकालीन सभ्यता पर ध्यान केंद्रित करते हैं "(पृष्ठ .9)।

अलग-अलग देशों एवं संदर्भों में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच संबंध एक समान नहीं रहा है। "समाजशास्त्र क्या है?" की अवधारणा एवं विचार तथा "सामाजिक मानव विज्ञान क्या है?" के सवाल के जबाब में क्षेत्रीय विविधता आ जाती है। इस संबंध में बेते (1974) वर्णन करते हैं कि:

> यूनाइटेड किंगडम में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच विभिन्नता के उद्देश्य की स्थिति महानगरीय देश एवं उपनिवेशों में समाज एवं संस्कृति के बीच का अंतर था, खास तौर से संयुक्त राज्य अमेरिका में यह औद्योगिक शहर में आदिवासी बस्तियों के जीवनशैली के बीच का अंतर था। अमेरिकी शहर की आक्रामक, विस्तृत जगत एवं अमेरिकी बस्तियों की स्थिर, मौत की दुनिया की तुलना में कोई भी दो अलग-अलग संसार नहीं हो सकते। अतः इसमें थोड़ा आश्चर्य होता है कि समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच अंतर को किसी भी दूसरे देश की तुलना में संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिक चिह्नित किया गया। फिर भी यह कोई घटना नहीं हो सकती है कि यूनाइटेड किंगडम में साम्राज्य की क्षति के उपरांत इन दोनों के बीच अंतर कम चिह्नित हो गए जिसने महानगरीय देश एवं उपनिवेशों के बीच की भिन्नता की गति को कम कर दिया (पृष्ठ 703)।

ब्रिटेन में एक सामान्य अवधारणा यह भी है जो " खुद में एवं मूल निवासियों के बीच एक साधारण अंतर लाता है; जब उन्होंने खुद का अध्ययन किया तो वे समाजशास्त्री बन गए और जब उन्होंने मूल निवासियों का अध्ययन किया तो वे सामाजिक मानवविज्ञानी बन गए ... यहां अमेरिका वालों हेतु भी समान अंतर करने की प्रवृत्ति है, हालांकि वह स्पष्ट रूप से नहीं है । जब वे अपने समाज एवं संस्कृति के मूलाधार का अध्ययन करते हैं तो वे समाजशास्त्री बन जाते हैं। और जब वे अन्य समाजों एवं संस्कृतियों खासकर अफ्रीका, एशिया एवं लैटिन अमेरिका (अथवा अपने समाज के कमजोर समूह) का अध्ययन करते हैं तो वे जातीय समाजशास्त्री बन जाते हैं। बहुत ही दुख की बात है कि कुछ भारतीय अब यह महसूस करते हैं कि उन्हें खुद के बीच के अंतर को जानने के लिए इसी पद्यति का इस्तेमाल करना चाहिए " (बेते, 1974:704)।

थर्ड वर्ल्ड के देशों, खास तौर से भारत के संदर्भ में, समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान का संबंध संदिग्ध है। 1920 के दशक में जब भारत में समाजशास्त्र को शुरू किया गया, उस समय "समाजशास्त्र ने अपनी वैधता पहले ही स्थापित कर ली थी; और इस विषय में कुछ जगहों पर अपना स्थान बना लिया था पर सभी पश्चिमी विश्वविद्यालयों में इसे स्थान नहीं मिला था और इस आधार पर भारतीय समाजशास्त्रियों के लिए अपने विश्वविद्यालयों में इसके लिए जगह अथवा सीट का दावा करना अपेक्षाकृत सरल था" (बेते, 2004: 5)। वास्तविकता यह भी है कि "भारतीय विश्वविद्यालय प्रणाली में हमें समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच जो अंतर दिखाई देता है वह भारतीय विद्वानों द्वारा स्वयं नहीं बनाया गया, अपितु पश्चिम से अधिगृहित किया गया। पश्चिमी देशों में ही यह अंतर दोनों विश्व युद्धों के बीच की अवधि में सबसे अधिक उभर कर सामने आया और यह वह समय था जब भारत में समाज एवं संस्कृति विज्ञान अपनी जड़ें जमा रहा था। यदि आज इस भिन्नता से कई भारतीय सामाजिक वैज्ञानिक परेशान हैं, तो ऐसा इसलिए क्योंकि यह उनके कार्य की परिस्थितियों के अनुरूप नहीं है, जो कि किसी भी मामले में मुख्य स्रोत नहीं था, जिससे यह विकसित हुआ " (बेते, 1974: 703)। सच्चाई यह है कि "भारत में कार्य के उद्देश्य की स्थिति बहुत भिन्न है, हालांकि पुराने लेबल अब भी इस्तेमाल किये जाते हैं। लगभग सभी भारतीय – चाहे वे 'समाजशास्त्री' हो या 'सामाजिक मानवविज्ञानी'- वे

भारतीय समाज के किसी न किसी क्षेत्र का अध्ययन करते हैं, जो पूर्ण रूप से न तो बहुत आदिम है और न ही बहुत उन्नत। जब कोई भारतीय 'आदिवासी' गांव का अध्ययन करता है तब वह एक 'मानवविज्ञानी' होता है और जब वह 'गैर आदिवासी' गांव का अध्ययन करता है तो वह एक 'समाजशास्त्री' होता है; अथवा जब वह किसी गांव, आदिवासी अथवा गैर-आदिवासी का अध्ययन करता है, तो वह एक 'मानवविज्ञानी' होता है, परंतु जब किसी नगर या शहर का अध्ययन करता है, तो वह 'समाजशास्त्री' होता है (उपरोक्तानुसारः 703-704)। इसलिए बेते का यह मानना है कि भारत में "आदिवासी' और 'गैर आदिवासी' 'गांव के बीच का अंतर, अथवा गांव और शहर के अंतर संयुक्त राज्य अमेरिका में शहर और बस्तियों के बीच का अंतर अथवा महानगरीय देशों के बीच और ब्रिटिश साम्राज्य में कॉलोनी के बीच के अंतर से एकदम भिन्न प्रकार का होता है " (उपरोक्तानुसारः 704)।

2.7 सारांश

मानव विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध वास्तव में बहुत घनिष्ट है। ये दोनों विषय एक दूसरे से इतने मिलते जुलते हैं कि इनकी व्यापकता, अभिरुचि क्षेत्रों, सिद्धांतों, पद्धति, और अनुप्रयोग में अंतर करना मुश्किल है। जिन परंपराओं में उन्हें विकसित किया गया था उनके जांच के वांछित क्षेत्रों में भी सम-मिलन (एकरूपता) था। इस कारण समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान दोनों मानव समाज का अध्ययन करते हैं और बड़े पैमाने पर अपनी अपनी सैद्धांतिक समस्याओं और अभिरूचियों को एक दूसरे से साझा करते हैं। इसी कारण कई विद्वान् सामाजिक मानव विज्ञान को समाजशास्त्र या समाजशास्त्र की शाखा मानते हैं। इनकी समानताओं के बावजूद, दोनों विषयों के बीच भिन्नता भी हैं जो कि प्रारंभिक विकास अवस्था के बाद के चरणों तक और इन क्षेत्रों के संदर्भ में और जांच की ज़रुरत, पद्धति, सिद्धांतों एवं अभ्यास के प्रयोग की प्राथमिकता के आधार पर देखे जा सकते हैं। हालांकि इस प्रकार की अंतर संक्षेप में मामूली हैं परन्तु विश्वविद्यालय प्रणालियों में भिन्न-भिन्न शैक्षिक विषयों एवं विभागों के विकास को देखते हुए ये अपने आप में भिन्नता के मामले भी बन जाते हैं। एक और महत्वपूर्ण पहलू जिस पर विचार करने की जरुरत है, वह है समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान की अवधारणा की अस्पष्टता, विशेष रूप से भारत सहित थर्ड वर्ल्ड के देशों के संदर्भ में। समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान जिस प्रकार पश्चिम के आविष्कार हैं, उनकी संकल्पना और अनुभूति तथा साथ ही उसके प्रयोक्ता उलझे हुए और दागदार हैं। सच्चाई यह है कि पश्चिमी समाजशास्त्री खास तौर से अमेरिका एवं ब्रिटेन में समाजशास्त्रियों को 'सामाजिक' या 'सांस्कृतिक' मानवविज्ञानी उस समय मानते हैं जब अनुसंधान अध्ययन जनजातीय आदिवासी और/या ग्रामीण क्षेत्रों और औपनिवेशिक देशों में भी होते हैं। दूसरी ओर वे समाजशास्त्रियों को 'समाजशास्त्री' तब मानेंगे जब वे समाजशास्त्री 'शहरी' और/अथवा 'उन्नत' समाजों का अध्ययन करेंगे। भारतीय समाजशास्त्रियों के संदर्भ में भी यह बात सत्य है। इसलिए, पश्चिमी समाजशास्त्रियों के परिप्रेक्ष्य में सभी भारतीय समाजशास्त्री इस तथ्य हेतु सामाजिक मानवविज्ञानी हैं क्योंकि भारत में समाजशास्त्री किसी न किसी समय 'आदिवासी' एवं 'ग्रामीण' समुदायों तथा शहरी समुदायों दोनों का अध्ययन करते हैं। दूसरी बात यह है कि भारत में कई प्रशिक्षित मानवविज्ञानियों ने भारत में समाजशास्त्र की स्थापना के प्रारंभिक अवस्था से ही समाजशास्त्र को आत्मस्वीकृत किया है। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्रियों एवं सामाजिक मानवविज्ञानियों द्वारा विधियों एवं तकनीकों के उपयोग (या निगमन) की बढ़ती प्रवृत्ति जोकि परंपरागत रूप से समाजशास्त्र या सामाजिक मानव विज्ञान के क्षेत्र के रूप में भिन्न-भिन्न विषयों के रूप में थी उसने भारत में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच अंतर्संबंधो को आगे बढ़ाया है। यदि यह प्रवृत्ति कोई संकेतक समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान है तब संभावना है कि इन दोनों विषयों के घनिष्ठ संबंध भविष्य में भी जारी रहेंगे?

2.8 अभ्यास प्रश्न

1) समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के प्रादुर्भाव के बारे में चर्चा करें।

2) समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की समानताओं एवं भिन्नताओं की जांच करें।

3) विशेष रूप से भारत के संदर्भ के साथ समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के संबंधों पर चर्चा करें।

2.9 संदर्भ

बीटी, जॉन, 1980 (1964), अदर कल्चर्स, लंदन एवं हेनलीः रूटलेज एंड कीगेन पॉल

बेते, आंद्रे, 1974 "सोशियोलॉजी एंड इथ्नोसोशियोलॉजी" इंटरनेशनल सोशल साइंस जर्नल, खंड ग्टप् संख्या 4 पेरिस यूनेस्को

बेते, आंद्रे, 2004 "सोशियोलॉजीः एस्से ऑन अप्रोच एंड मेथड (तृतीय संस्करण), नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस

एरीकसेन, थॉमस हालैंड एंड फिन सिवर्ट निलसन, 2001, ए हिस्ट्री ऑफ एंथ्रापोलॉजी (द्वितीय संस्करण), न्यूयार्क, प्लूटो प्रेस

इवांस-प्रिचार्ड, ई,ई, 1951, सोशल एंथ्रापोलॉजी, लंदनः कोहन एंड वेस्ट लिमिटेड

हेरिस, मार्विन, 1979 (1969) द राइज ऑफ एंथ्रापोलॉजिकल थ्योरी, लंदन एंड हेनलेः रूटलेज एंड केगेन पॉल

हैबेल, ई.ए. 1958, मेन इन द प्रिमिटिव वर्ल्ड, न्यू यॉर्क/लंदन/टोरंटोः मेकग्रा-हिल बुक कंपनी, आईएनसी

जैन, आर.के. 1986, "सोशल एंथ्रापोलॉजी ऑफ इंडियाः थ्योरी एंड मेथड्स" सर्वे ऑफ रिसर्च इन सोशियोलॉजी एंड सोशल एंथ्रापोलॉजी (पृ. 1-50) नई दिल्लीः इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च

कूपर, आदम जे, 2018 "हिस्ट्री ऑफ एंथ्रापोलॉजी" इन साइक्लोपीडिया बिटेनिका ("एंथ्रापोलॉजी") https:@@www-britannica-com@science@anthropology (20 जुलाई 2018)

मेर, लूसी, 1965 एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी, ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,

मेलीनोंस्की, ब्रॉनीसलॉ, 1922, अर्गोनोट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिकः एन एकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एडवेंचर इन द आर्किपेलागॉज ऑफ मेलेनिशयन न्यू ग्यूना, लंदनः जॉर्ज रूटलेज एंड संस लिमिटेड

मेकगी, आर.जे. एवं वार्म्स, आर.एल. (2012) एंथ्रापोलॉजिकल थ्योरीः एन इंट्रोडक्ट्री हिस्ट्री (पांचवा संस्करण) यूएसएः मेकग्रा-हिल।

रेडक्लिफ-ब्राउन, ए.आर. 1922, द अंडमान आयरलैंडर्स, लंदनः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

रेडक्लिफ-ब्राउन, ए.आर. 1952, स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इन प्रिमिटिव सोसायटीः एस्सेज एंड एड्रेस, ग्लेनोइ, इलियोनोइसः द फ्री प्रेस।

रेडक्लिफ-ब्राउन, ए.आर. 1983 (1958) मेथड इन सोशल एंथ्रापोलॉजी, शिकागो, इलियोनोइसः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस

सरना, गोपाला (1983) सोशियोलॉजी एंड एंथ्रापोलॉजी एंड अदर एस्सेज, कलकत्ताः इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल रिसर्च एंड एप्लाइड एंथ्रापोलॉजी।

वोगेट, फ्रेड डब्ल्यू 1975, ए हिस्ट्री ऑफ इथोनोलॉजी, यूएसएः हॉल्ट, राइनहर्ट एंड विंस्टन

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 समाजशास्त्र का मनोविज्ञान से संबंध

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 समाजशास्त्र की परिभाषा

3.2.1 मनोविज्ञान की परिभाषा

3.3 समाजशास्त्र और मनोविज्ञानःअन्तर्सम्बन्ध

3.4 सामाजिक मनोविज्ञानः ऐतिहासिक विकास

3.4.1 सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा

3.4.2 समाजशास्त्र और मनोविज्ञान का सामाजिक मनोविज्ञान से अंतःविषयक सम्बन्ध

3.4.3 सामाजिक मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र

3.5 समाजशास्त्रीय उपकरण

3.5.1 समाजशास्त्रीय परिकल्पना

3.5.2 मान्यताएं एवं मूल्य

3.5.3 संस्कृति

3.5.4 भूमिका एंव स्तर

3.5.5 सामाजीकरण

3.6 सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयोग होने वाले समाजशास्त्र के विचार एवं तरीके

3.6.1 मध्यम श्रेणी के सिद्धांत

3.7 सामाजिक मनोविज्ञान की समाजशास्त्रीय क्षेत्र में संभावनाएं

3.7.1 सांकेतिक आदान-प्रदान

3.7.2 सामाजिक ढांचा एवं व्यक्तित्व

3.7.3 सामूहिक पद्धतियां

3.8 सामाजिक मनोविज्ञान में अनुसंधान के उद्देश्य

3.9 समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान का महत्व

3.10 सारांश

3.11 संदर्भ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जानेंगे :

- समाजशास्त्र व सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषाएं;
- समाजशास्त्र व सामाजिक मनोविज्ञान के सरोकार;
- समाजशास्त्र और सामाजिक मनोविज्ञान में संबंध;
- समाजशास्त्र और मनोविज्ञान मिलकर एक नए विषय को जन्म देते हैं जिसे समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान कहा जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान यह समझाता है कि व्यक्तिगत संबंधों पर समाज का क्या प्रभाव पड़ता है;

*डॉ. राजश्री चंचल, सहायक प्रोफसर एयूडी, दिल्ली

- सामाजिक मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विकास कैसे हुआ; तथा
- सामाजिक मनोविज्ञान में समाजशास्त्र की कौन-कौन सी अवधारणाओं व पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

3.1 प्रस्तावना

सभी जीव धारियों में केवल मनुष्य ही सोचने और अपने आसपास के वातावरण का सार्थक इस्तेमाल करने की क्षमता रखता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समूह बनाकर रहना पसंद करता है। ज्यों ज्यों मानव समाज का विकास होता गया है विद्वानों का यह प्रयास रहा है कि वे विभिन्न देशकालों में मनुष्यों की सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को समझें तथा उन्हें लिपि बद्ध करें। मनुष्यों की प्रकृति तथा उनके संबंधों के प्रति समाज की खोज के फलस्वरूप समाज विज्ञानों की कोख से समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा इतिहास जैसे महत्वपूर्ण विषयों का जन्म हुआ। इन सभी विषयों में समाजशास्त्र एक ऐसा विषय है जो मानव समाज तथा उसमें रहने वाले मनुष्यों के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र की तरह ही मनोविज्ञान के अध्ययन का केंद्रीय विषय भी मनुष्य ही है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या समाजशास्त्र और मनोविज्ञान का आपस में कोई संबंध है? क्या इन दोनों विषयों के सिद्धांतों के माध्यम से मनुष्यों की सामाजिक व मनोवैज्ञानिक स्थितियों को अच्छी तरह समझा और जाना जा सकता है। इस इकाई में हम समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान की प्रकृति को समझेंगे तथा सामाजिक मनोविज्ञान के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.2 समाजशास्त्र की परिभाषा

समाजशास्त्र के जनक के रूप में ख्याति प्राप्त महान समाजशास्त्री ऑगस्टे कोम्टे को "समाजशास्त्र" शब्द सबसे पहले प्रयोग में लाने का श्रेय प्राप्त है। समाजशास्त्र समाज तथा मानवीय संबंधों के अध्ययन पर जोर देता है। ऐसा माना जाता है कि जब मनुष्य एक दूसरे के साथ रहने लगते हैं और परस्पर संबंधों के द्वारा एक दूसरे के निकट आते हैं तो उनके बीच अन्तर्सम्बन्ध बनने लगते हैं। इससे सामाजिक समूहों व समुदायों का जन्म होता है। पारस्परिक संबंधों की प्रगाढ़ता उन्हें एक दूसरे को गहराई से समझने तथा सहयोगी भूमिकाओं में खड़े होने के लिए प्रोत्साहित करती है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक स्वत्व तथा वैयक्तिक स्वत्व दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसी आधार पर विद्वानों ने समाजशास्त्र को परिभाषित करने तथा उसकी विषय वस्तु की विशुद्ध व्याख्या करने के प्रयास किए हैं।

महान समाजशास्त्री ऑगस्टे कोम्टे ने समाजशास्त्र की विषय वस्तु को दो भागों में विभाजित किया है- सामाजिक स्थायित्व तथा सामाजिक गतिशीलता। सामाजिक स्थायित्व में समाज के विभिन्न घटकों के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन शामिल है तथा सामाजिक गतिशीलता में समस्त समाजों को एक इकाई मानकर उनका विश्लेषण किया जाता है तथा यह जानने का प्रयास किया जाता है कि विभिन्न कालावधियों में उनका किस प्रकार विकास हुआ और उनमे कैसे कैसे बदलाव आए (इन्कलेस 1964)। एमिलदुरखेम के अनुसार - समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यों का अध्ययन है। समाजशास्त्र को मानव जीवन का वैज्ञानिक अध्ययन कहा जा सकता है जिसमें मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्ध, सामाजिक समूह तथा समाज का समग्र अध्ययन शामिल है। समाजशास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यापक है जिसमें मनुष्यों के दिन प्रतिदिन के संपर्कों, संबंधों व सामान्य व्यवहारों से लेकर विश्वभर के समाजों का तुलनात्मक अध्ययन तक सब कुछ समाहित है।

3.2.1 मनोविज्ञान की परिभाषा

'मनोविज्ञान' शब्द का उद्भव ग्रीक भाषा के दो शब्दों, साईकी तथा लोगोस से हुआ है। साईकी का है अर्थ आत्मा अथवा प्राण तथा लोगोस का अर्थ ज्ञान या खोज अथवा अध्ययन है। मनोविज्ञान का विकास एक स्वतंत्र विषय के रूप में 1879 में हुआ, जब विल्हेल्म वुंड ने जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रयोगशाला स्थापित की थी।

आरम्भ में मनोविज्ञान को "चेतना के विज्ञान" के रूप में परिभाषित किया गयाद्य सरल शब्दों में मनोविज्ञान को मानव-व्यवहारों तथा अनुभवों के सिलसिलेवार अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। मनोविज्ञानविदबैरन (1990) के अनुसार,"मनोविज्ञान मनुष्यों के व्यवहारों एवं उनकी अनुभूति प्रणालियों का विज्ञान है।" मनोविज्ञान के अध्ययन के दायरे में मनुष्य की मानसिक अनुभूतियां एवं संबंधित गतिविधियां जैसे धारणाएं, संज्ञान, भावनाएं तथा इन सभी का सामाजिक वातावरण पर प्रभाव आदिसब शामिल है।

3.3 समाजशास्त्र और मनोविज्ञानः अंतर्संबंध

समाजशास्त्र और मनोविज्ञान दोनों का सामाजिक विज्ञानों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। स्वतंत्र एवं प्रथक विषय होते हुए भी दोनों के अध्ययन के केंद्र में मानव जीवन के विविध पक्ष ही हैं। मनुष्यों के अतिरिक्त जीवधारियों की अन्य प्रजातियां अपने अस्तित्व को बनाए रखने तथा जीवन जीने के लिए भौतिक परिस्थितियों के प्रति अनुकूलन की प्रवृत्तियों तक ही सीमित रहती है; जबकिमनुष्य व्यवहार पद्धतियां सदैव सीखतेरहते हैं। जानवरों की प्रवृत्तियां अनुवांशिक प्रतिबद्धताओं से प्राप्त होने वाले निर्देशों से संचालित रहती हैं और वे उन्हीं के अनुरूप व्यवहार करते हैं। पशु-पक्षी अपने जीवन काल में जिन-जिन कार्यों को संपन्न करते हैं उनके लिए उन्हें निर्देश भी अनुवांशिकता से ही प्राप्त होते हैं।

हरलामबोस और होलबोर्न (2008) उदाहरण के लिए पक्षियों में अपने लिए तथा अपने बच्चों के लिए घोंसले बनाने की प्रवृत्ति होती है। अलग-अलग प्रजातियों के पक्षी, अलग-अलग तरह के घोंसले बनाते हैं। इसकेठीक विपरीत मनुष्यों के मस्तिष्क सामाजिक संस्कृतियों, रीतिरिवाजों, परंपराओं, मान्यताओं तथा मूल्यों से प्रभाव ग्रहण करते हैं। मनुष्य सभ्यता की प्रक्रिया द्वारा ऐसी व्यवहार पद्धतियां सीखते रहते हैं जो उनके आस-पास के वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहयोगी होती हैं। मनुष्य को सामाजिक संदर्भों से ऐसी जानकारियां प्राप्त होती रहती है जो जीवन की परिस्थितियों के साथ उनका तालमेल बैठाने के लिए जरूरी होती हैं। समाजशास्त्र की विश्लेषण की आधारभूत इकाई सामाजिक प्रणाली जैसे परिवार, सामाजिक समूह, समुदाय, संस्कृति आदि ही होती है।

मनोविज्ञान की प्रमुख विषय वस्तु मनुष्य के मन का अध्ययन है। मनुष्यों की सोच, उनके व्यवहार, उनकी भावनाएं, उनकी धारणाएं तथा जीवन मूल्य एक खास सामाजिक परिवेश में उनके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। जबकि समाजशास्त्र सामाजिक परिवेश, सामाजिक संस्थान जैसे परिवार, समुदाय आदि का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान के अध्ययन के केंद्र में व्यक्ति रहता है। सामूहिक योग्यता का आंकलन करते समय समाज-विज्ञानी तथा मनोवैज्ञानिक समूह की सामान्य रुचियों,उनके अंदर मौजूद सहयोग की भावनाओं,सह-अस्तित्व की प्रवृत्तियों, सूचनाओं के प्रवाह निर्णय लेने की क्षमताओं तथा स्तरीकरण की प्रवृत्तियों का पता लगाते हैं। रुचियोंकी समानता के आधार पर दोनों प्रकार के विद्वान, विभिन्न सिद्धांतों के सहयोग से समूह की योग्यताओं और क्षमताओं का आंकलन करने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

3.4 सामाजिक मनोविज्ञानः ऐतिहासिक विकास

19वीं शताब्दी में प्राकृतिक विज्ञानों के अस्तित्व में आने के साथ ही वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर मानव व्यवहार का अध्ययन करने की जिज्ञासा का आरंभ हो गया था। कॉम्टे का विचार था - प्राकृतिक विज्ञानों की वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग से समाज का अध्ययन किया जा सकता है। कॉम्टेके अनुसार – "जिन चीजों से हम परिचित हैं उनसे संबंधित परिदृश्य की व्याख्या हम उन चीजों को ध्यानपूर्वक देखने से प्राप्त अनुभवों के आधार पर आसानी से कर सकते हैं।" अनेक घटनाओं के बीच तर्कसंगत संबंधों को गहराई से समझ लेने के बाद आगे घटित होने वाली घटनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है। कॉम्टे का यह भी मानना है कि - यदि समाजिक विज्ञानी किसी समाज में प्रचलित नियमों व कानूनों को अच्छी तरह समझ लें तो वे उस समाज के बेहतरीकरण के लिए कारगर योजनाएं सफलतापूर्वक बना सकते है। किसी समाज के बारे में जानकारी एकत्र करने तथा व्यक्तियों की समाज में हैसियत पता लगाने के प्रयासों द्वारा प्रमाणों तथा अनुवीक्षण की मदद से वहां के लोगों की मानसिकता का पता लगाया जा सकता है। आरंभिक दौर के तथा बाद के मनोविज्ञानियों के विचारों ने समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान का ढांचा तैयार करने में विशेष रूप से मदद की है। मीड ने हमारे अपने बारे में विचारों को जानने के लिए हमारे सामाजिक हालात का अध्ययन करने पर विशेष जोर दिया है। समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा तैयार करने में जिन अन्य विद्वानों के नाम उल्लेखनीय है वे हैं - जॉर्ज सिम्मल (1858-1918), चार्ल्स हॉर्टनकूली (1864-1929) तथा इरविन गोफमान।

आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान का उदभव 19वीं शताब्दी में हुआ। सामाजिक मनोविज्ञान के केंद्रीय विषय मानसिक विकास पर आधारित पहली उल्लेखनीय पुस्तक "सोशल एंड एथिकल इंटरप्रिटेशन इन मेंटल डेवलपमेंट" न्यूयॉर्क में 1987 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के लेखक जाने-माने समाजशास्त्री जेम्स मार्क बोल्डविन थे। इससे पहले 1908 में विलियम मैकदौगल तथा एडवर्ड ए. रॉस सामाजिक मनोविज्ञान को स्वतंत्र वैज्ञानिक विषय घोषित कर चुके थे। इस वर्ष सामाजिक मनोविज्ञान पर दो पुस्तकों का प्रकाशन हुआ था - एक थी विलियम मैकदौगल की पुस्तक ऐन इंट्रोडक्शन टू सोशल साइकोलॉजी तथा दूसरी थी ख्याति प्राप्त समाज विज्ञानी एडवर्ड ए. रॉस की पुस्तक सोशल साइकोलॉजी।

3.4.1 सामाजिक विज्ञान की परिभाषा

व्यक्तिगत तथा सामाजिक सन्दर्भों में सदैव एक अंतर्संबंध मौजूद रहता है। दोनों एक दूसरे से प्रभावित होते रहते हैं तथा एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालते रहते हैं। "मानवीय सामाजिक व्यवहार की प्रकृति तथा उसके कारण के बीच अन्तर्सम्बन्ध के अध्ययन को सामाजिक मनोविज्ञान कहा जाता है।"(मीचेनेर - डलमटेर, 1999 सीघ्फ़. डलमटेर, 2006:11)। महान विद्वान जी. डब्ल्यू आलपोर्ट (1954:5) सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा करते समय व्यक्ति के वास्तविक, काल्पनिक अथवा दूसरों के प्रभाव से उत्पन्न विचारों, भावों तथा व्यवहारों पर विशेष रूप से ज़ोर देते हैं। कुछ अन्य विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं का सार यह है कि -

"सामाजिक मनोविज्ञान एक ऐसा मनोविज्ञान है जो व्यक्ति के मन पर पड़े सामाजिक प्रभावों का गहराई तक जाकर उद्घाटन करता है।"

बैरन और बयर्ने (2007) सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि – "यह एक वैज्ञानिक क्षेत्र है जो मनुष्य के व्यवहार की प्रकृति तथा उसके कारणों को समझने का प्रयास करता है।"

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि "सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भ में मनुष्यों के विचारों, भावनाओं तथा व्यवहारों का सिलसिलेवार अध्ययन है।"

बोध प्रश्न

1) सामाजिक मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.4.2 समाजशास्त्र और मनोविज्ञान का सामाजिक मनोविज्ञान से अंतः विषयक संबंध

सुप्रसिद्ध मनोविज्ञानी आलपोर्ट के अनुसार– "सामाजिक मनोविज्ञान की जड़ें समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों में गहराई तक फैली हुई है।" मनोवैज्ञानिक विचारक कुक, फाइन, हाउस (1995) व डेलमेटौर (2006) का विचार है कि समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों के विश्लेषण एवं संश्लेषण का एक बहुत बड़ा भाग सामाजिक मनोविज्ञान के अंतर्गत आता है। यही कारण है कि समाजशास्त्र व मनोविज्ञान सामाजिक मनोविज्ञान से सीधे जुड़े हैं। सामाजिक मनोविज्ञान का मुख्य विषय सामाजिक संदर्भ में व्यक्ति का अध्ययन है या यह कहें कि मन, चेतना व समाज तीनों सामाजिक मनोविज्ञान के अंतर्गत आते हैं। अनेक समाजशास्त्रीय एवं मनोविज्ञान विषयक धारणाओं का प्रयोग मनोविज्ञान में मनुष्यों तथा समाज के पारस्परिक प्रभावों को समझने के लिए किया जाता है। समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान पर उद्देश्य, पहुंच व अध्ययन विषय आदि के आधार पर सामाजिक मनोविज्ञान की निर्भरता को ध्यान में रखते हुए उसे दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है– समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान तथा मनोविज्ञान परक सामाजिक मनोविज्ञान। यह विश्लेषण 1977 में हाउस तथा स्ट्राइक ने किया था। इन दोनों धाराओं के बीच अंतर स्थापित करना बहुत कठिन है क्योंकि सामाजिक मनोविज्ञान समाजशास्त्र व मनोविज्ञान से ही निकली है और इन दोनों के प्रभावों से उसे पूरी तरह मुक्त नहीं किया जा सकता है। चिंतन आधारित सामाजिक मनोविज्ञान अथवा सामाजिक चिंतन यह पता लगाता है कि कोई विचार किस तरह पनपता है और कैसे दिमाग में घर बना लेता है।

थोइट्स (1995:1232) के अनुसार "सूचना अपने मूल रूप में अथवा मानसिक निरूपण के रूप में एकत्रित होती है तथा संकेतों से, स्मृतियों से, किसी निश्चय पर पहुँचने की कोशिश

से, अपने तथा दूसरों के बारे में सोचते जाने तथा अनुमान लगाने से अधिक प्रभावशाली बन जाती है।" यहां चिंतन सामाजिक संदर्भ है, यह सामाजिक अनुभवों से उत्पन्न होता है तथा पारस्परिक व्यवहारों के रूप में प्रकट होता है।

समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान मनुष्यों की समग्र मानसिक अवस्था, वर्गीय मनोविज्ञान तथा सामूहिक मानसिकता के तत्व जैसे रीति रिवाज, नैतिक मूल्य एवं परंपराएं आदि को केंद्र में रखते हुए कार्य करता है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि यह थोड़े से लोगों की सामूहिक मानसिक गतिशीलता को केंद्र बनाकर कार्य करती है।

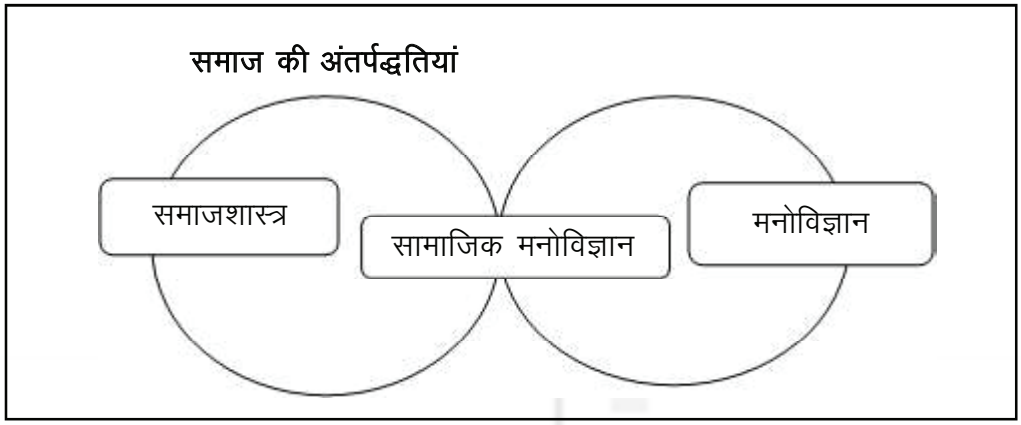

चित्र 3.1: सामाजिक मनोविज्ञान समाजविज्ञान व मनोविज्ञान दोनों के तत्वों को अपने में समाहित किये रहता है।

स्रोतः रोहाल, मिल्की और लुकास (2011:9)

3.4.3 सामाजिक मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र

सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भ में मानव-व्यवहार का अध्ययन करता है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के मन तथा उसमें पैदा होने वाले विचारों का अध्ययन करता है। व्यक्ति चाहे समूह का हिस्सा हो या अलग-थलग जीवन जी रहा हो, मानसिक स्थिति के प्रभाव से पैदा हुए मानव-व्यवहार के बारे में गहरी जानकारी प्राप्त करना, सामाजिक मनोविज्ञान का प्रमुख काम है। मनुष्य चाहे छोटे समूहों में रहने वाले हों या फिर बड़े समूहों में रहते हों, उनके आपसी संबंधों तथा उनसे उपजे व्यवहारों का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान के अंतर्गत आता है। डलमटेर (1995:11) के अनुसार सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन के विषय हैं–

- एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव
- मानव समूह का उसके सदस्य पर प्रभाव
- व्यक्तियों के उनके समूह पर प्रभाव
- एक व्यक्ति समूह का दूसरे व्यक्ति समूह पर प्रभाव

सामाजिक परिवेश तथा व्यक्ति दोनों एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक और मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों की समग्रता के साथ व्याख्या करने का प्रयास करता है। क्योंकि किसी देश अथवा समाज की संस्कृति यह तय करती है कि उस देश या समाज के लोग अपने विचारों तथा अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति किस प्रकार करते हैं। इसीलिए एक समाज में रहने वाले लगभग सभी लोगों का सोचने का तरीका कुछ-कुछ एक जैसा ही होता है।समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान के अनुसंधान एवं अध्ययन के केंद्रीय विषय हैं - जीवन की समग्र व्याख्या, सामाजीकरण,

सामाजिक संपर्क सूत्र, सामूहिक गतिशीलता, रूढ़िवाद, सामाजिक पतन तथा सामाजिक स्तरण। जीवन में मनुष्य को अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है, जैसे - बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था, अधेड़ अवस्था, वृद्धावस्था आदि। हर अवस्था में उस पर सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों, धार्मिक विश्वासों तथा रीति रिवाजों आदि सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का प्रभाव पड़ता है।

विभिन्न समाजों में बच्चों के पालन-पोषण के तरीके अलग अलग होते हैं। इनका प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है। पारिवारिक स्तिथियां तथा पारिवारिक संबंध मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं। आज हम ऐसे समाज में जी रहे हैं जिसमें सामाजिक विविधता व्यापक रूप से मौजूद है; इसीलिए सामाजिक मनोविज्ञानी बहुसंस्कृतिवादी प्रवृत्ति से प्रभावित रहते हैं। उनके अध्ययन के क्षेत्र में समाज का वर्गीय विभाजन, लैंगिकता, नैतिक धरातल, आयु, लैंगिक रुझान, विकलांगता अथवा अक्षमता, धार्मिक मान्यताएं तथा अन्य अनेक सामाजिक व सांस्कृतिक आयाम शामिल रहते हैं।

3.5 समाजशास्त्रीय उपकरण

सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए कुछ अधिक उपकरणों की जरूरत नहीं पड़ती। समाज शास्त्री केवल दो चीजों की मदद से अपने अनुसंधान तथा सिद्धांतों का विवरण प्रस्तुत कर सकते हैं, यह दो चीजें हैं - संकल्पना और अभिव्यक्ति।

3.5.1 समाजशास्त्रीय संकल्पना

हमारा दिन प्रतिदिन का जीवन अनेक चीज़ों से प्रभावित होता हैं। इनमें पारिवारिक मूल्य एवं मान्यताएं मुख्य है जिनका निर्माण सामाजिक प्रभाव करते हैं। हमारे दैनिक जीवन में कौन-कौन सी ताकतें काम कर रही हैं इसे समझने के लिए समाजशास्त्रीय संकल्पना की जरूरत होती है।

सी. राइट मिल्स (1959) के अनुसार, "इतिहास तथा सामाजिक संरचना के संदर्भ में अपना तथा दूसरों का अतीत समाजशास्त्रीय संकल्पना कहलाता है।" मिल्स का तर्क है कि - समाजशास्त्री को किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए यह आवश्यक है कि वह उसके जीवन को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक, ढांचागत तथा ऐतिहासिक कारकों को भलीभांति समझ ले। मनुष्यों तथा उसके समाजों के बारे में जानकारी प्राप्त करने तथा उनके एक दूसरे को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाने के बाद ही यह समझा जा सकता है कि उस व्यक्ति की सोच, उसका व्यवहार तथा उसका सांस्कृतिक स्तर कैसा होगा।

समाजशास्त्रीय संकल्पना सामाजिक मनोविज्ञानी को ऐसी सक्षम अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो उन सभी सामाजिक कारकों तथा सामाजिक दशाओं के बारे में विचार कर सके जो उसके विचारों, भावनाओं तथा व्यवहार को प्रभावित करते रहे हैं।

3.5.2 सामाजिक मान्यताएं एवं सामाजिक मूल्य

सामाजिक मान्यताएं मनुष्य के व्यवहार को दिशा देती हैं तथा उस पर पूरा नियंत्रण रखती हैं। मनुष्य का व्यवहार, उसकी आचार संहिताओं से पूरी तरह प्रभावित होता है क्योंकि हर व्यक्ति को आचार संहिताओं का पालन करना पड़ता है। मूल्यों का मनुष्य के आदर्शों व विश्वासों से गहरा संबंध होता है। मूल्य ही आदर्शों की संरचना करते हैं तथा सामाजिक स्तर व सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप उन्हें ढालने का काम करते हैं।

3.5.3 संस्कृति

किसी समाज के अनुरूप व्यवहार पद्धतियों एवं विश्वासों को व्यक्तियों में ढालने की भूमिका उस समाज की संस्कृति निभाती है। हर समाज की अपनी एक विशेष संस्कृति होती है, जो उसकी पहचान बन जाती है। भाषा, प्रतीक, मूल्य, विश्वास, मान्यताएं तथा रहन-सहन की शैली व साजो सामान आदि सब मिलकर किसी समाज की संस्कृति को एक विशेष स्वरूप प्रदान करते हैं।

3.5.4 भूमिकाएं एवं स्तर

व्यवहार पद्धतियां ही भूमिकाएं हैं। भूमिकाएं व्यक्ति के सामाजिक स्तर का प्रतिनिधित्व करती हैं। भूमिकाएं वे व्यवहार पद्धतियां है जो समाज में मनुष्य एक दूसरे के संपर्क में आते समय निभाते हैं। भूमिकाएं व्यक्ति के सामाजिक स्तर का प्रदर्शन करती हैं। जैसे जब आप इस पुस्तक को पढ़ रहे होंगे तब आप विद्यार्थी अथवा पाठक की भूमिका में होंगे, जबकि आप परिवार व समाज में पुत्र, पुत्री, भाई-बहन अथवा पड़ोसी व संबंधी आदि अनेक भूमिकाओं में होते हैं। जब हम स्तर की या पद की बात करते हैं तो उसके दायित्व बोध, लाभ, प्रतिष्ठा आदि अनेक संबंधित घटक भी आ जाते हैं जिनका अनुभव कोई व्यक्ति समाज में अपने पद पर रहते हुए करता है।

3.5.5 सामाजीकरण

सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जो जन्म लेते ही व्यक्ति के जीवन में आरंभ हो जाती है। इस प्रक्रिया द्वारा नवजात शिशु उन सभी सामाजिक मान्यताओं, व्यवहार पद्धतियों, आस्थाओं, जीवन मूल्यों, जीवन स्तरों आदि का अनुभव करना आरंभ कर देता है। जो उस समाज विशेष में रहने के लिए आवश्यक होती है, यह प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है।

सामाजीकरण व्यक्तियों को सामाजिक हित के अनेक कार्यों को संपन्न करने की योग्यता व क्षमता प्रदान करता है, इनमें सबसे जरूरी है सामाजिक समरसता बनाए रखने तथा सामाजिक व्यवस्था दुरुस्त रखने की समझ व क्षमता।

3.6 समाजशास्त्र की अवधारणाएं व पद्धतियां जिनका सामाजिक मनोविज्ञान में इस्तेमाल होता है

मनुष्य के सामाजिक परिवेश के साथ संबंधों तथा मनुष्य व समाज की परस्पर निर्भरताओं का अध्ययन करने के लिए सामाजिक मनोविज्ञान को समाजशास्त्र के अनेक सिद्धांतों तथा तरीकों का सहारा लेना पड़ता है।

मैक्स वेबर के अनुसार – "मनुष्य के व्यवहार पर संस्कृति का प्रभाव सदैव बना रहता है, अतः मनुष्य की मानसिक अवस्था अथवा सोच को समझने के लिए उसके सांस्कृतिक परिवेश को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। जर्मन भाषा में एक शब्द आता है वेरस्टेहन जिसका अर्थ है "गहराई तक समझना"। इस पर काम करते समय अनुसंधान-कर्ता व्यक्ति के सामाजिक परिवेश तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का गहन अध्ययन कुछ इस तरह करता है जैसे वह उस समाज का ही एक अंग हो। इस तरह काम करने से किसी भी समाज-विज्ञानी के लिए वहाँ के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक सरोकारों व सांस्कृतिक मान्यताओं को पूरी तरह समझ लेना संभव हो पाता है। समाजशास्त्र में अनुसंधान करते समय आप गुणात्मक अनुसंधान प्रविधि पर जोर देते हैं अथवा मात्रात्मक अनुसंधान प्रविधि पर, इन दोनों स्थितियों में मौलिक अंतर है।

मात्रात्मक अनुसंधान प्रविधि के अंतर्गत सामाजिक मनोविज्ञानी बड़े स्तर पर सर्वेक्षण करते हैं, बड़ी संख्या में लोगों से पूछताछ करते हैं। फिर उन आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह जानने का प्रयास करते हैं कि उस समाज में रहने वाले लोगों की व्यवहार पद्धतियां किस तरह की हो सकती हैं। जबकि गुणात्मक अनुसंधान प्रविधि के अंतर्गत लोगों के बीच रहते हुए उनके विचारों को जाना जाता है। व्यक्तिगत रूप से तथा समूहों में उनसे ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जिनसे उनके अंदर की सच्चाई बाहर आ सके। सामूहिक वार्तायें आयोजित की जाती है तथा जिन स्रोतों से जानकारी प्राप्त होती हैं उनका बारीकी से विश्लेषण किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को खंगाला जाता है तथा यह जानने का प्रयास किया जाता है कि उनके विचार-जगत तथा भाव-जगत के मूल स्रोत क्या क्या है तथा उनके व्यक्तित्वों का विकास किन परिस्थितियों में हुआ है।

3.6.1 मध्यम श्रेणी का सिद्धांत

मध्यम श्रेणी के सिद्धांत की अवधारणा अमेरिकन समाजशास्त्री रॉबर्ट के. मर्टन (1949) ने स्थापित की थी। मध्यम श्रेणी का सिद्धांत सामाजिक प्राणियों के सामान्य सिद्धांतों के बीचों बीच स्थित हैं। सामाजिक प्रणालियों के सामान्य सिद्धांत विशेष वर्गों के सामाजिक व्यवहार, सामाजिक संगठनों तथा रहन सहन के स्तरों व अन्य अनेक विशेषताओं तक अपनी पूरी पहुंच नहीं बना पाते हैं। मध्यम श्रेणी के सिद्धांत सामाजिक परिदृश्य के सीमित पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। रॉबर्ट मर्टन के अनुसार "समाज की क्रियात्मक एकता की अवधारणा जटिल एवं अत्यधिक विषम समाजों पर ठीक से लागू नहीं हो पाती। जबकि इस अवधारणा के अनुसार सामाजिक प्रणाली का हर अवयव पूरी सामाजिक व्यवस्था के लिए काम करता है। समाज के सभी अंग सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक अखंडता के लिए मिलकर कार्य करते हैं।" अपने तर्क की पुष्टि के लिए वह धार्मिक विश्वासों की विविधता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। अनेक ऐसे समाज हैं जहां अनेक धर्मों के अनुयायी निवास करते हैं। धर्म सामाजिक एकता की भूमिका अदा करने के स्थान पर सामाजिक विभाजन की भूमिका अदा करता है। इसी लिए प्रसिद्ध विद्वान मर्टन किसी देश की कुछ सामाजिक प्रविधियों तथा कुछ सामाजिक व्यवहारों की व्याख्या करने के लिए मध्यम श्रेणी के सिद्धांतों का सहारा लेता है। सामाजिक मनोविज्ञानी खास तरह के सामाजिक परिदृश्य को समझने के लिए मध्यम श्रेणी के सिद्धांतों को इस्तेमाल करते हैं। कुर्ट लेविन का क्षेत्रीय सिद्धांत मध्यम श्रेणी के सिद्धांत का ही एक उदाहरण है। कुंठा, आक्रोश, दृष्टिकोण परिवर्तन, सहयोग तथा प्रतिस्पर्धा आदि के सिद्धांत सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के मध्यम श्रेणी के सिद्धांतों के दायरे में ही आते हैं।

3.7 समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य

अब तक की व्याख्याओं से यह समझा जा सकता है कि व्यक्तियों के दिन-प्रतिदिन के जीवन पर समाज की भूमिकाओं तथा प्रभावों की जानकारी प्राप्त करने के अनेक तरीके हैं। अपनी मरज़ी के अनुसार आप अपने चारों ओर फैले समाज के माध्यम से यह जानकारी इकट्ठी कर सकते हैं या फिर तुलनात्मक रूप से बड़े परिवेश जैसे लोगों के जीवन पर पड़ने वाले वैश्विक प्रभावों के माध्यम से यह ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञानी देश, काल व समाजों से बाहर जाकर भी मनुष्यों के व्यवहार की कुछ सामान्य तथा कुछ विशेष व्याख्याएं प्रस्तुत करते हैं।

3.7.1 सांकेतिक आदान-प्रदान

समाज और व्यक्तियों के बीच संबंधों तथा क्रिया-प्रतिक्रियाओं से अनेक सामाजिक प्रविधियों का जन्म होता है। जॉर्ज हर्बर्ट मीड (1863-1931) उन प्रभावशाली समाजशास्त्रियों में से एक है जिन्होंने सामाजिक क्षेत्र में सांकेतिक क्रिया-प्रतिक्रिया की अवधारणा को सैद्धांतिक रूप दिया। भाषा तथा उसकी सार्थकता के गर्भ से सांकेतिक अथवा प्रतीकात्मक पारस्परिकता का जन्म होता है। लोगों के पारस्परिक व्यवहार, उनकी सार्थकता तथा दूसरों की प्रतिक्रियाएं सांकेतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत आती हैं।

जिस तरह हम अपने आप को महत्व देते हैं, दूसरों को महत्व देते हैं, चीज़ों को महत्व देते हैं, उन सब के बीच एक आदान-प्रदान की स्थिति बन जाती है। भाषा और प्रतीक दोनों का प्रयोग संसार में हर चीज़ को सार्थकता प्रदान करने के लिए किया जाता है।

इरविन गोफमैन (1956:1) के अनुसार जब कोई व्यक्ति दूसरों के सामने पहुँचता है तो वे उसके बारे में अधिक से अधिक जानना चाहते हैं अथवा जो कुछ जानते हैं उसके आधार पर उसके साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं। इस प्रकार जब दो या दो से अधिक व्यक्ति आपस में मिलते हैं तो एक दूसरे के कार्यों पर उनके प्रभाव पड़ते हैं। इस क्रिया को सांकेतिक आदान -प्रदान अथवा प्रतीकात्मक पारस्परिकता कहा जाता है। प्रतीकात्मक पारस्परिकता के कारण ही समाज संपर्कों अथवा पारस्परिक क्रिया प्रक्रियाओं का घर बन जाता है। जहां लोग अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और अपने दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को अंजाम देते हैं। लोगों के परस्पर मिलते रहने के कारण समाज में विचार तथा अभिव्यक्तियां सामूहिक हो जाती हैं तथा लोग वहां पैदा होने वाले वातावरण से अछूते अथवा अलग थलग नहीं रह पाते बल्कि वे सक्रिय बने रहते हैं तथा अपने क्रियात्मक विचारों व गतिविधियों के माध्यम से अपने प्रभावों का आदान-प्रदान करते हैं तथा वातावरण पर अपनी छाप छोड़ते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान प्रतीकात्मक परस्पराकता पर निर्भर करता है जो व्यवहार को प्रभावित करने वाले सामाजिक वातावरण, सामान्य अपेक्षाओं अथवा मान्यताओं के ढांचागत संबंधों तथा संगठनात्मक विशेषताओं पर विशेष रूप से जोर देते हैं।

3.7.2 सामाजिक ढांचा एवं व्यक्तित्व

सामाजिक ढांचा और व्यक्तित्व की अवधारणा व्यापक स्तर पर घटने वाली सामाजिक घटनाओं तथा उसके व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभावों से संबंधित है। सामाजिक ढांचे का प्रभाव उसमें रहने वाले व्यक्तियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर इतनी गहराई से पड़ता है कि उनके व्यक्तित्वों पर उसकी छाप स्पष्ट दिखाई देने लगती है। सामाजिक ढांचा और व्यक्तित्व की अवधारणाएँ इसी आधार पर उत्पन्न हुई हैं क्योंकि सामाजिक संरचना, समाज के तौर तरीके, सामाजिक मान्यताएं, मिलने जुलने तथा व्यवहार करने की शैलियां समाज में रहने वाले व्यक्तियों पर इस तरह हावी हो जाती हैं कि लोगों से यह उम्मीद की जाती है कि वे उसी तरह सोचें, महसूस करें और व्यवहार करें जिस तरह उस समाज के अन्य लोग करते हैं। उदाहरण के लिए कार्ल मार्क्स यह मानता है कि "वह आर्थिक ढांचा जिसमें हम रहते हैं, हमारे सामाजिक संबंधों को और हमारे सोचने के तरीकों को भी" प्रभावित करता है।

3.7.3 सामूहिक पद्धतियां

समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान इस बात पर विशेष रूप से जोर देता है कि सामूहिक संदर्भ में सामाजिक पद्धतियां किस प्रकार काम करती हैं (रोहेल, मिल्केव लुकास 2011)।

समूह समाज का महत्वपूर्ण घटक होता है। सामाजिक विज्ञान और मनोविज्ञान दोनों सामूहिक व्यवहार का अध्ययन करने और उसे समझने के लिए अत्यधिक समय एवं ऊर्जा खर्च करते हैं। समूह के लिए कम से कम दो व्यक्ति चाहिए। मनुष्य अपना अधिकतर समय विभिन्न सामाजिक समूहों के साथ व्यतीत करते हैं - जैसे परिवार, मित्र तथा सहकर्मी आदि। कूली (1909) ने वैधान्तिक आधार पर सामाजिक समूहों को दो वर्गों में विभाजित किया है - प्राथमिक समूह तथा द्वितीय श्रेणी के समूह। पहली श्रेणी के तथा सबसे महत्त्वपूर्ण समूह वे हैं जिनमें मनुष्य आमने-सामने होते हैं तथा उनके संबंध बहुत गहरे होते हैं, जैसे परिवार तथा मित्र। दूसरी श्रेणी के समूह अपेक्षाकृत बड़े होते हैं परंतु समूह के सदस्यों के बीच संबंधों में उतनी निकटता नहीं होती। कूली के अनुसार प्राथमिक तथा द्वितीय श्रेणी के समूहों में अंतरंगता के आधार पर मौलिक अंतर विद्यमान रहता है।

समूह पद्धतियों के माध्यम से समाज के अंदर तथा बाहर लोगों के अन्तर्सम्बन्धों, व्यवहारों तथा उनकी व्यक्तिगत स्थितियों को समझने तथा उनकी व्याख्या करने के प्रयास किए जाते हैं। सामूहिक व्यवहारों का अध्ययन करते समय समाज में लोगों के स्तर तथा उनकी विभिन्न भूमिकाओं को ध्यान में अवश्य रखा जाना चाहिए। आपने अपने मित्र-समूहों में ही देखा होगा कि उनमें से कुछ बहुत बोलते हैं तथा बार-बार अपनी राय देते हैं और वे दूसरों पर हावी हो जाते हैं। जबकि कुछ चुप रहते हैं। इनके इस तरह के होने की वजह क्या है। ऐसा क्यों होता हैं? समूह के अंदर रहने वाले लोगों में शक्तियों का बंटवारा कैसे होता है? यदि एक सामाजिक मनोविज्ञानी को इसके पीछे मौजूद तार्किक कारणों का पता-लगाना हो तो वह सबसे पहले उस सामाजिक समूह के परिवेश का सिलसिलेवार अध्ययन करना चाहेगा। सामाजिक मनोविज्ञान के अनुसार तीन चरणों में तुलनात्मक रूप से इस तरह के अध्ययन को प्रस्तुत किया जा सकता है जैसा कि तालिका संख्या एक में दिखाया गया है।

तालिका 3.1: सामाजिक मनोविज्ञान के तीन परिप्रेक्ष्य

परिप्रेक्ष्य	समाज में व्यक्ति की भूमिका की स्तिथि	अध्ययन क्षेत्र
सांकेतिक आदान प्रदान	सामाजिक निर्माण की भूमिका में व्यक्ति सक्रिय रहा।	सार्थकता निर्माण प्रक्रिया।
सामाजिक ढांचा एवं व्यक्तित्व	आदान-प्रदान की प्रकृति लोगों की भूमिकाओं पर आधारित।	यह पता लगाना कि बड़े सामाजिक ढांचे व्यक्तियों पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं।
सामूहिक पद्धतियां	जब लोग सामाजिक समूहों का निर्माण करते हैं तो उनके बीच होने वाले आदान प्रदान से कुछ आधार भूत पद्धतियां उत्पन्न होती हैं।	सामूहिक सन्दर्भों में उत्पन्न होने वाली पद्धतियां।

स्रोतः रोहिल, मिल्की, और लुकास (2011:13)

बोध प्रश्न

1) सामाजिक मनोविज्ञान की पारस्परिक निर्भरता वाली प्रकृति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) जोड़े मिलाइए

स्तंभ अ	**स्तंभ ब**
i)	मैक्सवेबर सांकेतिक आदान-प्रदान
ii)	मीड प्राथमिक समूह
iii)	मर्टन समझना
iv)	कूली मध्यम श्रेणी का सिद्धांत

3.8 सामाजिक मनोविज्ञान में अनुसंधान के उद्देश्य

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि व्यक्ति के दूसरे लोगों तथा सामाजिक परिवेश के साथ संबंधों का अध्ययन करना सामाजिक मनोविज्ञान की प्राथमिकता है। सामाजिक मनोविज्ञान के अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैं:

1) निरीक्षण एवं वर्णन–सामाजिक मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि वह विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहारों का सिलसिलेवार अध्ययन करे, उनका बारीकी से निरीक्षण करे तथा फिर उसकी इस प्रकार व्याख्या करे कि उसकी सहायता से किसी ऐसे सामान्य निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके जो मनुष्यों की बड़ी आबादी पर भी लागू होता हो।

2) कारण-कार्य संबंध– वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर किए जाने वाले सामाजिक मनोविज्ञान के सभी अध्ययन अनेक प्रकार के लोगों के बीच तथा अनेक प्रकार की परिस्थितियों व परिवेशों के बीच पहुँच कर उनके कार्यों एवं व्यवहारों तथा उनके कारणों के बीच संबंधों का विश्लेषण अवश्य करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञानी सामाजिक व व्यक्तिगत स्तर पर सामाजिक परंपराओं, संस्थानों जैसे मूल्यों, संस्कृतियों आदि में आने वाले परिवर्तनों के मानव व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं। इसे कारण कार्य संबंध कहा जाता है। उदाहरण के लिए, यह जानना कि यदि आरंभिक शिक्षा निशुल्क व अनिवार्य कर दी जाए तो लड़कियों की शिक्षा के बारे में माता पिता के दृष्टिकोण में क्या परिवर्तन आएगा।

3) नए सिद्धांत को प्रस्तावित करना – सामाजिक मनोविज्ञान का एक उद्देश्य सामाजिक व्यवहार के तर्कसंगत विश्लेषण पर आधारित नए सिद्धांत को प्रस्तावित करना भी है जिससे यह समझा तथा व्याख्यायित किया जा सके कि खास स्थितियों में मनुष्य के व्यवहार में इस तरह परिवर्तन क्यों आता है।

4) अनुप्रयोग – उपर्युक्त प्रयासों से प्राप्त ज्ञान का इस्तेमाल उन समस्याओं के हल निकालने के लिए किस प्रकार किया जाए जिनका अपने दैनिक जीवन में लोग सामना करते हैं अनुप्रयोग अथवा सम्प्रयोग कहलाता है।

3.9 समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान का महत्व

सभी प्रकार के मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक विश्लेषणों के आधार पर समाजशास्त्रीय सामाजिक मनोविज्ञान समकालीन परिस्थितियों की पड़ताल करने में सक्षम है जिससे मनुष्यों तथा सामाजिक परिवेशों के एक दूसरे पर क्या और कैसे प्रभाव पड़ते हैं, इस सब की समुचित व्याख्या की जा सके। सामाजिक मनोविज्ञान परिस्थिति एवं व्यवहार के बीच दो तरफ़ा संबंधों को समझने का प्रयास करता है और उसकी व्याख्या करते हुए विभिन्न मानव समूहों अथवा समुदायों के बीच आकार लेने वाले संबंधों की भविष्यवाणी कर सकता है।

3.10 सारांश

एक स्वतंत्र विषय के रूप में सामाज विज्ञान तथा मनोविज्ञान के उद्‌गम एवं विकास की हमने व्याख्या की। दोनों विषयों की प्रकृति का विश्लेषण करते हुए समाज विज्ञान तथा मनोविज्ञान को परिभाषित भी किया। समाजशास्त्र व मनोविज्ञान के पारस्परिक संबंधों को समझने का प्रयास भी किया गया। इसके साथ ही साथ सामाजिक मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि तथा उसके अन्य विषयों के बीच अस्तित्व व स्थिति को समझने का प्रयास भी किया गया। समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन उन छात्रों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है जो समाजशास्त्र तथा उसके अन्य विषयों के साथ संबंधों को जानना चाहते हैं। मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक मनोविज्ञान के मर्मज्ञ दोनों ही सामाजिक संदर्भों का अध्ययन करते हैं जिनमें मनुष्यों के विचारों, उनकी भावनाओं,उनके व्यवहारों ने जन्म लिया है तथाजिनसे वे प्रभावित हुए हैं। समाज विज्ञान की अवधारणाएं तथा उसके सिद्धांत सामाजिक मनोविज्ञान के उपयोग में भी लाए जाते हैं।

बोध प्रश्न

1) समाजशास्त्र की परिभाषा बताइए।

2) मनोविज्ञान की परिभाषा बताइए।

3) सामाजिक मनोविज्ञान के उद्‌गम की व्याख्या कीजिए।

4) क्या समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के बीच कुछ समानताएं हैं? यदि हां, तो उनकी व्याख्या कीजिए।

5) सामाजिक मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र एवं उसकी प्रकृति की व्याख्या कीजिए।

6) सामाजिक मनोविज्ञान में किसी समाजशास्त्रीय अवधारणा का इस्तेमाल करते हुए समाज में अपनी भूमिका की व्याख्या कैसे करेंगे?

7) सामाजिक मनोविज्ञान में अनुसंधान के मुख्य उद्देश्य क्या है?

3.11 सन्दर्भ

बग्गा, क्यू. एल. एंड. सिंह, ए. (1990). एलिमेंट्स ऑफ़ जनरल साइकोलॉजी. नई दिल्ली : आर्य बुक डिपो

बैरोन, आर.ए. (1999). एसेंशिअल्स ऑफ़ साइकोलॉजी. (द्वितीय एडिशन). यू एस एः

आलीन एंड बेकन गर्वी, ए.ई. (1928). एथिक्स, साइकोलॉजी, एंड सोशियोलॉजी जर्नल ऑफ़ फिलोसोफिकल स्टडीज, टवस. 3 (12), पृ. 457-467

हरलामबोस, एम., एंड होलबोर्न, एम. (2008). सोशियोलॉजी थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स लंदन : कॉलिंस एजुकेशनल

लोवी, आर. एच. (1915). साइकोलॉजी एंड सोशियोलॉजी. अमेरिकन जर्नल ऑफ़ सोशियोलॉजी, वॉल. 21(2), पृ. 217-229.

मेर्टोन, के. रोबर्ट. (1949). सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर. न्यू यॉर्कः द फ्री प्रेस.

म्येर्स, डी.जी. (2010). सोशल साइकोलॉजी (10जी एडिशन). न्यू यॉर्कः मैक ग्रौ-हिल.

रोहाल, डी., मिल्की, एम. एंड लुकास, जे. (2011). सोशल साइकोलॉजी सोशियोलॉजिकल पर्सपेक्टिव्स. (दूसरा एडिशन). नई दिल्लीः पी एच आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.

थोइट्स, पी.ए. (1995). द इंटरप्ले बिटवीन सोशियोलॉजी एंड साइकोलॉजी. सोशल फोर्सेज,

वॉल.73 (4), पृ.1231-1243.

इकाई 4 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध*

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध

- 4.2.1 इतिहास को पारिभाषित करना
- 4.2.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध
- 4.2.3 समाजशास्त्र और इतिहास में अंतर

4.3 एक उपविधा के रूप में एतिहासिक समाजशास्त्र

4.4 सारांश

4.5 संदर्भ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न को समझने में सक्षम होंगे :

- सामाजिक शास्त्र के विधा के रूप में इतिहास की व्याख्या;
- समाजशास्त्र और इतिहास के बीच के आंतरिक संबंध;
- समाजशास्त्र और इतिहास के बीच के अंतर; तथा
- समाजशास्त्र और इतिहास के प्रतिच्छेदन के परिणाम के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र को समझना।

4.1 प्रस्तावना

यह इकाई इतिहास के साथ समाजशास्त्र के संबंध को बताती है। दोनों विषय बहुत अधिक अंतरसंबंधित हैं। समाजशास्त्र को अक्सर समाज के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। विशेष रूप से, किसी भी समाज का कोई अध्ययन अपने इतिहास या अतीत को देखे बिना पूरा किया जा सकता है। यह देखना बेहद जरूरी है कि, अतीत में समाज कैसे विकसित हुआ है? किस तरह की परिस्थितियों और उदाहरणों के माध्यम से समाज आगे बढ़ा या विकसित हुआ है? इसकी संरचना और कार्यों के बदलावों में कारकों ने क्या योगदान दिया है? इस प्रकार, किसी भी समाज, समूह या संस्थानों और अपनी वर्तमान स्थिति को समझने के लिए अपने अतीत की सराहना करने की आवश्यकता है। यह देखा जा सकता है कि समाजशास्त्र के उद्भव ने ऐतिहासिक विकास जैसे फ्रांसीसी और औद्योगिक क्रांति, शहरों के विकास और सामाजिक संस्थानों और व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता के विकास में स्वयं आकार लिया है। विभिन्न पूर्व विद्वानों या समाजशास्त्र के संस्थापकों जैसे इब्न खल्दून, आगस्त कॉम्टे, हरबर्ट स्पेंसर, मैक्स वेबर, इमाईल दुर्खीम, कार्ल मार्क्स आदि ने सामाजिक संरचना, परिवर्तन और गतिशीलता के विश्लेषण में इतिहास या ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को महत्व दिया। समाजशास्त्र और अतीत (इतिहास) एक दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त, इतिहास ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तार और विश्लेषण करने में समाजशास्त्र की मदद करता है। यह दर असल मानव जीवन के पूर्व के

*डॉ. शाहीद, मानू, हैदराबाद

सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालता है। इस संदर्भ में यह मुख्यतः दोनों विषयों के सामाजिक विकास को समझने में एक-दूसरे की मदद करता है। इसलिए, ऐतिहासिक समाजशास्त्र, सामाजिक इतिहास और सांस्कृतिक इतिहास जैसा उप-क्षेत्र समाजशास्त्र और इतिहास के टकराव के परिणाम के रूप में उभरा।

समाज की संरचना, कार्यों और परिवर्तनों के संदर्भ में अध्ययन या व्याख्या करते समय समाजशास्त्री प्रायः 'संदर्भ' के बारे में बात करते हैं। इस स्थिति में, समय और स्थान वे दो महत्वपूर्ण कारक हैं जो सामाजिक यथार्थता के प्रासंगिक पहलुओं को उत्तराधिकार में प्राप्त करता है और इसे दर्शाता है। सामाजिक यथार्थता के विकास को समझाने का समय एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि सामाजिक यथार्थता समय के साथ आकार लेती है। चूंकि, इतिहास समय या समाज के आवधिक विकास जैसे कारकों पर आधारित होता है, तो यह वास्तव में समाजशास्त्री को अधिक व्यवस्थित रूप से समाज का अध्ययन करने में मदद करता है। यह समाजशास्त्रियों को वर्तमान स्थिति और समाज के विकास संबंधी तय की गई दूरी को व्यक्त करने के लिए तर्क प्रदान करने में सहायता करता है। कॉम्टे ने अपने त्रिस्तरीय नियम में, समाज के विकास के विश्लेषण में स्पेंसर ने, आदर्श प्रकारों और शहर के विकास के विस्तार में वेबर ने और वर्ग संघर्ष और सामाजिक परिवर्तनों के अपने विश्लेषण में मार्क्स जैसे विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अपने सामाजिक विश्लेषण में ऐतिहासिक आयाम का उपयोग किया है। इस प्रकार, इतिहास और समाजशास्त्र एक-दूसरे से बहुत निकटता से संबंधित हैं। हालांकि, हम यह भी देख सकते हैं कि दोनों विषयों की प्रकृति और दृष्टिकोण में भिन्नता है, फिर भी वे कई बिंदुओं पर एक दूसरे को काटता या संकरण करता है। परिणामस्वरूप, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है ऐतिहासिक समाजशास्त्र दो विषयों के बीच आपसी अन्तःप्रतिछेदऩ के उपशाखा के रूप में उभरा है। यह इकाई समाजशास्त्र और इतिहास के बीच के इस तरह के अन्तःप्रतिछेदऩ और अंतर-संबंधों को विस्तारित करने पर केंद्रित है।

4.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध

4.2.1 इतिहास को पारिभाषित करना

इतिहास को प्रायः अतीत के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। इतिहास का अध्ययन करने वाले इतिहासकार, सामाजिक घटनाओं और विकास की ओर अग्रसर घटनाओं और परिस्थितियों के अध्ययन कारणों और प्रभावों का अध्ययन करते हैं। शब्द मल्लारी (2013), 'इतिहास', कई पारस्परिक पहलुओं में सन्निहित है; सबसे पहले, इतिहास एक अतीत है या अतीत में घटित हुई चीजें हैं, दूसरी बात, अतीत में घटित हुई घटनाओं का इतिहास बताता है। विभिन्न विचारकों ने इतिहास को पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर मानव के अतीत के अध्ययन के रूप में वर्णन किया है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस तथाकथित अतीत का अपना सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलू भी है। इतिहासकार समाज के प्रकार, उनकी संरचना, संस्कृति, सभ्यता और राजनीति मानव समाजों को देखते थे, और समय काल के साथ विकसित होता है। इतिहास समय और काल की विशेषताओं के संबंध में अपने सामाजिक डोमेन का अध्ययन करता है।

विशेष रूप से, इतिहास कई मामलों में महत्वपूर्ण है। प्रथमतः, जैसे स्मृति किसी व्यक्ति के लिए स्थान रखता है वैसे ही इतिहास समाज के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूसरा, जैसे स्मृति किसी भी व्यक्ति को पहचान और मान्यता प्रदान करता है वैसे ही इतिहास समूहों या समाज में एक समुदाय को पहचान और मान्यता प्रदान करता है। यह किसी की

जड़ों, जैसा कि यह अतीत में घटित हुआ होगा उस ऐतिहासिकता या विकास के मिलान बिन्दू की ओर इशारा करता है। सामाजिक यथार्थ को उजागर करने के लिए इतिहास की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण और निर्णायक बनाने वाले इस तरह के महत्वपूर्ण कार्यों के कारण आवश्यक हो जाती है, जहां विभिन्न विवाद उत्पन्न हो जाते है यह वहाँ भी निर्णायक स्थान रखता है।

4.2.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध

समाजशास्त्र और इतिहास एक दूसरे से अंतरसंबंधित है। समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करता है और उसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखकर वर्तमान समस्या पर ध्यान देता है। इस तरह के विश्लेषण में वर्तमान और अतीत दोनों करीब आते हैं। समाजशास्त्रियों ने अक्सर समय के साथ सामाजिक परिवर्तन, विकास और समाज के चेहरे को बदलने के लिए इतिहास का संदर्भ दिया है। इसी तरह इतिहास को अतीत की व्याख्या करने के लिए सामाजिक पहलुओं (सामाजिक अवधारणाओं) की भी आवश्यकता है। दोनों विषयों के बीच की सीमाएं तब धुंधली और उलझ जाती है जब इन्हें सामाजिक यथार्थ के जटिल जालों को सुलझाने के लिए एक संदर्भ में शामिल किया जाता है। दो विषयों के बीच सीमाओं के इस धुंधलेपन को कई विद्वानों द्वारा उपयोगी शोध प्रयासों के अवसर के रूप में देखा जाता है। 'व्हाट इज हिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखने वाले ई. एच. कार (1967) ने तर्क दिया है कि अधिक सामाजिक इतिहास और अधिक ऐतिहासिक समाजशास्त्र दोनों के लिए बेहतर होता है। उनके बीच की सीमा को आदान प्रदान के लिए खुला रखा जाना चाहिए। कई समाजशास्त्रियों ने अंतर-अनुशासनात्मक और ज्ञान उत्पादन को समृद्ध करने के दोनों विषयों के बीच लेनदेन के इस प्रस्ताव की भी वकालत की है।

सामाजिक परिवर्तन एक वास्तविकता है और यह स्वभाविक है। इतिहास समय और काल के संबंध में इसका विश्लेषण करने के लिए प्रतिबिंबित या वास्तविक तरीका दिखाता है। वास्तव में, इतिहास परिवर्तन की निरंतर चेतावनी देता रहा है भले ही तथ्य स्थायी, अनियमित और अप्रत्याशित है। इस प्रकार इतिहास सावधानीपूर्वक परिवर्तन की जांच और विश्लेषण करने के लिए संदर्भ और प्रासंगिक उपकरण का एक फ्रेम प्रदान करता है। वास्तविकता को पूरा करने के लिए समाजशास्त्र और इतिहास दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। पूर्व की घटनाओं, आंदोलनों और सामाजिक संस्थानों को समझने के लिए समाजशास्त्र, इतिहास पर निर्भर करता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि समाजशास्त्र समाज के ऐतिहासिक विकास के अध्ययन से भी संबंधित है। समाजशास्त्री, ऐतिहासिक विश्लेषण और व्याख्याओं के माध्यम से पूर्व काल की या पुरानी परंपराओं, संस्कृति, सभ्यताओं के विकास, समूहों और संस्थानों का अध्ययन करता है। विशेष रूप से, जॉन सेली ने सही ही कहा है कि समाजशास्त्र के बिना इतिहास का कोई फायदा नहीं और इतिहास के बिना समाजशास्त्र कुछ नहीं है। किसी भी सामाजिक समस्या को समग्रता और गहराई से समझने के लिए भूतकाल और वर्तमान दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

एक शिक्षण के रूप में समाजशास्त्र, इतिहास और उसके असाधारण विकास का अध्ययन करने के लिए एक विशेष समझ की प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान कर सकता है। उदाहरण के तौर पर, सामाजिक कल्पना का साधन स्पष्ट तथ्यों से परे देखने और तथ्यों के किसी भी ऐतिहासिक घटना के पहलुओं की जांच करने के लिए सामान्य तथ्यों से परे जाने में मदद कर सकता है। सामाजिक कल्पना की अवधारणा देने वाले सी राइट मिल्स (1959) ने कहा कि सामाजिक कल्पना का साधन जीवनी और इतिहास के संदर्भ में दुनिया को देखना शामिल करता है। समाजशास्त्र के अध्ययन में व्यक्तिगत जीवनी चीजों की अपनी योजनाओं में सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ से जुड़े होते हैं। ऐतिहासिक घटनाओं

के गर्भ में स्थित इस तरह के संबंधों का बुद्धिमानी खोज की जानी चाहिए। वास्तव में, मिल्स ने संरचना, जीवनी और इतिहास जैसे मानव दुनिया के तीन पहलुओं पर जोर दिया। उन्होंने मानव दुनिया के उपरोक्त तीन आयामों के मिलान बिंदु पर विश्लेषण का अपना पैटर्न विकसित किया। जो कि एक व्यवस्थित वास्तविकता के रूप में सामाजिक दुनिया के गठन और आकार के संदर्भ में सामाजिक संरचना पर केंद्रित है। उन्होंने सामाजिक व्यवहार के विशेष पैटर्न के आकार के रूप में मानव व्यवहार को आगे बढ़ाया। चीजों की अपनी योजना में, इतिहास ने धारणा में जोड़ा कि सामाजिक संरचनाओं का आकार और गठन हमेशा समय और स्थान के लिए विशिष्ट होता है क्योंकि वे स्वयं परिवर्तन के अधीन होते हैं इसलिए एक अवधि से दूसरे अवधि में भिन्न होता है। अंत में, जीवनी इस तरह की सभी सामाजिक संरचना को जोड़ती है और सामाजिक अनुभवों के साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने के व्यक्तिगत अनुभवों के साथ बदलती है और समाज के सदस्य के रूप में उनकी क्रिया कैसे आकार और पुनः आकार प्राप्त करती है। इस प्रकार से, इतिहास किसी भी सामाजिक समस्या का पता लगाने के लिए उसके संदर्भ को समझने और इस समस्या को पूरी तरह समझने में मदद कर सकता है। यह देखा जा सकता है कि किसी समस्या को समझने के लिए केवल एक शैक्षणिक दृष्टिकोण या संदर्भ के फ्रेम से किसी समस्या का विस्तृत विश्लेषण प्राप्त करने में मदद नहीं मिल सकती है बल्कि समाजशास्त्र और इतिहास दोनों की कई समस्याओं का वास्तविक उत्तर सामाजिक इतिहास में और/या ऐतिहासिक समाजशास्त्र में प्राप्त हो सकता है।

आगस्त कॉम्टे का समाजशास्त्र की धारणा समाजशास्त्र और समाज के विकास के अपने विश्लेषण में इतिहास को शामिल करता है। वह विभिन्न ऐतिहासिक चरणों के माध्यम से मानवता के विकास के कारणों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके अलावा, टिली (2001) देखते हैं कि, कार्ल मार्क्स का कैपिटल, मैक्स वेबर का इकोनोमी एंड सोसाइटी या फर्डिनेंड टॉनीज का 'गेमाइनशाफ्ट और गेसेलस्काफ्ट ने अपने सामाजिक विश्लेषण को समृद्ध करने के लिए व्यापक रूप से ऐतिहासिक आयाम का उपयोग किया है। इस तरह के विश्लेषण से पता चलता है कि एक समस्या का पता लगाने और इसके महत्व की जांच करने के लिए समाजशास्त्र इतिहास (उदाहरण के लिए वेबर का विवरण समाजशास्त्रियों द्वारा अपनी सामाजिक व्याख्या विकसित करने के लिए तैयार किए जाने वाले उदाहरण का एक आदर्श प्रकार है) की मदद लेता है। इसके अलावा, इतिहास में समाजशास्त्र को पेश करने के लिए कई चीजें हैं। मिसाल के तौर पर, उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोत समाजशास्त्रियों को समाज, विश्लेषण और गतिशीलता पर विश्लेषण के लिए डेटा का एक बड़ा हिस्सा प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, 1700 के दशक के उत्तरार्ध और 1800 के दशक के दौरान यूरोप में सामाजिक उथल-पुथल ने विद्वानों को समाज का अध्ययन करने और सामाजिक विकास के पैटर्न को समझने के लिए प्रेरित किया। इस प्रभाव के लिए, पर्याप्त उदाहरण हैं जो इतिहास के साथ समाजशास्त्र के संबंध प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, कॉम्टे, स्पेंसर, मार्क्स, दुर्खाइम, वेबर, सिममेल, पारेतो, पार्सन्स और समकालीन समाजशास्त्री जैसे हबर्मास, मैनहेम, वालेंस्टीन, कास्ल्स इत्यादि जैसे कई समाजशास्त्रियों ने अपने सामाजिक विश्लेषण में ऐतिहासिक आयाम का उपयोग किया। उन्होंने आधुनिकता, विकास के मॉडल और शहरी समुदायों की समस्याओं पर अधिक जोर दिया। समाजशास्त्र अपने शुरूआती समय में और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में वर्तमान और अतीत दोनों में रुचि रखता था। अवधारणाओं को परिभाषित करने और संदर्भ में इसे व्यवस्थित करने के लिए इसे अनिवार्य रूप से ऐतिहासिक घटना के रूप में ऐतिहासिक घटना मिली। सामाजिक अवधारणाएं ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण घटनाओं के कारण व्याख्या में भी मदद करती हैं।

19वीं और 20वीं शताब्दी के ऐतिहासिक विकास में समाजशास्त्र के सिद्धांतों का विकास दर्शन, ज्ञान-मीमांसा और प्रगतिशील सोच के स्तर पर देखा गया है। विशेष रूप से,

सामाजिक सिद्धांत बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक माहौल का उत्पाद रहा है जिसके भीतर वे विकसित हुए थे। उदाहरण के लिए, ज्ञानोदय उल्लेखनीय बौद्धिक विकास का समय था। इस अवधि में कुछ महत्वपूर्ण विचार और सामाजिक विचार उभरे। नव विकसित इन विचारों और चिंतन ने पुराने विचारों को बदल दिया। इस अवधि ने तर्क के कारण, तर्कसंगतता, वैज्ञानिक तरीकों या अनुभवजन्य शोध के माध्यम से समझे जा सकने वाले समाज को जन्म दिया। इसी तरह, 1789 में फ्रांसीसी क्रांति ने एक जगह बनाई जब मनुष्य के सार्वभौमिक अधिकारों ने सामाजिक निर्माण के आवश्यक तत्वों के रूप में स्वीकार किया। स्वतंत्रता, समानता, राष्ट्रवाद आदि जैसे नए विचारों ने आकार लिया। समाज की यह प्रभावित संरचना और विचारधाराओं और सामाजिक-राजनीतिक प्रतियोगिताओं के नए समूह का निर्माण किया। कई पहले समाजशास्त्री इस तरह के युग काल के उत्पाद थे और प्रगतिशील विचारों की परंपरा को आगे बढ़ाते थे। सेंट साइमन फ्रांसीसी क्रांति से सीधे प्रभावित था, जबकि कॉम्टे फ्रांसीसी क्रांति के बाद में रहते थे। इन पूर्व समाजशास्त्रियों ने चल रहे सामाजिक-सांस्कृतिक उथल-पुथल और मानवीय मामलों को समझने और परीक्षण करने के विचार दिए। उदाहरण के लिए, कॉम्टे (1865) नैतिक और सामाजिक दर्शन, इतिहास के दर्शन और महाद्वीप और विज्ञान के विशिष्ट तरीकों को एक साथ लाता है। कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर, जिन्हें समाजशास्त्र के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है, उन्होंने अपने सामाजिक विश्लेषण में इतिहास का उपयोग किया है। मार्क्स का सामाजिक परिवर्तन और ऐतिहासिक भौतिकवाद का विश्लेषण इसका उदाहरण है। इसी तरह, वेबर ने इतिहास और उसके विश्लेषण के गर्भ में तर्कसंगतता, आधुनिकता, पूंजीवाद, धर्मनिरपेक्ष समाज, शहर और आदर्श प्रकारों जैसे उनकी अवधारणाओं का विस्तार किया है। वेबर ने अपने कार्य 'इकोनॉमी एंड सोसाइटी' में जैसा कि पहले भी बताया गया है, ऐतिहासिक व्याख्या को ऐतिहासिक घटना के मूल और परिणामों के बारे में धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के अपने प्रस्तावों को विस्तारित करने के लिए ऐतिहासिक व्याख्याओं को सामने लाता है।

समाजशास्त्र के क्षेत्र के कई बुद्धिजीवियों ने सामाजिक इतिहास के विकास की दिशा में काम किया है। विशेष रूप से, 19वीं और 20वीं शताब्दी के अंत में जर्मन भाषी देशों और अन्य देशों के कुछ इतिहासकार, जिन्होंने इस शिक्षण के पारंपरिक मार्गों को विचलित करने की हिम्मत की, धीरे-धीरे सामाजिक इतिहास के विकास में योगदान देने लगे। उदाहरण के लिए, जे एच टर्नर ने सभ्यता और जंगल के बीच की सीमाओं के संदर्भ में अमेरिका की स्थिति की व्याख्या की। सी. ए. दाढ़ी ने अमेरिकी गृहयुद्ध का औद्योगिक उत्तर और कृषक दक्षिण के बीच संघर्ष के रूप में व्याख्या और विश्लेषण किया। इसी प्रकार, बेल्जियम हेनरी पिरेन ने यूरोप का एक सामाजिक-आर्थिक इतिहास विकसित किया। डच विद्वान जॉन हुईज़िंग मध्य युग के अंत में अपना काम समर्पित किया और सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अलावा, संक्षेप में ठहराव के बाद, 1920 के दशक में इतिहास में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। यह बदलाव वास्तव में एनाल्स स्कूल से जुड़ा हुआ था, जिसे दुर्खिम के समाजशास्त्र से प्रभावित स्ट्रैसबर्ग विश्वविद्यालय के लुसीन फरवरी (1878-1956) और मार्क ब्लोच (1856-1944) के दो प्रसिद्ध प्रोफेसरों द्वारा शुरू किया गया था। उन्होंने इतिहास के व्यापक अध्ययन की वकालत की थी। इसके अलावा, समय के साथ-साथ, समाजशास्त्र ने भी अपने दृष्टिकोण और प्रणाली संबंधी (मेथडलाजिकल) परंपराओं में वृद्धि की। यद्यपि 20वीं शताब्दी के दौरान समाजशास्त्र और इतिहास थोड़ा अलग हो गए, लेकिन एक पूर्ण अलगाव कभी नहीं हुआ। यह मुख्य रूप से इस कारण से था कि एक नया और रोचक शोध अभिविन्यास अर्थात् ऐतिहासिक समाजशास्त्र ने आकार लिया और धीरे-धीरे सामाजिक अध्ययन में एक प्रमुख स्थान प्राप्त किया। अंततः इतिहास ने अतीत के सामाजिक विश्लेषण और वर्तमान के लिए प्रासंगिक प्रासंगिकता को साबित

करने में मदद की। यदि कोई सामाजिक सिद्धांतों में अपनी जड़ों की तलाश करता है, तो पार्सन्स की संरचनात्मक-कार्यात्मकता को एक महत्वपूर्ण प्रेरक कारक माना जा सकता है जो समाजशास्त्र और इतिहास को एक स्थान पर लाता है। इसके अलावा, 1957 में रॉबर्ट नेली बेलह ने 'ताकीगावा धर्म' नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसने विरोधवादी नैतिकता के जापानी समकक्ष को प्रकट किया। 1959 में नील जे स्मेल्सर ने अपनी पुस्तक 'सोशल चेंज इन इंडस्ट्रियल रेवोल्यूशन' में अंग्रेजी औद्योगिक क्रांति के दौरान कपास उद्योग के विकास की जांच करके सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति की व्याख्या करने का प्रयास किया। इसी तरह, 1960 के दशक में टैल्कॉट पार्सन्स ने सोसाइटीजः इवोल्यूशनरी एंड तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य (1971) और 'द सिस्टम ऑफ मॉडर्न सोसाइटीज' (1971बी) जैसे कार्यों में कार्यात्मक भेदभाव के माध्यम से प्रणाली की अनुकूली क्षमता बढ़ाने की अवधारणा के आधार पर सामाजिक विकास का सिद्धांत विकसित किया।। इसके अलावा, 1970 के दशक के मध्य में, नॉरबर्ट एलियास ने सभ्यता के सिद्धांत पर काम किया जिसमें उन्होंने व्यक्तित्व, व्यवहार और राज्य के गठन के सिद्धांत में ऐतिहासिक परिवर्तनों को व्यापक रूप से शामिल किया।

ऐसा कहा जाता है कि 1946 से 1960 के दशक संभवतः समाजशास्त्र का स्वर्ण युग था, जब इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्पष्ट लग कर रहा था, तो इसका भविष्य प्रत्याशित दिखाई देता था और इसके बौद्धिक अगुओं ने क्या करना है और कैसे करना है इसमें सुनिश्चित थे। हालांकि, बदलते समय सामाजिक जरूरतों और 1960 के बाद वैश्वीकरण ने समग्र सामाजिक संभाषण, एक दुसरे से जुड़ी हुई दुनिया, नेटवर्क समाज, सूचना क्रांति और सांस्कृतिक अध्ययनों के उद्भव ने समाजशास्त्र के संदर्भ को बदल दिया है। आधुनिकता अतीत का विषय बन गया। पिछले कुछ दशकों में समाजशास्त्री 'पोस्ट' पर बहुत अधिक चिन्तित हो गए है जैसे कि उत्तर-औद्योगिकीकरण, उत्तर-उपनिवेशवाद, उत्तर प्रत्यक्षवाद उत्तर संरचनावाद। हबर्मस ने (कार्य और सार्वजनिक क्षेत्र के बारे में बताया), फूको ने (आधुनिकता और जेल प्रणाली), एंथनी गिडेंस ने (आधुनिकता) जैसे विभिन्न समाजशास्त्री ने अपने सामाजिक विश्लेषण को विस्तारित करने के लिए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर काम किया और इसका उपयोग किया।

4.2.3 समाजशास्त्र और इतिहास में अंतर

समाजशास्त्र और इतिहास के बीच अंतर हालांकि सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में समाजशास्त्र और इतिहास दोनों ही दो भिन्न बौद्धिक शैक्षणिक विषय है, दोनों ही अपनी शैक्षणिक पद्धतियों, दृष्टिकोणों और उद्देशों में भिन्नता रखते हैं। जॉन एच् गोल्डथोर्पे (1991) जिन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज, लन्दन में बीसवीं शताब्दी के मध्य में इतिहास का अध्ययन किया, समाजशास्त्र और इतिहास दोनों के अनुसंधान दृष्टिकोणों की तुलना करते हैं। उनका दावा है की समाजशास्त्र और इतिहास दोनों ही अपने वर्तमान और अतीत के अभिविन्यास में भिन्न हैं। इतिहासकार समय-स्थान को स्थानबद्ध कर अपने निष्कर्षों पर ज़ोर देते हैं जबकि समाजशास्त्री स्थान-समय के आयामों से ऊपर उठकर अपनी समझ पर विश्वास करते हैं। अतः समाजशास्त्र और इतिहास में बड़ा अंतर विश्लेषण के लिए रखे गए तथ्य और साक्ष्य की प्रकृति से सम्बंधित है। समाजशास्त्री अतीत और प्राथमिक तथ्यों में अधिक दिलचस्पी रखते हैं जबकि इतिहासकार अतीत में दिलचस्पी रखते हैं और संग्रहित माध्यमिक तथ्यों और अतीत की घटनाओं की खोज करते हैं। एक समृद्ध सामाजिक विश्लेषण के लिए, अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि समाजशास्त्रियों को ऐतिहासिक रूप से अवगत होना चाहिये- उन्हें ऐतिहासिक परिस्थितियों और सीमाओं से भी अवगत होना चाहिए जो उनके सामाजिक मुद्दों के विश्लेषण की सुचना देता हो। गोल्डथोर्पे (1991) का तर्क है कि इतिहास

और समाजशास्त्र महत्वपूर्ण रूप से दो भिन्न बौद्धिक उद्धम हैं। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि इतिहास और समाजशास्त्र को निष्कर्ष के तहत एक मानना गलत है। इतिहास किसी भी अर्थ में समाजशास्त्र की तरह प्राकृतिक विज्ञान नहीं है। यह रंगहीन इकाइयों की तलाश नहीं करता। ऐसा कहा जाता है कि इतिहास तथ्यों को पुनः प्रस्तुत करता है जबकि प्राकृतिक विज्ञान तथ्यों की व्याख्या करता है। इतिहासकार ठोस तथ्यों को इकट्ठा करते हैं और इन तथ्यों को एक अनूठी घटना के रूप में पुनः प्रस्तुत करते है जबकि समजशास्त्री विशिष्ट तथ्यों को खोजने और सूत्रबद्ध करने के लिए प्रासंगिक और विभिन्न श्रेणियों में परिकल्पना, वर्गीकृत और व्यवस्थित डेटा पर कार्य करते हैं।

समाजशास्त्र और इतिहासः भिन्नताएं

सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में समाजशास्त्र और इतिहास दो अलग अनुशासन है जो पद्धतियों, दृष्टिकोणों और उद्देश्यों में भिन्न है। समाजशास्त्रियों में संख्याओं की और इतिहासकारों में तिथियों और शब्दों की लालसा होती है। समाजशास्त्री नियमों को मान्यता देते हैं और विविद्धता को अनदेखा करते हैं जबकि इतिहासकार व्यक्तियों और विशिष्टता पर बल देते हैं। समाजशास्त्री अवधारणाओं के प्रकार विज्ञान को बनाने के लिए सामान्यीकृत, एकरूपता और प्रक्रियाओं की तलाश करते हैं जो इतिहासकारों द्वारा किसी विशेष मामले में प्रस्तावित वास्तविक तथ्यों से अलग होता है। इतिहास को समाज के मूर्त और विवरणात्मक विज्ञान के रूप में देखा जाता है। इतिहास सामाजिक अतीत की एक तस्वीर को बनाने का प्रयास करता है। दूसरी तरफ, समाजशास्त्र को समाज का सारांश और सैद्धांतिक विज्ञान का एक रूप कहा जाता है। इस विषय में समाजशास्त्र का विस्तार इतिहास से व्यापक माना जाता है।

यह सत्य है कि समाजशास्त्र और इतिहास एक ही भाषा नहीं बोलते। दोनों ही व्यवाहारिक रूप से कई मायनों में एक दूसरे से भिन्न मत रखते है। विशेषकर, हमें इसे केवल दो भिन्न व्यवसाय मात्र के रूप में नहीं देखना चाहिए, अपितु यह एक संरचना है जिसकी भाषा, विचार की शैली और मूल्य भिन्न है जो शिक्षा और प्रशिक्षण में भिन्नता के द्वारा आकार पाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि समाजशास्त्रियों में संख्याओं की और इतिहासकारों में तिथियों और शब्दों की लालसा होती है; समाजशास्त्री नियमों को मान्यता देते हैं और विविद्धता को अनदेखा करते हैं जबकि इतिहासकार व्यक्तियों और विशिष्टता पर बल देते हैं। इसके आलाव, समाजशास्त्र इतिहास से इन अर्थों में भिन्न है कि समाजशास्त्री अवधारणाओं के प्रकार विज्ञान को बनाने के लिए सामान्यीकृत, एकरूपता और प्रक्रियाओं की तलाश करते हैं जो इतिहासकारों द्वारा किसी विशेष मामले में प्रस्तावित वास्तविक तथ्यों से अलग होता है। अनेक विद्वानों ने इतिहास को समाज के मूर्त और विवरणात्मक विज्ञान का एक रूप कहा है। इतिहास सामाजिक अतीत की एक तस्वीर को बनाने का प्रयास करता है। दूसरी तरफ, समाजशास्त्र को समाज का सारांश और सैद्धांतिक विज्ञान का एक रूप कहा जाता है। इस विषय में समाजशास्त्र का विस्तार इतिहास से व्यापक माना जाता है। समाजशास्त्र न केवल सामाजिक वर्तमान से अपितु यह सामाजिक अतीत से भी सम्बंधित होता है। अतः समाजशास्त्र मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करता है; यह अक्सर व्यापक उद्देश्य को लक्षित करता है और समान्यीकरण को उत्पन्न करने के लिए समय और स्थान की सीमाओं का अतिक्रमन कर सैद्धांतिक कथनों में स्थापित करता है।

बोध प्रश्न 1

1) समाजशास्त्र और इतिहास के बीच परस्पर संबंध की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाजशास्त्र और इतिहास के बीच अंतर की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित समाजशास्त्रियों में से किसने अपने समाजशास्त्रिय विश्लेषण में इतिहास का प्रयोग किया?

क) अगस्त कॉम्ते

ख) एमिली डर्कहेम

ग) कार्ल मार्क्स

घ) उपरोक्त सभी

4.3 एक उप संकाय के रूप में एतिहासिक समाजशास्त्र

ऐतिहासिक समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की एक शाखा है। यह समाजशास्त्र और इतिहास के मिलान बिंदु के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ। दोनों संकाय सामान्य विषयों पर व्याख्या हेतु अवधारणा और सैद्धांतिक आधार के रूप में एक दूसरे के समीप आयी है जो दोनों की क्षेत्रीय सीमाओं को छूती है। सीमाओं को पार करने की इस प्रक्रिया ने ऐतिहासिक समाजशास्त्र नमक एक उप-क्षेत्र के विकास को जन्म दिया। ऐतिहासिक समाजशास्त्र अपने विश्लेषण में इतिहास का उपयोग करता है। इसके अतिरिक्त, यह ध्यान देने योग्य है कि परिवार में परिवर्तन और विकास के मुद्दों, रिश्तेदारी, प्रवास और दहेज प्रणाली के मुद्दों इत्यादि सभी का एक अतीत है जिसका प्रभाव उनकी वर्तमान स्थिति पर पड़ता है। यह अतीत समस्या की वर्तमान स्थिति या विचाराधीन मुद्दों को समझने के महत्वपूर्ण संकेत रखता है। ऐतिहासिक समाजशास्त्र इस बात

ऐतिहासिक समाजशास्त्र

ऐतिहासिक समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की एक शाखा है। यह बीसवीं सदी के दौरान मुख्य रूप से समाजशास्त्र और इतिहास के टकराव के परिणामस्वरूप उभरा। समाजशास्त्र के एक उप-क्षेत्र के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र अनुशासन को दो महत्वपूर्ण योगदान देगा। पहला, यह सामाजिक विश्लेषण को लाभदायक रूप से एतिहासिक रूप दे सकता है यह लाभदायक रूप में सामाजिक विश्लेषणों का ऐतिहासिकरण, ऐतिहासिक दृष्टि से किन्ही सामाजिक विश्लेषणों को स्थापित करने में मदद कर सकता है। दूसरा, यह महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने में मदद करेगा जिन्हें गंभीर रूप से ऐतिहासिक विश्लेषणों की आवश्यकता है परन्तु जो किन्ही कारणों से सामाजिक विश्लेषणों में अन्देखे या उपेक्षित रह गए हैं।

में दिलचस्पी रखता है कि लोग, समुदाय और समाज बदलते समय के साथ कैसे बदल रहे हैं, उन्होंने स्वयं को समकालीन आधुनिक समाजों में कैसे परिणत किया? साम्राज्यवाद, पुनर्जागरण, फ्रांसीसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति जैसे महान परिवर्तनों ने किस प्रकार आधुनिक दुनिया को आकार दिया? जैसा कि पहले भी चर्चा की गई है अनेक प्रारंभिक समाजशास्त्रियों जैसे काल्डन, कॉम्टे, स्पेंसर, वेबर, डर्कहेम साइमन इत्यादि ने इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, मैक्स वेबर ने अपने अध्ययन, 'दा सिटी' जो बहुत पहले 1921 में प्रकाशित हुआ, के अंतर्गत ऐतिहासिक प्रतिमान का प्रयोग किया और आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के वाहक और आधुनिक राष्ट्र-राज्य के अग्रदूत के रूप में शहर की भूमिका की जांच की। इतिहास की घटनाओं पर अपने सैद्धांतिक कथनों के सत्यापन में पूर्व समाजशास्त्रियों के समालोचनात्मक योगदान के आलावा, यह कहा जाता है कि फ्रांस में जॉर्ज बेलेंदियर और अमरीका में रोबर्ट निस्बेट ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की प्रासंगिकता की ओर ध्यान आकर्षित कराने वाले अग्रणीय समाजशास्त्री थे। एस एन एसेंस्तेड, बी मूर, टी स्कोक्पेल, सी टिली, जे हबेर्मस, एम कैस्टाल्स, ए जी फ्रेंक, आई वालेंस्टीन सभी ने आधुनिक विश्व में विकास के प्रतिमानों पर अपने सामाजिक विश्लेषण और सैद्धांतिक विचारों में इतिहास को प्रमुख स्थान दिया।

ऐसा माना जाता है कि ऐतिहासिक समाजशास्त्र कहे जाने वाले भिन्न उप-क्षेत्र का विचार बीसवीं शताब्दी के आस-पास मूर्त हुआ। यह वर्तमान के प्रत्यक्ष अवलोकन और भूतकाल के अप्रत्यक्ष अवलोकन से आने वाले प्रमाणों के बीच समाजशास्त्री द्वारा प्रारंभ किये गए भेद के कारण प्रारंभिक रूप से विकसित होना शुरू हुआ। ऐतिहासिक समाजशास्त्रियों ने वास्तव में अतीत से वर्तमान के संबंध को समझना प्रारंभ कर दिया था। जन्य कारणों के संबंध का पता लगाना या प्रसंग के संबंध में समस्या को खोजना ना केवल समझने के लिए बल्कि समकालीन विकास की पूरी तरह से जाँच करने के लिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है। मिसाल के तोर पर जर्गन हेबरमास ने अपने कार्य 'थ्योरी ऑफ़ कम्युनिकेटिव एक्सन' में आधुनिक इतिहास से सम्बंधित विकासों की व्याख्या की है। उन्होंने आधुनिकीकरण, संचार, तर्कसंगतता और मानव स्वतन्त्रता से सम्बंधित विकासों पर मार्क्स, वेबर, डर्कहेम, पार्सन्स व अन्य जैसे पूर्व समाजशास्त्रियों के काम का आलोचनात्मक अध्ययन किया है। इसी प्रकार, मैनुअल कास्टल्स ने अपने प्रसिद्ध कार्य 'दा इनफोर्मेशन ऐज' में ज़रूरतों, विकल्पों और चुनौतियों को जिसका सामना मानवता आज कर रही है को समझने के लिए व्यापक रूप से आधुनिक दुनिया में बदलती सुचना प्रणाली और पहचान की जांच की। इसके अलावा, समीर अमीन (1989), जेम्स एम ब्लांट (1993), जैक गुडी (1996), आंद्रे गंदर फ्रैंक (1998), जैसे कई विद्वानों ने ऐतिहासिक या राजनीतिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में काम किया। उन्होंने मानवीय सामाजिक विचारों और मामलों से प्राप्त यूरोप के विशेषाधिकार प्राप्त स्थान से प्रतिस्पर्धा के लिए आधुनिक दुनिया के उद्भव के इतिहास की खोज की। उन्होंने अपरिहार्य रूप से इस विचार को चुनौती दी कि आधुनिकता यूरोप में विकसित हुई और उसके बाद दुनिया के अन्य हिस्सों में फ़ैल गई। ऐतिहासिक समाजशास्त्र के प्रभाव क्षेत्र के भीतर, उन्होंने समय और स्थान के द्वैतवाद से संघर्ष किया, यूरोप और अमरीका से परे देशज लोगों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को उबारने के लिए यूरोप केन्द्रित धारणा के विचार पर विवाद किया।

ऐतिहासिक समाजशास्त्र जो की किसी समस्या को समझने के लिए अनिवार्य रूप से इतिहास में उतरता है ज्ञान के सृजन की वर्गावली को विस्तृत बनाने की लिए अंतरविषयी विद्दवत्ता के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाजशास्त्र के उप-क्षेत्र के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र इस अनुशासन में दो प्रमुख योगदान देने की संभावना रखता है। पहला, ऐतिहासिक रूप से किसी भी सामाजिक विश्लेषणों को स्थापित करने में मदद करने के लिए यह लाभपूर्वक सामाजिक विश्लेषणों को ऐतिहासिक बना सकता है। यह न केवल

विश्लेषणों के महत्व को बढ़ाएगा अपितु उनके समय और स्थान की सीमाओं को निर्धारित कर संदर्भतः सामाजिक विश्लेषणों को आधार प्रदान करेगा और इस प्रकार से अन्य आनुभविक समान्यीकरण के साथ भी समान रूप से संलग्न होगा। दूसरा, अति व्यापक ऐतिहासिक समाजशास्त्र उन महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान खींचने में मदद करेगा जिन्हें ऐतिहासिक विश्लेषण की गंभीर आवश्यकता है परन्तु किन्ही कारणों से सामाजिक विश्लेषणों में सदा अनदेखा या उपेक्षित ही रहा। अनेक समाजशास्त्री इस बात की वकालत करते हैं कि इतिहास को समाजशास्त्रियों के सामाजिक विश्लेषणों या संवेदनशीलताओं की व्याख्या ना केवल सामाजिक उद्भव, संस्कृति और सभ्यता में बदलाव या विकास संबंधी परम्परा का अध्ययन करते समय करनी चाहिए अपितु तब करनी चाहिए जब हम स्थायित्व या रोजमर्रा के जीवन की वास्तविकता का अध्ययन कर रहें हों।

बोध प्रश्न 2

1) समाजशास्त्र और इतिहास के बीच परस्पर टकराव के परिणाम के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) वे कौन से प्रमुख समाजशास्त्री है जिन्होंने ऐतिहासिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में काम किया? चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्न में से किसने अमरीका में ऐतिहासिक समाजशास्त्र के विकास को प्रेरित किया?

क) जॉर्ज बेलेंदियर

ख) रोबर्ट निस्बेट

ग) मैक्स वेबर

घ) कार्ल मार्क्स

4.4 सारांश

इस इकाई में, हमने समाजशास्त्र के साथ इतिहास और उसके अंतर्संबंध के अर्थ और परिभाषा की जांच की। हमने देखा कि समाजशास्त्र और इतिहास किस प्रकार परस्पर जुड़े हुए हैं और वास्तव में एक दूसरे पर निर्भर हैं? संस्कृति और संस्थाओं का इतिहास भूतपूर्व समाज, उसकी गतिविधियों और विकास को समझने में सहायक हैं। इसी प्रकार, समाजशास्त्र अपने उपकरणों जैसे सामाजिक कल्पना, आदर्श प्रकार और कई अन्य भी उपलब्ध कराता है, जिससे पिछली सामाजिक घटनाओं को समझने और अवधारणा बनाने में मदद मिलती है। हमने यह भी देखा कि समाजशास्त्र वर्तमान से कैसे संबंधित है, परन्तु यह अपने संदर्भ को भूतकाल में स्थापित करता है। यह देखा गया है कि दोनों विषयों को एक मुद्दे का पूरा आंकलन करने के लिए एक दूसरे की आवश्यकता होती है। समाजशास्त्र के लिए यह आवश्यक है कि संदर्भ को समझने और इसके विश्लेषणों में महत्वपूर्ण मूल्य जोड़ने के लिए अतीत में झाँके। इसी तरह इतिहास भी ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करते समय सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को ध्यान में रखता है। इतिहासकार को ऐतिहासिक घटनाओं को विस्तृत रूप से लिखने और समझाने के लिए सामाजिक पृष्ठभूमि और कई बार समाजशास्त्रीय अवधारणाओं की भी आवश्यकता होती है।

इस इकाई में, हमने समाजशास्त्र और इतिहास के बीच भेदों का मूल्यांकन भी किया है। यह वर्णित है कि समाजशास्त्र वर्तमान के साथ अधिक सम्बंधित है जबकि इतिहास अतीत के साथ। इसी के अनुसार इनके दृष्टिकोण और उद्देश्य भी भिन्न होते हैं। इसके अलावा यह भी देखा गया है कि दोनों विषयों के बीच के संबंध को कई मिथकों और भ्रांत धारणाओं से भी चिंहित किया गया है। उदाहरण के लिए, इतिहासकारों द्वारा समाजशास्त्रियों को ऐसे पेशेवरों के रूप में माना जाता है जिनकी अमूर्त विशिष्ट शब्दावली विशेष समय और स्थानों के प्रति संवेदनशीलता का अभाव रखती है। दूसरी तरफ़, इतिहासकारों को अक्सर सूचनाओं के संग्रहकर्ता मात्र के रूप में देखा जाता है जो आवश्यक शिष्टता और पद्धतिगत सूक्ष्मता के साथ अपने ज्ञान का विश्लेषण करने में असमर्थ हैं। कहा जाता है कि इतिहास अधिक यथार्थपूर्ण और वर्णनात्मक होना चाहिए जबकि समाजशास्त्र को अधिक भावात्मक और सैद्धांतिक विज्ञान माना जाता है। हालांकि एक दूसरे से निकट संबंध होने के बावजूद भी ऐसा कहा जाता है कि ये दोनों विषय अपने उद्देश्यों, वैश्विक विचारों, दृष्टिकोणों और पद्धतियों के संदर्भ में दोनों भिन्न बौद्धिक उद्धम हैं।

हमने यह भी उल्लेखित किया है कि दोनों विषयों के परस्पर टकराव के परिणामस्वरूप ऐतिहासिक समाजशास्त्र कैसे उभरा है। यह भी उल्लेखित किया गया है कि समाजशास्त्र की शाखा के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र ने एक अंतरविषयी विद्वत्ता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रमुख अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र के प्रारंभ से कई समाजशास्त्री, जैसे मार्क्स, वेबर, डर्कहेम उसके बाद कास्टेलस, अमीन, फ्रैंक और ब्लॉट जैसा की उल्लेख किया गया है ने इस क्षेत्र में विस्तृत योगदान दिया है। संक्षेप में, समाजशास्त्र और इतिहास दोनों ही, हालांकि सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में दोनों भिन्न विषय होने के बावजूद परस्पर बहुत अधिक जुड़े हुए हैं और अध्ययन के क्षेत्र में एक दूसरे के पूरक भी हैं।

4.5 संदर्भ

एब्बट, ए. (1991). हिस्ट्री एंड सोशियोलॉजीः दा लोस्ट सिंथेसिस, सोशिअल साइंस हिस्ट्री, वॉल्यूम. 15, नंबर 2, पृ. 201-238

कार, ई. एच (1967). व्हाट इज़ हिस्ट्री? लंडन, विंटेज।

कॉम्टे, अगस्ते. (1865) जर्नल व्यूह ऑफ़ पोज़िटिविज्म. अनुवाद. जे. एच. ब्रिजिज़. लंडन, ट्रबनर एंड को द्य

गिन्सबर्ग एम. (1932) हिस्ट्री एंड सोशियोलॉजी, फिलोसोफी, वॉल्यूम. 7, नंबर 28, पृ. 431-445

गोल्द्थोर्पे जॉन एच. (1991). दा यूज़िज़ ऑफ़ हिस्ट्री इन सोशियोलॉजीः रिफ्लैक्शन्स ऑन सम रीसेंट तेंड़ेंसी, दा ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ सोशियोलॉजी वॉल्यूम. 42, नंबर 2 (जून., 1991), प्रष्ठ 211-230

ग्रिफिन, एल. जे. (1995) हाऊ इज़ सोशियोलॉजी इन्फॉर्मड बाय हिस्ट्री? सोशियल फोर्सिज़, वॉल्यूम. 73, नंबर 4, प्रष्ठ 1245-1254

मल्लारी, ए. ए. टी. (2013). ब्रिजिंग हिस्ट्री एंड सोशियोलॉजी इन स्टडिंग कोलोनियल प्रिज़न्सः नोट्स एंड रिफ्लेक्षंस, फिलिपींस सोशियोलॉजीकल रिव्यू, वॉल्यूम. 61, नंबर 1, सोशियोलॉजी एंड इंटरडिसिप्लिनेरी, पृ. 43-54.

मिल्स, सी. राइट (1959). दा सोशियोलॉजीकल इमैजिनेशन, न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

इस्टराइकर, एमिल. (1978). मार्क्स कम्पेरेटिव हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी, डाईलेक्टिकल अन्थ्रोपोलोजी, वॉल्यूम. 3, नंबर 2, पृ. 139-155

टिली, चाल्स (2001). हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी, इन इंटर्नेशनल इनसाईक्लोपीडिया ऑफ़ दा बीहेवियोरल एंड सोशल साइन्सेज़, एम्स्टर्डमः एल्सिविएर. वॉल्यूम. 10, पृ. 6753–6757.

इकाई 5 समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध

- 5.2.1 समाजशास्त्र की परिभाषा
- 5.2.2 अर्थशास्त्र की परिभाषा
- 5.2.3 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में समानता
- 5.2.4 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में अंतर
- 5.2.5 विभिन्न अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका समाजशास्त्र से संबंध
- 5.2.6 विभिन्न समाजशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका अर्थशास्त्र से सम्बन्ध

5.3 आर्थिक समाजशास्त्रः समाजशास्त्र की एक उपशाखा

- 5.3.1 आर्थिक समाजशास्त्र का इतिहास
- 5.3.2 समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र
- 5.3.3 नए आर्थिक समाज शास्त्र का उद्‌गम

5.4 समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र की सामान्य समस्याएं

- 5.4.1 बेरोजगारी
- 5.4.2 बालश्रम
- 5.4.3 असमानता
  - 5.4.3.1 आर्थिक असमानता
  - 5.4.3.2 सामाजिक असमानता

5.5 सारांश

5.6 संदर्भ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढ़ेंगे :

- समाजशास्त्र का उदगम और विकास;
- समाजशास्त्रःविस्तृत वर्णन;
- समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का परस्पर संबंध; तथा
- समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र संबंधी सामान्य समस्याओं का विश्लेषण।

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में समाजशास्त्र तथा उसके अर्थशास्त्र से संबंध का वर्णन किया गया है। सामाजिक हालात किसी काल विशेष के विचारों तथा उसकी गतिविधियों को पूरी तरह प्रभावित करते हैं। समाज के तर्कसंगत विकास का अध्ययन करने के लिए उस कालावधि में यूरोप में घटी घटनाओं, फ्रांसीसी क्रांति, 17-18वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति को

*अहमेदुल कबीर, केंद्रीय विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार, गया

समझना जरूरी है। इसे उस काल का नवजागरण भी कहा जाता है क्योंकि इस काल में विज्ञान व सकारात्मक दर्शन का उद्‌भव हुआद्य सामाजिक विचार, सामाजिक दर्शन तथा सामाजिक सिद्धांत विभिन्न काल खंडों की सामाजिक अवधारणाओं व गतिविधियों से प्रभाव ग्रहण करते हैं। समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञानों की एक विशेष शाखा है। यह अन्य सामाजिक विज्ञानों से अनेक मामलो में अलग हैं।

समाजशास्त्र की प्रमुख विशेषताएं–

अ) समाजशास्त्र एक स्वतंत्र विज्ञान हैः समाजशास्त्र अब पूर्ण रूप से एक स्वतंत्र सामाजिक विज्ञान विषय बन चुका है। अब इसे इतिहास, राजनैतिक विज्ञान अथवा दर्शनशास्त्र की तरह ही किसी सामाजिक विज्ञान की शाखा के रूप में नहीं जाना जाता है। एक स्वतंत्र सामाजिक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का अपना अध्ययन क्षेत्र, सीमा तथा विधि विकसित हुई है।

ब) समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, वह कोई भौतिक विज्ञान नहीं हैः वह भौतिकी, रसायन विज्ञान या जीव विज्ञान से बिलकुल अलग एक स्वतंत्र सामाजिक विज्ञानं है। इसके अंतर्गत मनुष्य, उसका सामाजिक व्यव्हार, सामाजिक क्रिया-कलाप तथा पूरा सामाजिक जीवन आता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता हैं कि-

1) समाजशास्त्र सामाजिक दर्शन से उत्पन्न होकर स्वतंत्र व समग्र रूप से विकसित हुआ है।

2) समाजशास्त्र का विकास सामाजिक दर्शन से उस दौर में हुआ जब यह महसूस किया गया कि समाज एक रचनात्मक संस्थान है और उसमें भी बदलाव आते हैं जैसा कि फ्रांसीसी तथा अमेरिकी क्रांति के दौरान हुआ।

5.2 समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध

5.2.1 समाजशास्त्र की परिभाषा

समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों को आधार मानकर चलता है तथा सामाजिक संबंधों व व्यवहारों की व्यवस्थित पद्धतियों के मर्म के विश्लेषण का प्रयास करता है। ऐसा कह सकते हैं कि यह मुख्य रूप से तीन आधारभूत प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता है। पहला, समाज कैसे और क्यों विकसित हुए? दूसरा, क्यों और किस प्रकार समाज अस्तित्व में रहते हैं? तीसरा, समाज किस प्रकार परिवर्तित होते हैं?

प्रायः सभी समाजशास्त्री इन तथ्यों से सहमत हैं-

अ) समाजशास्त्र का सरोकार मुख्य रूप से मनुष्यों के सामाजिक व्यवहार तथा उनके पारस्परिक संबंधों के विश्लेषण से है।

ब) समाजशास्त्र मौलिक सामाजिक संस्थानों जैसे परिवार तथा सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन पर जोर देता है।

स) समाजशास्त्र सामाजिक विकास, सामाजिक बदलाव तथा सामाजिक क्रियाकलापों पर ज़ोर देता हैं।

द) समाजशास्त्र सहयोग एवं प्रतिस्पर्धा, सौजन्य एवं समीकरण, सामाजिक टकराव एवं सामाजिक संपर्क, सामाजिक विभिन्नताओं व सामाजिक समरसताओं आदि सामाजिक प्रक्रियाओं की व्याख्या करता है।

समाजशास्त्र की अपनी स्वतंत्र कार्यप्रणाली होती है जो अनुभव जन्य आंकड़ों तथा अनुमानित तर्कों के आधार पर कार्य करती है। परंतु समान्यीकरण के स्तर पर विशिष्ट नियमों का पालन भी करती है।

समाजशास्त्र

समाजशास्त्र एक महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान है क्योंकि यह लोगों के जीवन से सीधा सरोकार रखता है। सभी मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं- सामाजिक संबंधों के बिना न बच्चों का ठीक से विकास हो पाता, न वयस्कों को दिशा मिल पाती। मानव अस्तित्व के लिए समाज का होना जरूरी है। इस प्रकार समाजशास्त्र समाज का सामान्य विज्ञान है।

5.2.2 अर्थशास्त्र की परिभाषा

अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जो आवश्यकताओं तथा उनकी पूर्ति से सरोकार रखता है। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि मनुष्य की आवश्यकताएँ एवं इच्छाएं असीमित होती हैं और उनकी पूर्ति के लिए उपलब्ध संसाधन सीमित होते हैं। यही कारण है कि लोग संसाधन इकट्ठे करने तथा धन कमाने में लगे रहते हैं जिससे वे अधिक से अधिक आवश्यकताएं व इच्छाएं पूरी कर सकें। किसान खेतों में, मजदूर कारखानों में, कर्मचारी कार्यालयों में तथा शिक्षक विद्यालयों में इसीलिए काम करते हैं कि वे धन अर्जित कर सकें।

विभिन्न कार्यों में लोग क्यों व्यस्त रहते हैं? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है कि वे अपने-अपने कार्यों के बदले धन अर्जित करते हैं जिससे वे अपने जीवन में अधिक से अधिक आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति कर सकें। आवश्यकताएं अनेक प्रकार की होती हैं। इन में आवश्यक आवश्यकताएं हैं - रोटी, कपड़ा और मकान तथा अन्य अनेक आवश्यकताएं जैसे बेहतर शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं आदि। सभी इच्छाओं की तथा आवश्यकताओं की पूर्ति इसलिए भी संभव नहीं क्योंकि ज्यों ही मनुष्य एक इच्छा पूरी करता है त्यों ही दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। इस सिलसिले का कोई अंत नहीं। कच्चे माल को उपयोग में आने वाली वस्तुओं में बदलने की प्रक्रिया अर्थशास्त्र के अंतर्गत आती है। इन वस्तुओं को उत्पाद कहा जाता है। वस्तुओं के इस्तेमाल को अर्थशास्त्र की भाषा में उपभोग एवं वितरण कहा जाताहै।

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र उपभोग, उत्पादन एवं धन वितरण का अध्ययन है।

समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञान है और वह मनुष्यों से जुड़े तमाम संस्थानों व सरोकारों से सीधा संबंध रखता है। समाजशास्त्र मानवीय व्यवहारों, उनकी सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है। मनुष्य के समस्त आर्थिक क्रियाकलापों से अर्थशास्त्र का सीधा संबंध है। अर्थशास्त्र मूलतः धन एवं उससे जुड़े सरोकारों का अध्ययन है। प्रोफेसर रॉबिंस के अनुसार अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान है, जो मनुष्य की असीमित इच्छाओं तथा सीमित संसाधनों से उपजे हालातों एवं मानवीय व्यवहारों का अध्ययन करता है। यह मनुष्य की उत्पादन, उपभोग, वितरण तथा आदान प्रदान से जुड़ी समस्त गतिविधियों पर विशेष ध्यान देता हैं। विभिन्न आर्थिक संगठनों जैसे बैंकों व बाज़ारों आदि के स्वरूप एवं कार्य प्रणालियाँ भी अर्थशास्त्र के अंतर्गत आते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अर्थशास्त्र मनुष्यों की भौतिक आवश्यकताओं तथा उसके हितों से सीधा संबंध रखता है।

समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र दोनों ही सामाजिक विज्ञान हैं और इनका एक दूसरे से गहरा संबंध है। दोनों एक दूसरे से संबंधित भी हैं और एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। समाजशास्त्र

तथा अर्थशास्त्र के संबंध के संदर्भ में थॉमस का विचार है कि, अर्थशास्त्र समाजशास्त्र की एक शाखा है। सिल्वर मैन के अनुसार अर्थशास्त्र समाजशास्त्र से ही जन्मा है जो सभी सामाजिक संबंधों के सामान्य सिद्धांतों का अध्ययन करता है।

अर्थशास्त्र मनुष्य के लिए हितों को साधने वाले समस्त भौतिक संसाधनों का अध्ययन करता है। मानवीय हितों को साधने के लिए अर्थशास्त्र मनुष्य के हितों से जुड़े सभी विज्ञानों विशेष रूप से समाज विज्ञान से सहयोग लेता है। इस प्रकार अर्थशास्त्र समाजशास्त्र पर आधारित है। अर्थशास्त्र, क्योंकि समाजशास्त्र का ही हिस्सा है अतः समाजशास्त्र की सहायता के बिना अर्थशास्त्र को नहीं समझा जा सकता। मनुष्य के आर्थिक तथा सामाजिक हित एक दूसरे से सीधे जुड़ें हैं।

जब समाज के सामने आर्थिक मंदी, गरीबी, बेरोजगारी, अदि समस्याएं आती हैं तब उनका हल निकालने के लिए अर्थशास्त्री समाजशास्त्र की ही सहायता लेते हैं और पता लगाते हैं कि उस काल विशेष में कौन-कौन सी सामाजिक घटनाएं घटी। यह भी सच है कि व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों को समाज ही नियंत्रित करता है। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री मैक्स वेबर, विल्फ्रेडो परेटो आदि ने वित्तीय मामलों व सामाजिक सरोकारों पर विशेष अनुसंधान किए हैं जो अर्थशास्त्र के लिए बड़े उपयोगी साबित हुए हैं। कुछ अर्थशास्त्री तो यहां तक मानते हैं कि जब समाज बदलता है तो उसके साथ-साथ अर्थशास्त्र भी बदल जाता है। हर आर्थिक समस्या का समाधान प्रायः समाजशास्त्र से प्राप्त आंकड़ों से ही संभव हो पाता है। स्पष्ट है कि समाजशास्त्र से दूरी बना लेने से अर्थशास्त्र का विकास नहीं हो सकता। इसी प्रकार समाजशास्त्र भी अर्थशास्त्र के सहयोग पर निर्भर करता है।

अर्थशास्त्र से सामाजिक ज्ञान में वृद्धि होती है। सामाजिक जीवन के हर पहलू को कहीं ना कहीं आर्थिक सरोकार प्रभावित करते हैं। दहेज, आत्महत्या आदि सामाजिक समस्याएं प्रायः आर्थिक सरोकारों से ही जुड़ी होती हैं। आर्थिक तंगी ही अक्सर इन की जड़ों में पाई जाती है। इस प्रकार अर्थशास्त्र समाजशास्त्र का ही एक भाग है और अर्थशास्त्र के सहयोग के बिना समाजशास्त्री अधिकतर सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं तलाश सकते। सामाजिक विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में भी अर्थशास्त्र समाजशास्त्र की सहायता करता है। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री कार्ल मार्क्स मानता है कि समाज की स्थापना आर्थिक संबंधों से ही हुई है। हमारे सामाजिक जीवन में आर्थिक सरोकारों की भूमिका सबसे बड़ी होती है। आर्थिक संस्थानों से समाज शास्त्रियों का सीधा सरोकार रहता है। यही कारण है कि स्पेंसर, वेबर, दुर्खेइम आदि समाजशास्त्री यह मानते हैं कि अर्थशास्त्र से सहयोग लिए बिना मनुष्य के सामाजिक संबंधों का विश्लेषण नहीं किया जा सकता।

यह सच्चाई कि समाज पर आर्थिक सरोकारों का बड़ा प्रभाव पड़ता है तथा आर्थिक नीतियां एवं योजनाएं समाज की स्थितियों के आधार पर बनाई जाती हैं, साफ़ साफ़ बताती हैं कि समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के बीच गहरा संबंध है। अर्थशास्त्र को मनुष्य जीवन के उद्यमों में व्यवसायों का अध्ययन कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो अर्थशास्त्र वित्त एवं संसाधनों का विज्ञान है जिसकी तीन प्रमुख आयाम है- उत्पादन, वितरण तथा उपभोग।

समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के बीच सहयोग का क्षेत्र बहुत व्यापक है। आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करते समय अर्थशास्त्री समाज शास्त्रियों का साथ जरूरी मानते हैं। जब दोनों मिलकर काम करते हैं तो आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में आसानी हो जाती है।

उपर्युक्त विवरण से भलीभांति स्पष्ट हो चुका है कि समाजशास्त्र व अर्थशास्त्र एक दूसरे से सीधे जुड़े हैं। सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का सटीक हल समाजशास्त्री व अर्थशास्त्री

मिलकर ही निकाल सकते हैं। आर्थिक परिवर्तनों से सामाजिक बदलाव आते हैं तथा सामाजिक परिवर्तन होने पर आर्थिक परिवर्तन भी तदानुसार करने ही पड़ते हैं।

5.2.3 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में अंतर

एक दूसरे से इतनी गहराई से संबंधित होने तथा एक दूसरे पर इतने निर्भर होने के बावजूद इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि दोनों के बीच कुछ अंतर हैं जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है-

1) समाजशास्त्र समाज तथा सामाजिक संबंधों का अध्ययन करता है जबकि अर्थशास्त्र धन तथा उससे मिलने वाली सुविधाओं का अध्ययन करता है।

2) समाजशास्त्र का विकास समाज से उसके एक विज्ञान के रूप में हुआ है जबकि अर्थशास्त्र पहले से ही समाज के विज्ञान के रूप में मौजूद रहा है।

3) समाजशास्त्र अनुमान आधारित विज्ञान है जबकि अर्थशास्त्र आंकड़ों के आधार पर चलने वाला एक ठोस विज्ञान है जिसका सामाजिक विज्ञानों के बीच अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

4) समाजशास्त्र प्रायः सामाजिक विज्ञान के सभी पहलुओं से संबंध रखता है जबकि अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान के आर्थिक पक्ष को लेकर चलता है।

5) समाजशास्त्र का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है जबकि अर्थशास्त्र का क्षेत्र सीमित है।

6) समाजशास्त्र मनुष्यों की सामाजिक गतिविधियों से सरोकार रखता हैजबकि अर्थशास्त्र मनुष्यों की केवल आर्थिक गतिविधियों से सरोकार रखता है।

7) समाज शास्त्र के अध्ययन में समाज को इकाई माना जाता हैं जबकि अर्थशास्त्र के अध्ययन में व्यक्ति को इकाई माना जाता है।

8) समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के अध्ययन की विधियां तथा तकनीक अलग-अलग हैं।

5.2.4 विभिन्न अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका समाजशास्त्र से संबंध

सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री ए सी पिगौ के अनुसार अर्थशास्त्र सामाजिक हित के केवल उस पक्ष का अध्ययन करता है जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से धन से संबंधित होता है। इस परिभाषा में अर्थशास्त्री ने पूरे समाज को ही आधार बनाया है। व्यक्तियों की आवश्यकताओं व सरोकारों को नहीं। यहां वह यह कहना चाहता है कि सामाजिक संबंध धन के कारण बनते हैं जोकि अर्थशास्त्र का क्षेत्र है। यदि हम सामाजिक संबंधों पर नजर डालें तो स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि धनवान प्रायः धनवानों के साथ संबंध बनाते हैं और उनके साथ ही अधिक समय बिताना पसंद करते हैं। गरीबों के लिए वहां कोई जगह नहीं होती। इसके अलावा अमीर लोग गरीबों की तुलना में अपने आप को उच्च मानते हैं क्योंकि उनके पास अधिक धन होता है जिससे वे बहुत से संसाधन इकट्ठे कर सकते हैं। जबकि गरीबों के पास धन नहीं होता। अमीरों के संपर्क में आते समय गरीब झिझकते हैं क्योंकि कम संसाधन होने के कारण उनके अंदर हीनता की भावना होती हैं। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक संबंधों के निर्माण में समाज में धन की विशेष भूमिका होती है।

अर्थशास्त्री जॉन स्टूअर्ट मिल (1844) सामाजिक संदर्भ में अर्थशास्त्र के दखल पर जोर देते हुए कहता है कि,"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज के उन कार्यों के बारे में नियमों का निर्धारण करता है जो धन एवं उत्पादन से संबंधित है।" उक्त परिभाषा में स्पष्टतः आर्थिक

क्रियाओं पर समाज के प्रभावों को रेखांकित किया गया है। हर समाज में ऐसे प्राकृतिक नियम पहले से ही मौजूद रहते हैं जो आर्थिक लाभ के लिए आधार तैयार करते हैं।

सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री अलफ्रेड मार्शल के अनुसार मानव जीवन के उद्यमों के क्षेत्र का अध्ययन अर्थशास्त्र के अंतर्गत आता है। अर्थशास्त्र उन वैयक्तिक एवं सामाजिक गतिविधियों का अध्ययन करता है जो आवश्यकताओं की पूर्ति तथा हितों के संरक्षण से संबंधित हैं। इससे पता लगता है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन के केंद्र में मनुष्य तथा उसकी सामाजिक गतिविधियां हैं। एक तरफ वह मनुष्यों का अध्ययन करता है तथा दूसरी ओर आर्थिक गतिविधियों से संबंधित आर्थिक क्रियाओं के सामाजिक प्रबंधन की बात कहता है। ऐसा कहकर उसने वैयक्तिकता व सामाजिकता के बीच सम्बन्ध स्थापित किया है। अथवा यह कह सकते है कि सामाजिक सन्दर्भ में व्यक्तियों के आर्थिक प्रयासों पर अधिक ज़ोर दिया है। जैसे एक चर्च केवल उन पत्थरों का समुच्य मात्र नहीं है जिनसे वह बनी है। जैसे एक व्यक्ति भावनाओं और विचारों के अलावा भी बहुत कुछ होता है वैसे ही समाज का जीवन उसमें रहने वाले सभी लोगों की जिंदगियों का जोड़ मात्र नहीं है।

सच्चाई यह है कि पूरे समाज के कार्य उसमें रहने वाले लोगों के कार्य ही होते हैं। यही कारण है कि किसी समाज की आर्थिक समस्याएं उसमें रहने वाले लोगों की ही होती हैं। समाज के लोगों के किसी न किसी व्यापार अथवा औद्योगिक संस्थान से जुड़े होने के कारण उनकी व्यक्तिगत आर्थिक समस्याएं भी आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों का हिस्सा बन जाती हैं। पूरे समाज के हितों को केंद्र में रखते हुए अल्फ्रेड मार्शल यह मानकर चलता है कि समाज के सदस्य प्रथक तथा प्रतिस्पर्धी व्यक्ति मात्र नहीं है, उन्हें आपस में संपर्क में रहते हुए ऐसी आर्थिक नीतियों का निर्माण करना चाहिए जिनके कारण व्यक्तियों के हितों में टकराव की स्थिति उत्पन्न न हो।

प्रमुख ब्रिटिश अर्थशास्त्री सर जेम्स स्टुअर्ट (1767) राजनैतिक अर्थव्यवस्था शब्द का इस्तेमाल करते हुए कहते हैं - जैसे परिवार की अर्थव्यवस्था सामान्यतः परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है, उसी प्रकार किसी देश की राजनैतिक अर्थव्यवस्था आर्थिक मदद के लिए इस तरह कदम उठाती है कि समाज में रहने वाले सभी लोगों की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, लोगों को योग्यतानुसार समुचित रोजगार मिल सके, उनके बीच आपसी समझ व सहयोग के संबंध इस प्रकार विकसित होते रहे कि वे एक दूसरे की रुचियों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए परस्पर सहयोग करते रहें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने समाज के विभिन्न घटकों- परिवार, नागरिक, सामाजिक संपर्क, आदान प्रदान अदि का उल्लेख किया है जो निश्चित रूप से समाज के विषय हैं। इस प्रकार उनके अनुसार ये साबित हो जाता है कि अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एक दूसरे से सीधे जुड़े हैं।

5.2.5 विभिन्न समाजशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका अर्थशास्त्र से संबंध

सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर के अनुसार "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रियाओं की पूरी समझ रखता है ताकि वह उनके कारणों और परिणामों की संक्षिप्त व्याख्या कर सकें।" समाजशास्त्र द्वारा अपनाया जाने वाला कारण व प्रभाव का सिद्धांत अर्थशास्त्र से संबंधित है। इसके आधार पर विभिन्न आर्थिक नीतियों का प्रादुर्भाव होता है। फ्रांसीसी क्रांति का उल्लेख करते हुए मैक्स वेबर कहता है कि, फ्रांस की क्रांति वहां के आम लोगों को दी गयी यातनाओं तथा उन पर होने वाले अन्याय का परिणाम थी। जब फ्रांस के लोग बड़ी संख्या में गरीबी और बेबसी का शिकार होने लगे और उनकी समझ में आ गया कि

उन्हीं के समाज के कुछ लोग सत्ताधीशों से ताकत पाकर उन्हें नरकीय जीवन जीने पर विवश कर रहे है तो उन्होंने मिलकर सत्ता के खिलाफ बगावत कर दी और क्रांति का जन्म हुआ। स्पष्ट है कि फ्रांसीसी क्रांति के पीछे आर्थिक व सामाजिक कारण थे क्योंकि अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एक दूसरे से संबंधित हैं तथा एक में घटित होने वाला कारण दूसरे को प्रभावित करता है और यदि दोनों एक साथ मिल जाए तो प्रभाव परिवर्तनकारी होता है। अनेकानेक आर्थिक कारण समाज पर अपना प्रभाव डालते हैं और उसके परिणाम आते हैं।

मॉरिस जींस बर्ग के अनुसार, "समाजशास्त्र व्यापक रूप से समाज में रहने वाले लोगों के परस्पर व्यवहारों तथा संबंधों, उनकी दशाओं एवं परिणामों का अध्ययन है।" अनेक सामाजिक एवं व्यक्तिगत घटक मनुष्य के आपसी संपर्क और व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। इनमें भावनाएं, व्याहारिक गतिविधियां एवं आर्थिक कारण विशेष रूप से भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए माता-पिता अपने बच्चों की अधिक से अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, कम से कम तब तक जब तक कि वे स्वयं अपना जीवन चलाने के लिए धन अर्जित करने के काबिल नहीं हो जाते। परिवार व सामाजिक संस्थान भी बच्चों के लिए उपयोग की समस्त वस्तुएं उपलब्ध करवाते हैं तथा उन्हें समुचित सेवाएं प्रदान करते हैं। पति अपनी पत्नी की सभी प्रकार की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उसका यह कार्य पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवहार के अंतर्गत आता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि मनुष्यों के सामाजिक व्यवहारों व कार्यों में आर्थिक पक्ष विशेष रूप से सम्मिलित रहता है।

बोध प्रश्न

1) समाजशास्त्र के अर्थशास्त्र से संबंधों की व्याख्या कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) उन सामान्य समस्याओं की व्याख्या कीजिए जो अर्थशास्त्र व समाज शास्त्र दोनों के अंतर्गत आती हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 आर्थिक समाजशास्त्रः समाजशास्त्र की एक उप शाखा

5.3.1 आर्थिक समाजशास्त्र का इतिहास

आर्थिक समाजशास्त्र की जड़ें प्राचीन दार्शनिक तथा सामाजिक विज्ञान की परंपराओं में देखी जा सकती हैं जबकि समाज विज्ञान की सुनियोजित व सुव्यवस्थित उपशाखा के रूप में आर्थिक समाजशास्त्र का इतिहास एक शताब्दी से अधिक पुराना नहीं है। अपने स्रोत से निकलने तथा विकसित होने के बाद आर्थिक समाजशास्त्र ने आर्थिक मामलों में समाज का विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सुप्रसिद्ध विद्वान कार्ल मार्क्स के लेखों में आर्थिक समाजशास्त्र के अभ्युदय की झलक मिलती है।स्मेल्सर, एन, जेव स्वेडबर्ग, आर के अनुसार "आर्थिक समाजशास्त्र" शब्द का प्रयोग 1879 में हुआ। सबसे पहले ब्रिटिश अर्थशास्त्री डब्लू स्टैन लेजेवनॉयस ने 1879 में "आर्थिक समाजशास्त्र" का उल्लेख किया। यहां से समाजशास्त्रियों ने इसे पकड़ा और 1890 तथा 1920 के बीच दुर्खेइम तथा वेबर ने समाजशास्त्र में इसका प्रयोग किया। इन्हीं दशकों में आर्थिक समाजशास्त्र का जन्म हुआ।

1893 में दुर्खेइम ने द डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसाइटी में इसका उल्लेख किया हैं तथा सिम्मलने अपनी पुस्तक द फिलॉसोफी ऑफ मनी (1900) में तथा वेबरने अपनी पुस्तक इकोनामी एंड सोसायटी (1908-20) में आर्थिक समाजशास्त्र का उल्लेख किया है। इससे समाज शास्त्र के क्षेत्र में एक नई चेतना जागी, एक नई धारा के अभ्युदय की नींव पड़ी। आरंभ में वेबर तथा उनके अन्य साथियों को ऐसा लगा था कि उन्होंने ही सबसे पहले आर्थिक समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने उसके क्षेत्र पर अपने आप को केंद्रित करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि समाज में अर्थव्यवस्था की क्या भूमिका है तथा अर्थव्यवस्था का सामाजिक विश्लेषण अर्थशास्त्र से किस प्रकार भिन्न है? आर्थिक क्रिया क्या है? इसमें यह जोड़ना भी आवश्यक है कि प्राचीन समय में एकत्रित किए गए आंकड़े पूर्वाग्रह से युक्त थे। इसका समाज पर प्रभाव पड़ा और समाज में एक बड़ा परिवर्तन आया।

5.3.2 समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र

विशेष रूप से 1980 के बाद आर्थिक समाजशास्त्र ने अपनी उल्लेखनीय पहचान बना ली। कुछ समाजशास्त्री जो बाजार तथा समाज के संबंधों पर घनघोर अनुसंधान कर रहे थे उन्होंने बाजार तथा समाजशास्त्र पर अनेक लेख लिखे। इसका परिणाम यह हुआ कि आर्थिक समाजशास्त्र ने समाजशास्त्र में अब अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। के 1980 अभियान में मार्क ग्रानोवेटर का विशेष योगदान रहा। मार्क ग्रानोवेटर ने ठोस सामाजिक

संबंधों में आर्थिक क्रियाओं की अंतर्निहितता पर विशेष जोर दिया। अपने लेख इकनोमिक इंस्टीटूशन्स ऐज़ सोशल कंस्ट्रक्शंस में मार्क ग्रानोवेटर ने तर्क दिया है कि, संस्थान वास्तव में संगठित सामाजिक नेटवर्क हैं क्योंकि अधिकतर आर्थिक क्रियाएं इन्हीं नेटवर्क पर घटित होती हैं। अतः यह आवश्यक है कि समाज विज्ञानी अर्थव्यवस्था का अध्ययन करते समय मनुष्यों के आपसी संबंधों पर विचार अवश्य करें। वह तर्क देता है कि समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र में बाजारों को उत्पादकों का ऐसा नेटवर्क माना जाता है जो एक दूसरे पर पूरी तरह नजर रखते हैं तथा कदम कदम पर दबाव बनाते रहते हैं। ऐसे नेटवर्क का समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है।

कार्ल पोलानई का भी आर्थिक समाजशास्त्र में विशेष योगदान रहा है। उसका तर्क है कि स्वतंत्र बाजार का जन्म संस्थागत परिवर्तनों से संभव हुआ तथा सरकार ने इन्हें विशेष रूप से बढ़ावा दिया है। आर्थिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में इसे सामान्यतः स्वीकार कर लिया गया है।

5.3.3 नए आर्थिक समाजशास्त्र का उदगम

कन्वर्ट, बी तथा हेलब्रोन, जेने अपने लेख व्हेयर डिड न्यू इकनोमिक सोशलॉजी कम फ्रॉम में नए आर्थिक समाजशास्त्र का विस्तृत वर्णन किया है। वे तर्क देते हैं कि नए समाजशास्त्र ने अपनी वैज्ञानिक प्रमाणिकता अपने अंदर दो नयी सशक्त धाराओं को एक साथ उतारते हुए स्थापित की है - नेटवर्क विश्लेषण तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित आधुनिक संस्था पर कता। इस से नया आर्थिक समाजशास्त्र, समाजशास्त्र का सबसे जीवंत अंग बन गया है।

आर्थिक समाजशास्त्र

ब्रिटानिका एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार आर्थिक समाजशास्त्र उत्पादन, वितरण, विनिमय तथा वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग के बीच संबंधों को समझने के लिए सामाजिक क्रियाओं का उपयोग करता है। आर्थिक समाजशास्त्र आर्थिक क्रियाओं व सामाजिक तथा संस्थागत परिवर्तनों के प्रति विशेष रूप से सतर्क है।

5.4 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र की सामान्य समस्याएं

5.4.1 बेरोज़गारी

जब हम बेरोज़गारी के बारे में बात करते हैं तो प्रायः यही समझते हैं कि यह एक आर्थिक समस्या है। परंतु यदि हम बेरोज़गारी के असली कारणों को तलाशने का प्रयास करें तो इसका सही उत्तर समाजशास्त्र दे सकता है। समाज शास्त्रियों की दृष्टि में बेरोज़गारी एक सामाजिक समस्या है। उनका तर्क है कि बेरोज़गारी के पीछे वास्तव में सामाजिक कारण होते हैं। समाज का पिछड़ापन, बढ़ती जनसंख्या, शिक्षा प्रणाली की खामियां तथा लोगों में मौजूद जड़ता व आलस्य की प्रवृत्ति आदि बेरोजगारी के प्रमुख कारण हैं। कुछ समाजशास्त्री बीमारी, विकलांगता, अयोग्यता, अनुभव हीनता तथा व्यावसायिक निपुणता के अभाव आदि व्यक्तिगत कारणों को भी बेरोजगारी के लिए जिम्मेदार मानते हैं।

जबकि अर्थशास्त्रियों के लिए बेरोजगारी एक आर्थिक समस्या है। अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण, पूंजीवादी समाजों का औद्योगिक समाजों में बदल जाना आदि बेरोजगारी की समस्या के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार हैं। अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि बेरोजगारी मजदूरों की मांग पर निर्भर करती है। जब मजदूरों की संख्या की तुलना में रोजगार के अवसर कम पड़ जाते

हैं तो बेरोजगारी का जन्म होता है। बढ़ी हुई जनसंख्या भारत में बेरोजगारी का प्रमुख कारण है। क्योंकि यहां काम की तलाश में घूमने वाले लोगों की संख्या जिस तेजी से बढ़ी है उस अनुपात में रोजगार उत्पन्न नहीं किए जा सके हैं। परिणामतः बड़ी संख्या में यहां ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्हें काम नहीं मिल पाता और वे निराशा व हताशा का जीवन जीने के लिए विवश हैं। इससे देश में मानव संसाधन तथा मानव हितों की रक्षा में गिरावट आ रही है।

5.4.2 बाल मजदूरी

भारत जैसे अनेक विकासशील देशों में बाल मजदूरी का चलन आम हो गया है। हजारों की संख्या में किशोर अवस्था में पहुंच रहे बच्चे काम पर लगा दिए जाते हैं। इससे उनसे उनका बचपन छिन जाता है। वे पढ़ लिख नहीं पाते। विषम परिस्थितियों में काम करने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, उनके मौलिक अधिकारों का हनन होता है। बाल मजदूरी का कारण केवल यह नहीं है कि बच्चे स्कूल नहीं जाना चाहते और काम पर चले जाते हैं। सच तो यह है कि उनके अभिभावक तथा उनका पालन पोषण करने वाले लोग ही यह फैसला ले लेते हैं कि वे स्कूल न जा कर काम पर जाएं और बाल मजदूर बन कर रह जाए। बच्चों को उनके काम के बदले पर्याप्त पगार भी नहीं दी जाती। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक परिवारों में बच्चे खेती के कामों में लगा दिए जाते हैं, कुछ छोटी मोटी दुकानों पर या उद्यम केंद्रों में काम पर लग जाते हैं। नगरों में लड़कियों को वयस्क होने से पहले ही घरेलू नौकरानियां बना दिया जाता है। वे बर्तन धोने, घर साफ करने, बच्चों की देखभाल करने या फिर खाना बनाने के कामों में लग जाती हैं। आर्थिक संसाधनों की कमी, गरीबी और पिछड़ापन आदि अनेक कारण बच्चों को बाल मजदूर बनने पर विवश कर रहे हैं।

5.4.3 असमानता

असमानता का प्रश्न अर्थशास्त्र के सामने भी मुंहबाये खड़ा है और समाजशास्त्र के सामने भी। अर्थशास्त्रियों के लिए यह आर्थिक असमानता तथा समाजशास्त्रियों के लिए सामाजिक असामनता है। अर्थशास्त्रियों का काम है आर्थिक असमानता से निपटना तथा समाज शास्त्रियों का काम है कि वे सामाजिक असमानता का पता लगाएं और उसके कारणों को तलाशते हुए उसका समाधान तलाशे। आर्थिक व सामाजिक असमानताओं पर निम्न अवतरणों में विचार किया जा रहा है-

5.4.3.1 आर्थिक असमानता

समाज में आर्थिक असमानता के अनेक कारण है। आर्थिक संसाधनों के वितरण में, आमदनी के साधनों में, वेतन आदि अनेक आय स्रोतों में असमानता आर्थिक असमानता कहलाती है। आर्थिक असमानता तीन प्रकार की होती है- असमान आय, असमान वेतन तथा असमान वित्तीय संसाधन। लोगों के बीच आय के वितरण की असमानता आय आधारित असमानता को जन्म देती है। आय के अंतर्गत कार्य अथवा उद्यम के बदले होने वाली आमदनी में पगार, वेतन, बोनस आदि सब आते हैं।

वेतन असमानता दूसरे प्रकार की आर्थिक असमानता है। वेतनमानों में विभिन्नता कार्य स्थलों की विभिन्नता के कारण होती है जो अंततः वेतन आधारित आर्थिक असमानता को जन्म देती है। तीसरे प्रकार की आर्थिक असमानता वित्तीय संसाधनों के असमान वितरण के कारण उत्पन्न होती है। किसी व्यक्ति को प्राप्त समस्त वित्तीय संसाधनों से होने वाली आय इस श्रेणी में आती है। इसमें चल व अचल संपत्ति, स्टॉक, पेंशन आदि सब शामिल है।

5.4.3.2 सामाजिक असमानता

जब सामाजिक संसाधनों का वितरण असमान होता है तब सामाजिक असमानता का जन्म होता है। जाति, वर्ग, लिंग आदि के आधार पर सामाजिक संसाधनों के वितरण से सामाजिक असमानता उत्पन्न होती है। सामाजिक स्तर के आधार पर मिलने वाले धन कमाने के अवसर व पुरस्कार पाने के अवसर सामाजिक असमानता पैदा करते हैं। अपनी चर्चित पुस्तक सोशियोलॉजी थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स में एम. हरलाम बोसने सामाजिक अथवा प्राकृतिक असमानता का वर्णन किया है। अंग्रेजों का काले लोगों के साथ रंगभेद का बर्ताव और उन पर आधिपत्य जमा कर उनके शोषण से अधिक आय पैदा करना सामाजिक असमानता का उदाहरण है।

बोध प्रश्न

1) आर्थिक समाजशास्त्र को समाजशास्त्र की उपशाखा क्यों कहा जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र की सामान्य समस्याएं क्या है उनकी व्याख्या कीजिए। समुचित उदाहरण से अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 सारांश

इस इकाई में हमने समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के बीच संबंधों का अध्ययन किया और जाना कि किस प्रकार समाज आर्थिक मानकों से प्रभावित होता है तथा सामाजिक स्थितियां कैसे आर्थिक नीतियों व योजनाओं के निर्माण का आधार बनती हैं। समाज में व्याप्त घृणा व लड़ाई झगड़ों की जड़ें पारिवारिक संपत्ति के बंटवारे को लेकर माता पिता व उनकी सन्तानों के बीच की कलह में विद्यमान रहती हैं।

आर्थिक जगत की अधिकतर गतिविधियां सामाजिक आवश्यकताओं व स्तरों अदि पर होने वाले व्यय तथा सामाजिक स्तरों को ऊँचा उठाने के अन्यान्य प्रयास आदि से प्रभावित होती है। धनवान दूसरों की दृष्टि में अपने आप को उच्च दिखने के लिए कीमती चीज़ो की खरीदारी करते है तथा विलासिता का जीवन जीते है। किसी व्यक्ति का सामाजिक जीवन

जैसे उसका परिवार, उसकी शिक्षा, उसका पद, विवाह, रहन सहन का स्तर यह तय करता है कि वह परिवार पर कितना खर्च करें, विवाह आदि उत्सव के अवसरों पर कितना खर्च करें। इस प्रकार आर्थिक मानक व्यक्ति की जीवन शैली तथा आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं। समाज की आर्थिक आवश्यकताएं प्रायः सामाजिक संस्थानों द्वारा पूरी की जाती हैं। इससे स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र दोनों एक दूसरे से कुछ इस तरह जुड़े हैं कि यदि किसी एक का अध्ययन करना हो तो दूसरे को भी साथ लेकर चलना पड़ेगा।

5.6 सन्दर्भ

अहूजा, राम. 1992 सोशल प्रॉब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशंस।

अप्पादुरई, ए. 1986 द सोशल लाइफ ऑफ थिंग्स कमोडिटीज इन कल्चरल पर्सपेक्टिव,कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस भवन।

बोर्दियू, पिएर्रे .1984 डिस्टिंक्शन सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्टहार्वर्डः यूनिवर्सिटी प्रेस हार्वर्ड।

गिलबर्ट, पास्कल. 1973 फंडामेंटल्स ऑफ सोशियोलॉजी, ओरियंट लोंगमैन प्राइवेट लिमिटेड।

हरलामबोस, एम. 2005 सोशियोलॉजी थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स, नई दिल्ली, ओयू पी।

इन्कलेस, अलेक्स.1979 व्हाट इस सोशियोलॉजी?ः इन इंट्रोडक्शन टू डिसीप्लिन एंड प्रोफेशन, प्रेन्टिस हॉल।

ओंकार नाथ, जी. 2012 इकोनॉमिक्स, प्राइमर फॉर इंडिया, ओरियंट ब्लैकस्वान।

स्मेल्सर, ए मार्टिनेली. इकोनामी एंड सोसाइटीज, ओवरव्यू इन इकोनामिक सोशियोलॉजी, लंदनः सेज।

स्वेडबर्ग, नील जे एंड रिचर्ड. 2005 द हैंडबुक ऑफ इकोनॉमिक्स सोशियोलॉजी प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।

इकाई 6 समाजशास्त्र का राजनीति विज्ञान के साथ संबंध*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध

6.2.1 राजनीति विज्ञान की परिभाषा

6.2.2 राजनीति विज्ञान की प्रकृति में बदलाव

6.2.3 समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच संबंध

6.3 समाजशास्त्र के उप-विषय के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र

6.3.1 राजनीति समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के समाजशास्त्र के बीच अंतर

6.3.2 राजनीतिक समाजशास्त्र में इस्तेमाल की जाने वाली अवधारणाएं

6.3.2.1 राजनीतिक संस्कृति

6.3.2.2 राजनीतिक समाजीकरण

6.3.2.3 राजनीतिक पूंजी

6.4 सारांश

6.5 संदर्भ

6.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप, निम्न बातों को समझने के लिए सक्षम हो पाएंगे :

- राजनीति विज्ञान की परिभाषा और समाजशास्त्र के साथ इसके संबंध;
- समाजशास्त्र के विकसित होते हुए उप-विषय के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र को समझना; तथा
- राजनीतिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में इस्तेमाल की जाने वाली अवधारणाएं।

6.1 प्रस्तावना

इस इकाई में राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र के संबंध की व्याख्या की गई है। समाजशास्त्र, जिसके अंतर्गत समाज और सामाजिक जीवन का अध्ययन किया जाता है उसमें मानव जीवन के विभिन्न राजनीतिक पहलुओं को भी रेखांकित किया जाता है। ये दोनों विषय एक-दूसरे से अलग अलग रूपों में रोजमर्रा की जिंदगी के विभिन्न मुद्दों और बातों एवं नीतिगत मामलों से जुड़े हुए सवालों का उपयोगी उत्तर प्रदान करने का प्रयास करते हैं अथवा उन मुद्दों के बारे में उपयोगी उत्तर प्रदान करने का प्रयास करते हैं जिनके बारे में हम यह सोचते हैं वे समाज और उसके कार्यों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए शासन, नागरिक समाज, सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक पूंजी, मतदान व्यवहार, विभिन्न समूहों के बीच सत्ता का संबंध, सहभागिता लोकतंत्र, स्वैच्छिक संगठन, सरकारी नीतियां और समाज पर उनका प्रभाव इत्यादि महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। वास्तविकता यह है कि बहुत से महत्वपूर्ण मुद्दे होते हैं जो समाजशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान दोनों की सीमाओं को पाटकर उन्हें नजदीक लाते हैं। इस प्रतिच्छेदन के फलस्वरूप, बहुत सारे उप-विषय

*डॉ. शाहिद, मानू, हैदराबाद

मानव जीवन के सामाजिक-राजनीतिक पहलुओं को एक अंतःविषयक संरचना के रूप मे अध्ययन करने के लिए उभर कर सामने आए हैं जैसे कि राजनीतिक समाजशास्त्र, राजनीतिक मानव विज्ञान एवं राजनीतिक अर्थव्यवस्था ।

अनिवार्य रूप से समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों ही मानव के सामाजिक जीवन से जुड़े हुए हैं और व्यापक रूप से अपनी कॉमन रुचि साझा करते हैं। हालांकि, हम इस तथ्य को भी मान सकते हैं कि दोनों विषयों के दृष्टिकोण एक दूसरे से भिन्न-भिन्न होते हैं तथा सामाजिक जीवन और उसकी गतिशीलता के बारे में अलग-अलग विचार प्रस्तुत करते हैं। इसलिए समाजशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान के बीच संबंधों को देखना महत्वपूर्ण है जिससे इस बात को स्पष्ट किया जा सके कि दोनों विषय सामाजिक समस्याओं को किस प्रकार निपटते हैं और दोनों विषयों कि अभिरुचि कहाँ पर के दूसरे से मिलती है तथा उनमें कहाँ अंतर है ।

6.2 राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध

6.2.1 राजनीति विज्ञान की परिभाषा

समान्यतः राजनीति विज्ञान को राज्य, सरकार और राजनीति के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। समान्यतः यहां सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली अवधारणाएं हैं - राजनीति, राज्य, सत्ता, राजनीतिक सामाजिककरण, नेतृत्व, शासन, निर्णय लेना, नीति बनाना और इसके प्रभाव। राजनीति राजनीतिक विज्ञान की मुख्य अवधारणा है। वास्तविकता यह है कि कई बार दोनों का उपयोग एक दूसरे के लिए किया जाता है। समान्यतः राजनीति को एक प्रक्रिया के तौर पर भी परिभाषित किया जाता है जिसके द्वारा लोग खुद को नियंत्रित करने वाले सामान्य नियमों को बनाते हैं, उनका संरक्षण करते हैं और उनमें संशोधन करते हैं। समान्यतः इस तरह की प्रक्रिया में सहयोग और संघर्ष दोनों ही सम्मिलित होते हैं। इस तरह शासन करने कला के रूप में राजनीति विभिन्न मामलों में सार्वजनिक संबंध, संघर्ष, कई प्रकार के निर्णय लेने, समझौता करने और सर्वसम्मति के मुद्दों से संबन्धित है, और इस तरह राजनीति सत्ता एवं संसाधनों के वितरण से संबंधित बातों का अनिवार्य रूप से वर्णन करती है। आइए राजनीति नामक शब्द से जुड़े कुछ अर्थों का अवलोकन करें।

सर्व प्रथम राजनीति को आम तौर पर सरकार के एक कला के रूप में माना जाता है। फिर भी यह तर्क देते हैं कि राजनीति विज्ञान है या नहीं, जैसा कि हम आम तौर पर समाजशास्त्र के वैज्ञानिक स्तर पर वाद-विवाद करते हैं यदि वास्तव में विभिन्न विद्वान नोट करते हैं कि राजनीति शब्द 'पोलिस' से लिया गया है जिस का अर्थ है '' शहर 'जिसका शाब्दिक अर्थ है' नगर राज्य '। प्राचीन काल में, यूनानी समाज को स्वतंत्र नगर राज्यों में विभाजित किया गया, जिनमें से प्रत्येक का अपना शासन शासन था। इस संदर्भ में, राजनीति या राजनीति विज्ञान को आम तौर पर 'पोलिस'- के मामलों में जाना जाता है यानी राज्य और उसके मामलों से संबंधित शैक्षिक विषय के रूप में राजनीतिक विज्ञान को राजनीति या राजनीतिक विज्ञान की इस परिभाषा को अपनाया गया है।

दूसरी बात यह है कि राजनीतिक और इसकी प्रकृति को परिभाषित करने वाला सबसे जरूरी पहलू वह है जिसे हम आम तौर पर सार्वजनिक संबंधों या जनता से जोड़ते हैं। वास्तव में, राजनीतिक विज्ञान का दायरा और परिभाषा राजनीतिक विज्ञान की संकुचित परिभाषा से परे है जिसे सिर्फ सरकार या राज्य के अध्ययन के रूप में माना जाता है। इसके अतिरिक्त , उपरोक्त वर्णित शब्द को 'निजी' शब्द से चुना जा सकता है। ये अंतर आम तौर

पर मानव जीवन के दो अलग-अलग विचारों पर आधारित होते हैं। वही वर्गीकरण आगे राज्य और नागरिक समाज के बीच दो वैचारिक श्रेणियों के बीच अंतर के अनुरूप है। उदाहरण स्वरूप राज्य के विभिन्न संस्थान जैसे कि नौकरशाही मशीनरी, मंत्रालय, अदालत और ट्रिब्यूनल, पुलिस, सेना, सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था इत्यादि को इस अर्थ में सार्वजनिक माना जा सकता है कि ये बड़े पैमाने पर समाज के लिए जिम्मेदार होते हैं और वह भी राज्य में अपने संगठन, प्रबंधन, और सामाजिक जीवन के सुचारू कामकाज के लिए। इसके अतिरिक्त, उन्हें मुख्य रूप से करदाताओं के पैसे से सार्वजनिक खर्चों पर वित्त पोषित किया जाता है । इसके विपरीत, नागरिक समाज में विभिन्न सामाजिक संस्थान शामिल हैं जैसे कि परिवार, संबंध समूह, ट्रेड यूनियन, क्लब, सामुदायिक समूह, निजी व्यवसाय आदि। वे इस अर्थ में निजी हैं कि उन्हें कई बार नागरिक समाज की बजाय अपनी खुद की जरूरतों और रुचि को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत नागरिकों द्वारा वित्त पोषित और स्थापित किया जाता है। इस तरह, उनका स्वरूप निजी या व्यक्तिगत केंद्रित होती है।

तीसरी बात यह है कि राजनीति को आम तौर पर समझौता करने, निर्णय लेने और सर्वसम्मति के महत्वपूर्ण मुद्दों से निपटने में उसकी विशिष्ट स्वरूप के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। मतभिन्नता को हल करने के उद्देश्य से राजनीति आम तौर पर सामाजिक ढ़ांचा से संबंधित होती है जिसमें सत्ता और निरा शक्ति के बजाय समझौता, सुलह और बातचीत के माध्यम से मतभेद को हल किया जाता है। मुख्य रूप से यह इस संदर्भ में है कि विभिन्न विद्वान आम तौर पर राजनीति और इसकी संबंधित प्रक्रियाओं को 'संभवतः कला' के रूप में परिभाषित करते हैं जो मुख्य रूप से राजनीति में संवाद, बहस और मध्यस्थता के माध्यम से संघर्ष को सुलझाने हेतु सैन्य समाधान के विपरीत वैकल्पिक साधनों के रूप में शांतिपूर्ण समाधान है। इस तरह राजनीति सत्ता और संसाधनों के प्रसार के रूप में परिभाषित किया जाने योग्य है क्योंकि समाज को अपने समुदाय के जीवन को सुचारू रूप से और शांतिपूर्वक चलाने की आवश्यकता होती है।

अंततः राजनीति आम तौर पर शक्ति और प्रभाव के प्रयोग से जुड़ी होती है। इस तरह राजनीति को विद्वान द्वारा सभी सामाजिक समूहों एवं संस्थानों में औपचारिक और अनौपचारिक, सार्वजनिक तथा निजी दोनों से जुड़े सभी सामूहिक सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में परिभाषित किया जाता है । इस संदर्भ में, समाज में सामाजिक संपर्क के प्रत्येक स्तर पर राजनीति होती है। क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर परिवारों, सहकर्मियों और संबंध समूहों, संगठनों और राष्ट्र-राज्यों में राजनीति पाई जा सकती है। व्यापक अर्थ में राजनीति अनिवार्य रूप से ताकत से जुड़ी हुई है जो दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता है और जो कुछ भी संभव हो, राजनीति वांछित परिणाम प्राप्त करने की क्षमता भी है। प्रतिस्पर्धी मांगों और सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए मनुष्य आम तौर पर प्रतिस्पर्धा के दावे और प्रतिदावे करते हैं। अतः राजनीति को आम तौर पर सीमित संसाधनों पर मतभेद के रूप में देखा जाता है। साथ ही शक्ति को ऐसे साधनों के रूप में देखा जा सकता है जिसके द्वारा इस प्रकार के संसाधनों हेतु संघर्ष होते हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि राजनीति विज्ञान मुख्य रूप से एक बौद्धिक विषय है जो कि राजनीति, सत्ता, शासन और राज्य कि संरचना और कार्य के बारे में ज्ञान की एक संस्था है। समाजशास्त्र की तरह, इसका विशिष्ट कार्य राजनीति के बारे में शिक्षार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के स्थान पर राजनीति के बारे में जानकारी प्रदान करना है। हालांकि समय के साथ साथ राजनीतिक विज्ञान के स्वरूप और दायरे में बदलाव आया है जिसका मुख्य कारण अन्य विषयों की अवधारणाओं, शर्तों और विधियों को अपनाना है और वह भी समाजशास्त्र से बहुत कुछ ग्रहण करने के कारण तथा इस तरह यह अंतःविषय दृष्टिकोण के साथ एक बौद्धिक विषय बन गया है । समाजशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान के अंतर-संबंधों की जांच करने से पूर्व इस तरह के बदलाव को समझना और इसकी प्रशंसा करना महत्वपूर्ण है ।

6.2.2 राजनीति विज्ञान के केन्द्र बिन्दु में बदलाव

राजनीतिक विज्ञान के स्वरूप में एक शैक्षणिक विषय के रूप से समय के साथ कई परिवर्तन एवं बदलाव आये हैं। इसलिए अतीत में राजनीति से राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव शासन करने के लिए सरकार एवं सामाजिक निर्धारकों के राजनीतिक कारण से हुए हैं। राजनीतिक विज्ञान में यह बदलाव समाज के अलग-थलग पड़ने से नहीं हुआ है। समसामयिक भूमंडलीकृत और अंतः संबन्धित संसार में बदलाव अनिवार्य रूप से बदलते दायरे और विषय की प्रकृति में प्रतिबिम्बित होते हैं। राजनीति विज्ञान ने अपना ध्यान न सिर्फ केंद्रित किया है अपितु अभिविन्यास और दृष्टिकोण में विशिष्ट सामाजिक विज्ञान बौद्धिक विषय के अधिक होने की दिशा में इसने अपनी अवधारणाओं और दृष्टिकोणों में संशोधन किया है। यद्यपि इसकी ऐतिहासिक जड़ें गहरी हो सकती हैं, शीत युद्ध की अवधि राजनीतिक वैज्ञानिकों को लोकतांत्रिक पूंजीवाद और सत्तावादी समाजवाद, राष्ट्रीय सदस्यता, वर्ग, स्थिति और अधिपत्य पर केंद्रित राजनीतिक पहचान जैसे मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है जिसे बाद में विश्व भर में राजनीतिक विज्ञान विभाग में शिक्षण और अनुसंधान के मुद्दों के रूप में विकसित किया गया।

इसके अतिरिक्त, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि वास्तव में शीत युद्ध के वर्षों में राजनीतिक दुनिया को देखने के दृष्टिकोण में तेजी से बदलाव आया। वास्तव में, राजनीति विज्ञान में बड़े बदलाव द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आचरणवाद के आगमन के साथ हुये। तब से राजनीति विज्ञान ने राजनीतिक प्रक्रिया और व्यवहार का अध्ययन शुरू किया (स्मिथ 2004)। राजनीति विज्ञान का उद्देश्य अधिकांश राजनीतिक व्यवस्था में राजनीति, राजनीतिक नेतृत्व, निर्णय लेने और व्यक्तियों के व्यवहार पद्धति और समूहों की प्रकृति का परीक्षण करके राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन और विश्लेषण करना बन गया। इसके अतिरिक्त, 1990 के दशक से द्वितीय विश्व युद्ध तक का समय पश्चिमी यूरोपीय शक्तियों का प्रभुत्व के लुप्त होने का था तथा अफ्रीका और एशिया के महाद्वीपों में नए देशों के उदय का था। साम्राज्य का यह ध्वंस अंततः सोवियत संघ और उस समय के अन्य कई कम्यूनिस्ट ताकतों के पाटन से मेल खाता है।

इसके उपरांत शीत युद्ध की अवधि में पुराने यूरोपीय बाजार, उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते, विश्व व्यापार संगठन, और यूरोपीय संघ, गैर-निरपेक्ष आंदोलन, अफ्रीकी संघ जैसे क्षेत्रीय राजनीतिक निकायों के विकास जैसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं का प्रसार हुआ। दक्षिणपूर्व एशियाई राष्ट्रों (एशियान देशों) का संघ जैसे कि पर्यावरण, श्रम और मानवाधिकार समूहों जैसे आंदोलन संगठनों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय/बहुराष्ट्रीय निगमों के विकास भी हो सकते हैं। राजनीतिक समुदाय, राजनीतिक पहचान और इस तरह के अधिकार, पहचान, धर्म, और राजनीति विकास के रूप में विभिन्न समाज विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण मुद्दों पर महत्वपूर्ण चिंताओं में से वाद-विवाद नए रूपों में उत्पन्न हुए। इसके अलावा, 1990 के दशक में और बाद में हम पहचान की राजनीति या पहचान की राजनीति के विकास में गति को महसूस कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, नस्लीय और जातीय मुद्दों लैंगिक न्याय, सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता, आप्रवासी राजनीति, पारिस्थितिकी और विकास, स्वदेशी लोगों की राजनीति, राजनीति और लेस्बियन, समलैंगिक के मुद्दों, उभयलिंगी, विपरीतलिंगी (एलजीबीटी), एक प्रमुख प्रवचन के रूप में वैश्वीकरण के साथ चारों ओर राजनीति; महानगरीय नागरिकता, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन हुआ जो राजनीति विज्ञान विषय से पहले अनुपस्थित थे वे सब जबरदस्ती उभकर सामने आए (स्मिथ 2004)। परिणामस्वरूप, इस विषय के कार्यक्षेत्र और प्रकृति में इस समयावधि में विस्तार किया गया अपितु इसमें अंतःविषय मुद्दों, वाद-विवाद को अधिक शामिल करके एक नया और आधुनिक रूप में एक

पारंपरिक आधार से बदल गया है और इस प्रकार इस विषय ने अपनी वैचारिक श्रेणियों को परिष्कृत किया। इस संदर्भ में जैसा की पहले उल्लेख किया गया है कि राजनीति विज्ञान ने मोड़ ले लिया है और इस तरह के नृजातियता, पहचान, धर्म, आदि के रूप में समाज विज्ञान की दृष्टि से और अधिक प्रासंगिक मुद्दों को शामिल किया। वैश्वीकरण, अंतर्राष्ट्रीयकरण, धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता, पहचान की राजनीति और न्यू मीडिया के मुद्दों और विकास से संबन्धित कई अन्य समसामयिक मुद्दों पर बहस ने राजनीतिक विज्ञान को अधिक परिपक्व बना दिया है और उसे सामाजिक विज्ञान विषय के रूप में संशोधित किया है।

6.2.3 राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध

समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान बारीकी से कई मामलों में एक दूसरे से संबंधित हैं। यह कहा जाता है कि समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के विषयों को सत्ता, अधिकार संरचनाओं, प्रशासन और शासन के अपने विश्लेषण में बारीकी से बुने हैं (लिपसेट 1964)। समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच कई समानताएं हैं। सबसे पहले, राजनीति विज्ञान अपने बुनियादी सिद्धांतों और तरीकों के लिए समाजशास्त्र पर अधिक निर्भर है। उदाहरण के लिए 20वीं शताब्दी के मध्य में मिशिगन सामाजिक मनोवैज्ञानिक और हरवर्ड में पार्सोनियन ने क्रमशः राजनीतिक व्यवहार और राजनीतिक विकास में राजनीतिक विज्ञान मुद्दों को नया स्वरूप प्रदान किया। दूसरी बात यह है कि दोनों केन्द्रित विशिष्टताओं को अर्थशास्त्र, इतिहास, मानव विज्ञान और मनोविज्ञान जैसे समान तृतीय पक्ष वाले विषयों से ग्रहण किया गया। तीसरी बात यह है कि मार्क्स, वेबर, ग्रामस्की, पैरेतो , पार्सन्स और मोस्का इत्यादि जैसे अनेक विद्वानों ने समान रूप से दोनों विषयों के विकास और उन्नयन में योगदान दिया है।

इसी प्रकार हारोल लेसवेल के ग्रंथ, 'पॉलिटिक्स : हू गेट्स वॉट, वेन एंड हाउ ' (1936) एक महत्वपूर्ण कार्य था जिससे समाजशास्त्री और राजनीतिक वैज्ञानिक दोनों ही प्रेरित होते हैं और एक अंतःविषय संरचना (लिपसेट 1964) में कार्य करने का नेतृत्व करते हैं। इस बात पर ध्यान दिया जा सकता है कि समसामयिक विश्व में बदलती सामाजिक जरूरतों और आकांक्षाओं को सामाजिक समस्याओं को समझने और आधुनिक समाज की समस्याओं के उत्तर खोजने हेतु अंतःविषय दृष्टिकोण जरूरी है।

समाजशास्त्र को अक्सर समाज के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। हम यह भी नोट कर सकते हैं कि समाज कुछ भी नहीं है, बल्कि विभिन्न समूहों, संस्थानों, समुदायों, संघों, लोगों और उनकी रोजमर्रा की जीवन की गतिविधियों का एक जटिल नेटवर्क है। राजनीति और शक्ति गति की मानव जीवन की इन सभी अवधारणाओं के अभिन्न अंग हैं। विशेष रूप से, राजनीति या राजनीतिक रूप हमेशा किसी भी मानव समाज के आवश्यक घटक रहे हैं। आधुनिक समय में, किसी भी समाज की राजनीति, राजनीतिक संस्थाओं या राजनीतिक जीवन के किसी भी रूप के बिना कल्पना नहीं की जा सकती है। राज्य और शासन अपने कार्य, विकास और सामाजिक जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं जैसे कानून और व्यवस्था, सुरक्षा और विकास दोनों के संदर्भ में किसी भी समाज के लिए बुनियादी हैं। सामाजिक विज्ञान भी सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ सामाजिक दुनिया की स्थिति पर अनिवार्य रूप से प्रतिबिंबित करता है और मानव समाज की स्थिति पर, तेजी से वैश्विक रूप से जुड़े दुनिया में सामाजिक रिश्तों का नेटवर्क, राजनीतिक परंपराओं, जाति और राजनीति, जातीयता, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की बढ़ती विविधता, आर्थिक स्थिति और भाषाई संबद्धता। समाजशास्त्र उनके सामाजिक निहितार्थों पर विशेष ध्यान देने के साथ राजनीतिक व्यवहार के विभिन्न पहलुओं की जांच करता है।

यह वास्तव में समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच गहरे संबंध को इंगित करता है। हालाँकि दोनों विधाएँ उनके दृष्टिकोण में भिन्न हैं। राजनीतिक वैज्ञानिक सरकारों और उनके नेताओं के उदय, पतन और परिवर्तनों की जांच करते हैं जबकि समाजशास्त्री सरकारों को सामाजिक संस्थाओं, राजनीतिक व्यवहार को सामाजिक गतिशीलता और नेतृत्व के रूप में देखते हैं क्योंकि सामाजिक घटनाएं सामाजिक विकास के लिए विविध निहितार्थ हैं।

समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों ही कई बिंदुओं पर चलते हैं और सामाजिक यथार्थ का व्यापक विश्लेषण करते हैं। इस प्रकार, दोनों के बीच समानता, विद्वानों द्वारा अच्छी तरह से सराहना की जाती है। हालाँकि, दोनों ही विषयों में बहुत अंतर है जिसका गंभीर रूप से आकलन करने की भी आवश्यकता है। समाजशास्त्री सबसे महत्वपूर्ण रूप से बातचीत प्रणाली की बात करते हैं, यह समूहों, संस्थानों या संगठनों के भीतर हो, जबकि राजनीतिक विज्ञान ऐसे समूहों या संगठनों के भीतर नियंत्रण तंत्र के बारे में बात करता है। इसलिए, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के संदर्भ या दृष्टिकोण का ढ़ांचा अलग-अलग हैं। पूर्व मुख्य रूप से अंतःक्रियात्मक विचारों के बारे में चिंतित है, जबकि बाद में शक्ति संरचना, आदेश और नियंत्रण तंत्र पर केंद्रित है। विद्वानों का तर्क था कि जब बातचीत प्रणाली के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को राजनीतिक घटनाओं के विश्लेषण के लिए लागू किया जाता है तो यह राजनीतिक समाजशास्त्र बन जाता है।

जैन और दोशी (1974) के अनुसार, जब राजनीति विज्ञान की शब्दावली को समाजशास्त्रीय विश्लेषण की शब्दावली में अनुवादित किया जाता है, तो इसे हम राजनीतिक समाजशास्त्र कहते हैं। यह इस अर्थ में है कि हम कह सकते हैं कि अलमंड कोलमैन के द पॉलिटिक्स ऑफ डेवलपिंग एरियाज़ (1960) और रजनी कोठारी के पॉलिटिक्स इन इंडिया (1970) पहले के राजनीतिक समाजशास्त्र के बढ़ते उदाहरण हैं। इसके परिणामस्वरूप, राजनीतिक समाजशास्त्र, जो मूल रूप से समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच अंतर का एक परिणाम है, समाजशास्त्र की अपेक्षाकृत एक नई शाखा है, जो समाज में विभिन्न राजनीतिक अंतर्ज्ञान, संघों, संगठनों, रुचि समूहों और शक्ति की गतिशीलता का अध्ययन करती है। राजनीतिक समाजशास्त्र, जिसे हम इस इकाई में बाद के खंड में विस्तृत करेंगे, अध्ययन के अपने क्षेत्रों के रूप में रुचि समूहों, राजनीतिक दलों, प्रशासनिक और नौकरशाही व्यवहार, सामाजिक विधानों, राज्य नीतियों, सुधारों और राजनीतिक विचारधाराओं का भी अध्ययन करते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) पिछले कुछ दशकों में राजनीति विज्ञान में बदलाव की चर्चा।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच संबंधों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित में से कौन सा मुद्दा समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों द्वारा सम्मिलित किया गया है :

क) धर्म

ख) जातीयता

ग) भाषा की बहस

क) उपरोक्त सभी

6.3 समाजशास्त्र के उप-क्षेत्र के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र

राजनीतिक समाजशास्त्र अक्सर समाजशास्त्र के विषय के भीतर एक नए, बढ़ते और बोझिल उप-क्षेत्र के रूप में देखता है। इसे समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच एक संपर्क सेतु माना जाता है। समाजशास्त्री दोनों के बीच दो तरह के रिश्ते देखते हैं (राठौर 1986)। दोनों में एक लेने देने का रिश्ता है। विभिन्न दूसरे विद्वान राजनीतिक समाजशास्त्र को समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच एक विवाह के रूप में देखते हैं जो अध्ययन करता है और गंभीर रूप से महत्वपूर्ण और नए क्षेत्रों का उल्लेख करता है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है और जो समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों को छूता है, लेकिन दोनों में से एक द्वारा पर्याप्त रूप से अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

इसके अलावा, राजनीतिक घटनाओं के विश्लेषण के समाजशास्त्रीय उपकरणों के आवेदन ने हमारे राजनीतिक व्यवहार की समझ को जोड़ा है (शर्मा 1978)। दोनों विधाओं के इस क्रॉस-बॉर्डरिंग ने न केवल राजनीतिक समाजशास्त्र को महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र के रूप में विकसित किया है, बल्कि दोनों विषयों ने खुद को परिष्कृत किया है, अवधारणाओं के भंडार में जोड़ा है और सामाजिक विषयों को समझने और विश्लेषण करने के लिए अपने विषयों और मुद्दों और अनुप्रयोगों को चौड़ा किया है। मानव समाज के इस क्षेत्र/प्रदेश/सीमा में अनुसंधान के क्षेत्रों में सामाजिक एजेंसियों के एजेंट के रूप में सार्वजनिक एजेंसियों, समूहों और परिवार के कामकाज का विश्लेषण शामिल है। कुछ अन्य क्षेत्रों जैसे मतदान व्यवहार, राजनीतिक पारिस्थितिकी और राजनीतिक समुदाय राजनीतिक कामकाज के विषयों पर प्रतिबिंबित करते हैं। यह वास्तव में राजनीतिक प्रक्रियाएं हैं जिनके माध्यम से राजनीतिक सदस्यता, निष्ठा, वैचारिक प्रतियोगिता, समूहों और पहचान के मूल्य उन्मुखीकरण की अवधारणा बनती है और बदल जाती है, और एक बौद्धिक विषय के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र की बढ़ती परिपक्वता में जोड़ा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और यूरोपीय अध्ययनों पर एंथोनी गिदेंस के सामाजिक सिद्धांत, जीवन के क्षेत्रों के वेबर का विश्लेषण

और राजनीति के बोरदिएऊ का विश्लेषण जैसे कि सामाजिक गतिविधि जैसे शिक्षा और अर्थशास्त्र आदि के किसी भी अन्य क्षेत्रों में कुछ उदाहरण हैं जो प्रक्षेपवक्र का संकेत देते हैं जैसे विषय की वृद्धि।

2.1 राजनीतिक समाजशास्त्र

राजनीतिक समाजशास्त्र में उप-क्षेत्र के रूप में व्यवहारवाद की कमी को दूर करने के प्रयास के रूप विकसित होता है, जो मानव व्यवहार के मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण पर अत्यधिक महत्व को सही करके 1960 के दशक में राजनीतिक विज्ञान में उभरता है। राजनीतिक समाजशास्त्र अनिवार्य रूप से सामाजिक निर्धारकों, सामाजिक संदर्भ और राजनीति और समाज के बीच एक जैविक संबंध को राजनीति और इसके प्रक्रियाओं के सामाजिक पहलुओं को अनपैक करने के लिए देखता है। यह वास्तव में इस अर्थ में है कि राजनीति के समाज और सामाजिक अंगों की संरचनाएं राजनीतिक समाजशास्त्र के विषय में विश्लेषण की प्राथमिक इकाई बन गईं।

6.3.1 राजनीतिक समाजशास्त्र और राजनीति के समाजशास्त्र के बीच अंतर

राजनीतिक समाजशास्त्र की तरह, राजनीति का समाजशास्त्र समाजशास्त्र का एक उपक्षेत्र है। राजनीति का समाजशास्त्र राजनीतिक प्रक्रियाओं और संस्थागत तंत्र के समाजशास्त्रीय मूल्यांकन पर भी प्रकाश डालता है। इसके विपरीत, राजनीतिक समाजशास्त्र, राजनीतिक निर्णयों को समझने के लिए राजनीतिक घटनाओं और प्रक्रिया को समझाने और समझने पर ध्यान केंद्रित करता है। जैसा कि पहले भी चर्चा की जा चुकी है, राजनीतिक समाजशास्त्र वास्तव में राजनीति और समाज के बीच, सामाजिक संरचना और राजनीतिक संरचना के बीच तथा राजनीतिक व्यवहार और सामाजिक व्यवहार के बीच संबंधों को भी रेखांकित करता है। राजनीतिक समाजशास्त्र यह समझाते हुए कि लोग किस प्रकार से कार्य करते हैं। अनिवार्य रूप से एक घटना के सामाजिक कारणों और प्रासंगिक पहलुओं के साथ काम करता है, राजनीति के समाजशास्त्र के विपरीत राजनीतिक समाजशास्त्र एक क्रॉस-डिसिप्लिनरी महत्वपूर्ण खोज है जिसने विचाराधीन किसी भी मुद्दे को एक प्रासंगिक उपचार दिया।

इसके अलावा, यदि हम पार्टी प्रणाली का एक उदाहरण लेते हैं, तो राजनीतिक समाजशास्त्र न केवल एक राजनीतिक पार्टी के कार्यों की जांच करता है, बल्कि विचार के तहत महत्वपूर्ण मुद्दों को अनपैक इसके सामाजिक अनुकूलन स्थान को भी रेखांकित करता है। इसी तरह राजनीति का समाजशास्त्र, भारतीय राजनीति को जाति से ग्रस्त समाज के संदर्भ में देखता है, जबकि राजनीतिक समाजशास्त्र इस बात पर गौर करता है कि राजनीति ने भारतीय जाति व्यवस्था को किस तरह प्रभावित किया है, इसने देश में जाति या जाति व्यवस्था के राजनीतिकरण को प्रोत्साहित किया है। संक्षेप में, राजनीति का समाजशास्त्र मुद्दों का सतही उपचार प्रदान करता है जबकि राजनीतिक समाजशास्त्र एक परिधिगत विश्लेषण है जो अनिवार्य रूप से सामाजिक संदर्भ में इस मुद्दे की परीक्षा को अंतर्निहित करता है।

6.3.2 राजनीतिक समाजशास्त्र में प्रयुक्त अवधारणाएं

6.3.2.1 राजनीतिक संस्कृति

यह राजनीतिक समाजशास्त्र में सबसे अधिक उपयोग और अक्सर उल्लिखित अवधारणाओं में से एक है। यह कहा जाता है कि शब्दों की उत्पत्ति और विकास 1950 के दशक तक

तक जाती है जब शब्द लोकप्रिय रूप से उपयोग किए जाते थे और सामाजिक मुद्दों और प्रक्रियाओं को परिभाषित करने के लिए विषयात्मक वैचारिक उपकरणों का हिस्सा बन जाते थे विशेष रूप से, प्रत्येक राष्ट्र के कुछ राजनीतिक मानदंड, मूल्य और विश्वास होते हैं, जो निदेशित करते हैं कि लोग किस प्रकार सोचते हैं और उन्हें राजनीति के बारे में किस प्रकार कार्य करना चाहिए। ये सभी एक विशेष राष्ट्र की राजनीतिक संस्कृति का निर्माण करते हैं। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग राजनीतिक संस्कृति भी होती है। परिभाषा के संदर्भ में, राजनीतिक संस्कृति मानदंडों, विश्वास प्रणालियों और मूल्यों के एक समूह को संदर्भित करती है, जो अनिवार्य रूप से राजनीतिक प्रणाली के प्रति उन्मुख हैं। ऐसे सांस्कृतिक तत्व समाज द्वारा साझा किए जाते हैं और संबंधित समाज या राष्ट्र के संबंधित राजनीतिक व्यवस्था के लिए अपेक्षाकृत विशिष्ट होते हैं। राजनीतिक संस्कृति को एक विशेष राजनीतिक मनोविज्ञान (विश्वास/अनुभूति), राजनीतिक विचार (विचारधारा), और राजनीतिक संस्थानों (एक निश्चित शासन प्रणाली के लिए प्राथमिकता) के एक व्यक्तिपरक अभिविन्यास के रूप में भी परिभाषित किया गया है। इस अर्थ में, राजनीतिक संस्कृति यह सोचने का एक विशिष्ट और प्रतिरूपित तरीका है कि लोगों के राजनीतिक और आर्थिक जीवन को कैसे संचालित किया जाना चाहिए। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि समाज कैसा है, अपने लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है और इससे भी महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्कृति यह है कि लोग कैसे सोचते हैं, उनकी क्या मान्यताएं और मूल्य हैं जो राजनीतिक परंपराओं को निर्धारित करते हैं और उनके राजनीतिक लक्ष्यों को निर्देशित करते हैं। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र भारत की राजनीतिक संस्कृति के तत्व हैं। यहां, हमें विचारधारा और संस्कृति के बीच अंतर करना चाहिए। यहां संस्कृति सरकार के बारे में आम धारणाओं, मूल्यों और परंपराओं को संदर्भित करती है जबकि विचारधारा विचारों या नीतियों का एक समूह है जिसे सरकार को आगे बढ़ाने के लिए चाहिए। उदारवाद, नव-उदारवाद, पूंजीवाद या साम्यवाद विचारधाराओं के समूह हैं जो कुछ राज्यों को वांछनीय के रूप में देखते हैं और तदनुसार अपनी राजनीतिक व्यवस्था को व्यवस्थित करते हैं। उदाहरण के लिए, आजादी के बाद भारत ने लोकतंत्र को अपनी वांछित प्रणाली के रूप में राज्य व्यवस्था और मिश्रित अर्थव्यवस्था के रूप में अपनाया और देश में धीरे-धीरे इसे राजनीतिक संस्कृति के रूप में अपनाया गया। हालांकि, यह 1990 के दशक के बाद था कि राज्य की विचारधारा के रूप में नव-उदारवाद भारत में पहले की राजनीतिक अभिविन्यासों पर तरजीह व वरीयता लेता है। इस अर्थ में, राजनीतिक संस्कृति गतिशील है क्योंकि यह राज्य की समय और सुविधा और उसके नीतिगत उद्देश्यों की आवश्यकता के अनुसार बदलती रहती है।

1.2 राजनीतिक संस्कृति

पॉलिटिकल कल्चर शब्द का इस्तेमाल जोहान गॉटफ्रीड हेर्डर, एलेक्सिस डी टॉकविल और मॉन्टेसक्यू के अग्रणी कार्यों से शुरू होता है। हाल में और आधुनिक शब्दों का उपयोग, एलमंड के सेमिनल लेख के साथ राजनीति विज्ञान में शुरू होता है, जिसका शीर्षक था "तुलनात्मक राजनीतिक प्रणाली' जो 1956 में प्रकाशित हुई। एलमंड के शब्दों में राजनीतिक संस्कृति किसी भी राजनीतिक कार्रवाई के लिए अभिविन्यास की प्रणाली को संदर्भित करती है (फॉर्मिन्सन 2001) , पेज नंबर 6)।

6.3.2.2 राजनीतिक समाजीकरण

राजनीतिक समाजीकरण शब्द का इस्तेमाल अक्सर राजनीतिक समाजशास्त्र में किया जाता है। सामाजिक रूप से, समाजीकरण एक आजीवन सीखने की प्रक्रिया है। राजनीतिक समाजीकरण शब्द राजनीतिक भूमिका या व्यवहार के सीखने से संबंधित है। लोगों को शिक्षित किया जाता है और इस प्रकार बड़ी राजनीतिक संस्कृति का अछम हिस्सा बनाया

जाता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहता है। राजनीतिक समाजीकरण इस प्रकार मूल रूप से एक सामाजिक प्रक्रिया है कि कैसे लोग अपने राजनीतिक दृष्टिकोण को बनाते हैं, अपनी राजनीतिक भूमिका सीखते हैं और इस प्रकार अपनी राजनीतिक संस्कृति बनाते हैं। सरल शब्दों में, राजनीतिक समाजीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके तहत लोग या समूह कुछ अपेक्षित राजनीतिक भूमिका को पूरा करने के लिए राजनीतिक व्यवहार सीखते हैं। अधिकांश बच्चे अपने राजनीतिक मूल्यों और परंपराओं को कम उम्र में ही सीख लेते हैं। हालांकि, समय-समय पर दृष्टिकोण और मानदंड विकसित होते रहते हैं और बदलते रहते हैं, क्योंकि लोग विभिन्न एजेंसियों के माध्यम से व्यापक समाज के संपर्क में आते हैं जो सामाजिक एजेंटों के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, परिवार, पड़ोस, स्कूल और सहकर्मी समूह बच्चों को कम उम्र के नजरिए से प्रभावित करते हैं और कम उम्र में अपने विचारों को आकार देते हैं, जबकि बड़े पैमाने पर मीडिया, राजनीतिक दल, राज्य, नागरिक समाज, रुचि समूह जैसी एजेंसियां बाद के युग में लोगों के रवैये को आकार देती हैं। ऐसी एजेंसियां लोगों के रवैये को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उदाहरण के लिए, समकालीन वैश्वीकृत और अतः संबंधित विश्व मास मीडिया में लोगों की सोच और विचारों को आकार देने के लिए काफी प्रभाव है। सूचना प्रौद्योगिकी संचालित मीडिया को एक अत्यधिक सशक्त इकाई माना जाता है जो बहुत कम समय में बहुत सी जानकारी फैलाता है और साझा करता है और लोगों की राय और राजनीतिक दृष्टिकोण को बहुत प्रभावित करता है।

राजनीतिक समाजीकरण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष और एकीकरण या विभाजनकारी हो सकता है। उदाहरण के लिए, समाजीकरण व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से या ऊपर बताए गए किसी एजेंट या एजेंसी के माध्यम से हो सकता है। इसी तरह, समाजीकरण कुछ समूहों के खिलाफ एकीकरण या 'दूसरों' की भावना पैदा करता है। इस प्रकार यह विभाजनकारी भी हो सकता है। समाजीकरण की प्रक्रियाएं वैचारिक रूप से निर्देशित हो भी सकती हैं और नहीं भी। उदाहरण के लिए, कुछ राजनीतिक दल अपने कैडरों को प्रशिक्षित करते हैं या आबादी को अपने एजेंडे की तर्ज पर लक्षित करते हैं, जबकि नागरिक/मानवाधिकार समूह, किसी विशेष राजनीतिक विचारधारा या पार्टी की राजनीति के साथ नहीं, बस लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करने का प्रयास करते हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक समाजीकरण राजनीतिक भूमिका को आकार देने में मदद करता है। राजनीतिक दल, हित समूह और ऐसे अन्य संगठन अपने कैडर या सदस्यों को अपने एजेंडा की लाइन पर प्रशिक्षित करते हैं। एक अवधारणा के रूप में, राजनीतिक भूमिका राजनीतिक व्यवहार से संबंधित है। सामाजिक रूप से बोलना, एक भूमिका एक सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार है। राजनीतिक भूमिका शब्द एक प्रक्रिया को संदर्भित करता है जब किसी व्यक्ति को राजनीतिक क्षेत्र के भीतर प्रदर्शन करने के लिए स्थिति और जिम्मेदारियों के सेट के साथ जोड़ा जाता है। समाज को यह उम्मीद है कि सदस्य किसी दिए गए राजनीतिक व्यवस्था के भीतर ही प्रदर्शन करेंगे। दी गई भूमिका का यह प्रदर्शन राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रियाओं के साथ-साथ चलता है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति गुजरता है। यह आगे राजनीतिक संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद करता है।

6.3.2.3 राजनीतिक पूंजी

राजनीतिक पूंजी, संसाधन का प्रकार है जो एजेंटों को राजनीति के क्षेत्र में दूसरों के निर्णय और कार्रवाई को प्रभावित करने के लिए संदित करता है, संघर्ष और अभ्यास करता है (कौप्पी 2003)। राजनीतिक पूंजी वास्तव में राजनीति के क्षेत्र में एक प्रतीकात्मक पूंजी है।

सामान्य प्रतिमान में, राजनीतिक पूंजी एक प्रकार की सद्भावना, विश्वास और प्रतिष्ठा है जो व्यक्ति या राजनेता जनता के साथ राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए कमाते हैं। इस तरह की सद्भावना और राजनेता या व्यक्ति जिस पर विश्वास करते हैं वह वास्तव में सार्वजनिक पक्ष हासिल करने के लिए उनके साथ संपत्ति है।

राजनीतिक पूंजी को समझने और उसका आकलन करने के लिए, किसी भी इकाई जैसे कि राजनीतिक दल, एक क्षेत्रीय राजनीतिक गठन जैसे कि एक रुचि समूह, एक जाति संघ, राष्ट्र-राज्य के एक संघ का विश्लेषण किया जा सकता है ताकि सामाजिक संबंध में निहित सत्ता की गतिशीलता, प्रभुत्व, आधिपत्य और नियंत्रण तंत्र को समझा जा सके। अमीर राजनीतिक पूंजी वाले लोग अक्सर अधिक शक्ति और प्रभुत्व को नियंत्रित कर सकते हैं। वे अधिक समय तक उसी पर पकड़ बना सकते हैं। विशेष रूप से, राजनीतिक पूंजी चुनाव जीतने के दौरान उत्पाद और प्रक्रिया दोनों के रूप में कार्य कर सकती है, एक निर्वाचित कार्यालय को बनाए रखने और लोगों को प्रभावित कर सकती है या जुटा सकती है।

बोध प्रश्न

1) समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के एक चौराहे के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र के उद्भव पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२) राजनीतिक समाजीकरण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) राजनीतिक समाजीकरण की एजेंसियां क्या हैं?

ए) मास मीडिया

इ) राजनीतिक दल

ब) रुचि समूह

क) उपरोक्त सभी

6.4 सारांश

इस इकाई में, हमने राजनीति विज्ञान के अर्थ और समाजशास्त्र के साथ इसके संबंध के बारे में बताया है। हमने वर्णन किया है कि कैसे दोनों विषयों को आपस में जोड़ा गया है और कैसे दोनों विषयों ने समय की अवधि में अपनी शर्तों और अवधारणाओं को उधार, परिष्कृत और समृद्ध किया है। हम समझ गए कि समाज और उसके मुद्दों को समझने के लिए समाजशास्त्र किस तरह अंतःविषय ढांचे को विकसित करने में राजनीति विज्ञान के साथ मिला है।

जैसा कि हमने राजनीतिक समाजशास्त्र नामक उप-क्षेत्र पर भी चर्चा की है जो मुख्य रूप से चौराहे की एक शाखा है, और समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच वैचारिक आदान प्रदान है। पहचान, सांप्रदायिकता, नागरिक समाज, मतदान व्यवहार आदि जैसे मुद्दे कुछ महत्वपूर्ण चिंताएँ हैं जो राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र दोनों के करीब हैं। ये मुद्दे राजनीतिक समाजशास्त्र में शामिल हैं, समाजशास्त्र के उप-क्षेत्र के रूप में, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच मौजूदा चौराहे पर प्रतिबिंबित करते हैं।

6.5 संदर्भ

फॉर्मिसानो, रोनाल्ड पी (2001)। राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा, द जर्नल ऑफ इंटेर्डिस्सीप्लिनरी , खंड - 31, नंबर 3, पृ. - 393-426।

गिडेंस, एंथोनी (1995)। पॉलिटिक्स , सोशियोलॉजी एंड सोश्ल थ्योरी : एन्काउंटर्स विथ क्लासिकल एंड कॉन्टेम्पररी सोशल थॉट, स्टैनफोर्ड, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

जैन, सी.एम. और दोशी, एस.एल. (1974)। बेयरिंग ऑफ सोशियोलॉजी। खंड 35, नंबर 1, पृ. 50-59।

कौप्पी, निलो (2003)। बॉर्डियू की राजनीतिक समाजशास्त्र और यूरोपीय एकता, थ्योरी एंड सोसाइटी , खंड 32, नंबर 5/6, प्रतीकात्मक शक्ति के समाजशास्त्र पर विशेष अंकः पियरे बॉर्डियू की स्मृति में एक विशेष अंक, पृ. 775-789।

लिपसेट, एस एम (1964)। समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञानः एक ग्रंथ सूची, अमेरिकन सोशिओलोजिकल रिव्यू , खंड- 29, नंबर 5, पृ. 730-734

राठौर, एल.एस. (1986)। राजनीतिक समाजशास्त्रः अर्थ, विकास और दायरा , द इंडियन जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल साइंस, खंड 47, नंबर -, पृ. 119-140

शर्मा, एल.एन. (1978)। राजनीतिक समाजशास्त्रः तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन का परिप्रेक्ष्य, द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, खंड 39, नंबर 3, पृ. 390-405।

स्मिथ रोजर्स एम (2004)। पहचान, रुचि, और राजनीति विज्ञान का भविष्य, पर्सपेक्टिब्स ऑन पॉलिटिक्स , खंड 2, 2 (जून, 2004), पृ. 301-312

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY